P.P.K. COLLEGE
ESTD. 1972
BUNDU, RANCHI
सत्यम शिवम सुन्दरम्

प्रत्यूष

PANCH PARGANA KISAN COLLEGE

A Constituent Unit of Ranchi University, Ranchi (Jharkhand)

BUNDU, RANCHI, JHARKHAND

राँची वि विद्या , राँची
च परगना किसा हाविद्यालय, ंडू, राँची, नव भ
PANC COLLEGE, BUNDU ANCHI, NEW
उद्घाटन
माननीय राज्यपाल सह कुलाधिपति झारखण्ड
श्री रमेश बैस
के कर कमलों द्वारा मंगलवार दिनांक 16-11-2021 को
माननीय कुलपति प्रो० (डा०) कामिनी कुमार
प्राचार्य प्रो० (डा०) अरूण कुमार
स्थानीय विधायक श्री विकास कुमार मुंडा
की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ।
डा० मुकुन्द चन्द्र मेहता
कुलसचिव
प्रो० (डा०) राजेश कु
समन्वयक, महाविद्यालय विकास परि

Sandesh

GOVERNOR

विकास कुमार मुंडा

सभापति
अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्याक एवं
पिछड़ा वर्ग कल्याण समिति-सह- सदस्य
झारखंड विधानसभा, रांची

निजी आवास
अस्पताल टोली बुण्डु, पो. थाना : बुण्डु
जिला-रांची (झारखण्ड) पिन : 835 204
सरकारी आवास
दीलदयाल नगर, मोरहाबादी, रांची-834008
मो. : 9931103938

संदेश

प्रसन्नता का विषय है की मेरे विधानसभा क्षेत्र के एक मात्र शासकीय पाँच परगना किसान कलेज, बुण्डू के द्वारा वर्ष 2024 में वार्षिक पत्रिका ष्प्रत्यूषष् का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित महाविद्यालय की शैक्षणिक और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का समावेश अन्य बच्चों को भी उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करेगी और महाविद्यालय के प्राध्यापकों, विद्यार्थीयों एवं अन्य सभी कर्मियों के सृजनात्मकता, क्षमता और प्रतिभा को नए पंख लगेंगे।

किसी भी शिक्षण संस्थान की गतिविधियों को सार्वजनिक किए जाने की कड़ी में इस तरह के प्रकाशन काफी प्रभावी माध्यम होते हैं, इस नाते आपके द्वारा किया जा रहा यह प्रयास काफी प्रशंसनीय है।

मैं आपके महाविद्यालय द्वारा किए जा रहे इस प्रयास की हृदय से सराहना करता हूँ और साथ ही विद्यार्थीयों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका की सफल प्रकाशन हेतु आप सबों को शुभकामनाएं।

Vikas Kr. Munda

(विकास कुमार मुंडा)

Dr. Ajit Kumar Sinha
Vice-Chancellor
RANCHI UNIVERSITY, RANCHI - 834 001

Ph. : 0651-2205177(O), 0651-2214077 (Fax)
Mob. : +91 9470303568
Website : www.ranchiuniversity.ac.in
E-mail : sinhaajitkumar58@gmail.com
vc@ranchiuniversity.ac.in
vc.ranchiuniversity@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पाँच परगना किसान महाविद्यालयए बुंडू द्वारा ष्प्रत्यूषष् पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के रूप में ज्ञान की ज्योति को अक्षुण्ण रखने का जो अभिनव प्रयास महाविद्यालय के द्वारा किया जा रहा है वह निश्चय ही प्रेरणादायी है एवं विद्यार्थियों को एक नई दिशा देने वाला है।

पत्रिका में संस्थान के शैक्षणिक व बहुआयामी गतिविधियों खेलकूद, राष्ट्रीय सेवा योजनाए सांस्कृतिक कौशनए वाद-विवाद, सेमिनार व्याख्यानमाला तथा अर्जित उपलब्धियों को चित्रवीथी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया हैए जो अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रवृत्तियों के माध्यम से उनके सृजन क्षमता को विकसित करने का सफल प्रयास होगा।

मुझे आशा है कि आपका महाविद्यालय शैक्षणिक उन्नयन के साथ-साथ अपने सामाजिक दायित्वों का पूर्णतः निर्वहन करेगा तथा बुंडू की शैक्षणिकए सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विरासत एवं स्थानीय कलाओं को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। यह विद्यार्थियों के चिन्तन एवं सृजन क्षमताओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है।

मैं, पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, प्राध्यापकों, सम्पादक मण्डल के सदस्यों, छात्र-छात्राओं एवं कर्मचारियों को इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(डॉ. अजीत कुमार सिन्हा)

प्रो. (डॉ.) सुदेश कुमार साहु
संकायाध्यक्ष, छात्र कल्याण
रांची विश्वविद्यालय, रांची
निदेशक, एम.एम.टी.टी.सी., यू.जी.सी., रांची
निदेशक, आई.क्यू.ए.सी. रांची
विश्वविद्यालय, रांची

चुटिया, रांची
पिन नं. – 834 001
मो. : 99341 40129

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रकृति की गोद में बसा एवं शीतलमय वादियों से घिरे पाँच परगना किसान कलेजए बुण्डू से ष्प्रत्युषष् पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है। इस हेतु समस्त प्रकाशन मण्डल को हार्दिक बधाई। इससे जहाँ एक ओर नवोदित रचनाकारों की सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिलता है वहीं दूसरी ओर संस्था द्वारा सृजित और संकलित ज्ञान और सूचनाओं को कलेज तथा उसकी सीमाओं के बाहर भी विस्तारित करने में सहयोग मिलता है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी और इसमें ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठच सामाग्री का समावेश होगा। पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति के अवसर भी प्राप्त होंगे। यह पत्रिका छात्र -छात्राओं एवं समाज के बौद्धिकए आर्थिकए सांस्कृतिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर जनमानस के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य भी करेगी।

महाविद्यालय पत्रिका केवल वहाँ कि शैक्षणिकए अकादमिकए सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का दर्शन मात्र ही नहीं होती बल्कि वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकमनायें प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित

संकायध्यक्ष, छात्र कल्याण
रांची विश्वविद्यालय, रांची

सुदेश कुमार साहु

डॉ. सुदेश कुमार साहु

राँची विश्वविद्यालय
राँची

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पांच परगना किसान कलेजए बुंडू द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका ष्प्रत्यूषष् का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थान के लिए विभिन्न घटकों यथा विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षकेत्त, कर्मचारियों, भूतपूर्व छात्रों एवं समाज के लोगों को महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के विषय में अवगत कराते हुए उन्हें प्रेरित करना है ताकि समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण हो सके।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान का यह भी दायित्व होता है कि वह अपने विद्यार्थियों को ऐसी संस्कारयुक्त व कौशलपरक शिक्षा प्रदान करे जिससे वे अपने जीवन में रोजगार पाने के साथ-साथ श्रेष्ठ नागरिक बनने की ओर अग्रसर हो सकें। महाविद्यालय में संचालित शैक्षणिक तथा शिक्षण सहगामी क्रियाओं से विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास होता है और इन्हीं गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारियों का समावेश इस पत्रिका ष्प्रत्यूषष् में किया जा रहा है।

मैं महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका ष्प्रत्यूषष् के सफल प्रकाशन के लिए पत्रिका के प्रकाशन मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

29/7/24

(बिनोद नारायण)
कुलसचिव
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्राचार्य की कलम से...

संसार को सुंदर और समरस बनाने का बुनियादी मार्ग अभिव्यक्ति कौशल है। अभिव्यक्ति में अतीत की स्मृतियाँ होती हैं, वर्तमान की चुनौतियाँ और भविष्य के स्वप्न भी। स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा के पंच परगना क्षेत्र में स्थापित पीपीके कॉलेज बुंडू की पत्रिका **'प्रत्यूष'** अभिव्यक्ति की विविध विधाओं, शैलियों और भावनाओं की रंगभूमि है। लिहाजा, पत्रिका के प्रकाशन से इस रंगभूमि को व्यापक दृष्टि मिल सकेगी। इस मंगलकामना के साथ 'प्रत्यूषा' पत्रिका को प्रकाशित और लोकार्पित करते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पंच परगना क्षेत्र झारखण्ड राज्य की राजधानी रांची के पूर्व दिशा में स्थित है, जो अपनी विराट भारतीय एवं झारखण्डी संस्कृति का अभिन्न अंग है। साथ ही यह क्षेत्र स्थानीय परंपराओं, विश्वासों और मूल्यों का प्रकाश पुंज भी है। अतीत का स्मरण वर्तमान का दायित्व बनता है। यही कारण है कि महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कार्मिकों, शिक्षार्थियों *एवम्* अभिभावकों को संयुक्त रूप से इन दायित्वों की राह पर बढ़ना ही होगा। इस हेतु मैं सभी इकाइयों का आह्वान और स्वागत करता हूँ।

आह्लाद का अवसर है कि 1972 में स्थापित यह संस्था अनेक कठिनाइयों के बावजूद उच्च शिक्षा की समृद्धि हेतु निरंतर प्रयासरत है। हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रत्यूष' के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से शिक्षा के साथ-साथ खेल, साहित्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का होना अति आवश्यक है। इन गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष उद्घाटित एवं विकसित होते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थी पाठ्यक्रम की दीर्घता के कारण अपना मौलिक लेखन नहीं कर पाता। वह अपनी प्रतिभा को वहीं दबा हुआ महसूस करता है। अतः हमारा दायित्व है कि हम सुषुप्त प्रतिभाओं को लेखन की दृष्टि से जाग्रत करने का प्रयास करें।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि - "सारी शिक्षा का ध्येय है मनुष्य का विश्वास। वह मनुष्य जो अपना प्रभाव सब पर डालता है, जो अपने संगियों पर जादू सा कर देता है, शक्ति का एक महान केंद्र है और जब वह मनुष्य तैयार हो जाता है तो वह जो चाहे कर सकता है। यह व्यक्तित्व जिस पर अपना प्रभाव डालता है, उसी को कार्यशील बना देता है।" अतः कह सकते हैं कि महाविद्यालय की प्रत्येक इकाई को कार्यशील होकर अपने शब्दों और कर्मों की एकता से स्थानीय समुदाय, समाज और राष्ट्र को नवनिर्मित, नवसृजित करना है। इसी सुविचारणा का स्वप्न संजोए महाविद्यालय परिवार ने इस पत्रिका के प्रकाशन का मानस बनाया है। इसके माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थी अपनी मौलिक लेखन प्रतिभा को निखारने में सक्षम होंगे एवं इस नव लेखन से यह संस्थान अनवरत उच्च शिक्षा में नए कीर्तिमान स्थापित करता हुआ सुशोभित रहेगा।

इन मंगलकामनाओं सहित मैं पूरे संपादक मंडल को अनेक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका विद्यार्थियों ही नहीं, अपितु सभी पाठकों के लिए ज्ञानप्रदायिनी शक्ति सिद्ध होगी।

सम्पादकीय.....

ईश्वर ने जिस अद्भुत सृष्टि की रचना की है, उसमें जन्म लेने वाले प्रत्येक प्राणी में अपने अंतर्मन में निहित भावों को व्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान की है। जीव-जंतु भी अपनी मानसिक भावनाओं को अपने हाव-भाव और वाणी द्वारा व्यक्त करते हैं, जिसे हम मनुष्य समझ नहीं पाते हैं, परंतु उसके भावाभिव्यक्ति को दृष्टिगत कर सकते हैं। सभी प्राणियों में मनुष्य जन्म दुर्लभ है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है, "बड़े भाग मानुष तनु पावा, सुर दुर्लभ सद्ग्रंथन्हि गावा।" मनुष्य में ही वह वैचारिक अभिव्यक्ति की एक ऐसी अद्भुत शक्ति होती है, जिससे वह अपनी मानसिक भावनाएं और अपने विचार दूसरों तक प्रेषित करने की क्षमता रखता है।

मनुष्य अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए सभ्यता एवं संस्कृति के आदिकाल से वाणी का प्रयोग करता रहा है। वाणी की सहायता से ही संसार के समस्त कार्य संपन्न होते हैं। संपूर्ण देवता, गन्धर्व, पशु और मनुष्य वाक् के ही आधार पर जीवित रहते हैं। समस्त ब्रह्मांड वाणी पर ही अवलंबित है। "देवीं वाचमजन्यन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। ऋ. 08.100.11.

मनुष्य अपनी अंतहृदय की भावनाओं को दो माध्यम से व्यक्त कर सकता है-प्रथम, वाणी द्वारा उच्चारण के माध्यम से, तथा दूसरा, लेखन के माध्यम से। लेखन के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर वह स्वयं का ऊर्जस्वित स्वरूप दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम होता है। लेखन की इन्हीं क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की रुचि लेखन की ओर अग्रसर हो, पांच परगनां किसान कॉलेज बुंडू की पत्रिका प्रत्यूष महाविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस पर प्रकाशित हो रही है। महाविद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मक तथा रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है। विद्यार्थी अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं तथा तथा विचारों को सहज और सरल रूप में अभिव्यक्त करते हैं। उनके अंतर्मन में छिपे कवि, लेखक, नाटककार एवं दार्शनिक भाव को अभिव्यक्त करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है।

पत्रिका प्रकाशित करने की प्रेरणा स्रोत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर मुकुल कुमार जी हैं तथा पत्रिका के संपादक मंडल के अथक प्रयास से यह असंभव कार्य संभव हो सका है। मैं हृदय से महाविद्यालय के विद्वत् जनों तथा संपादक मंडल का आभारी हूं तथा उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूं, जिनके लेखन मार्गदर्शन से यह कार्य संपन्न हो सका। आभार के इसी क्रम में मैं सेवानिवृत्त सहायक प्राध्यापकों, पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं एवं अध्यापनरत प्राध्यापकों का आभार व्यक्त करती हूं जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से यह कार्य संपन्न हो सका। साथ ही मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि ऐसा ही सौजन्य एवं सहयोग सदैव बना रहेगा।

- डॉ. विजय लक्ष्मी

अध्यक्ष-संस्कृत-विभाग

संपादक मंडल

Teaching Staff

Non-Teaching Staff

Sculptors of the Nation Post Graduate Program

Pol. Science

Hindi

Panch Pargania

English

Sanskrit

Mundari

Kurmali

Walking

Remember the day
When walking was not possible
The divine mother taught everyday
To walk and run.

Walking to playgrounds
Hot and cold breeze blowing
Shouldering with friends
Each guy, inch by inch growing.

Walking to school and college
Learning the lessons of life
Through discipline, gaining knowledge
And belts on, to face the battle of life.

Walking to professional palaces
Like dutiful and responsible citizen
Working for the welfare of mankind
Fulfilling the desire of life.

Walking in the house, superannuated
Playing with grandchildren
Laughing with octogenarians
Gasping with ease, spirituality.

The final walk is still to be walked
To walk into the world of eternity
Leaving behind the world of chaos
Transmigration after transient life.

Walk not to make the earth arid
Walk not to make the earth
Hiroshima, Nagasaki, Ukraine or Gaza
Walk to make a peaceful human world.

Remember the day
When walking shall not be possible
When there is a chance to walk
Walk with a smile, walk with a smile.

- Hans Kumar
Ex HOD, Department of English

"पुरातात्विक स्रोत के रूप में चित्रकला"

अन्य पुरातात्विक श्रोतों की तरह चित्रकला भी मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, और आर्थिक आयामों को दर्शाती है। आदि मानवों ने सभ्यता के विकास के क्रम में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए चित्रों का सहारा लिया और पत्थरों की दीवारों और छतों पर चित्रित कर चित्रकला को संजोया। तभी से चित्रकला मनुष्य के दैनिक जीवन, सामाजिक रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों इत्यादि को जानने और समझने का स्रोत बनी, जो आज भी विद्यमान है।

भारत में चित्रकला प्राचीन काल की मूर्तिकला के समान है, यद्यपि इसका बहुत कम भाग हमारे पास उपलब्ध है। पुराने समय की चित्रकला मध्य प्रदेश के 'भीमबेटका' की गुफाओं में देखी जाती है। अजंता की गुफाओं में दूसरी शताब्दी ई.पू. की चित्रकला और ऐलोरा की हिंदू गुफा चित्रकला आठवीं शताब्दी की है। नवीं शताब्दी की शुरुआत में लघु चित्रकला का पदार्पण हुआ, जिसमें सबसे अधिक विकसित बंगाल का पाल विद्यमान था। गुजरात स्कूल का विकास 11वीं से 15वीं शताब्दी में हुआ। मुगल स्कूल फारसी और अन्य कलाकारों के प्रभाव में आया जब वे मुगल दरबार में गए। धीरे-धीरे राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला स्कूल का विकास हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में बंगाल और पटना में कंपनी के स्कूल खुले, और मराठा, तंज़ौर, मैसूर, फैज़ाबाद इत्यादि में भी चित्रकला स्कूल थे। 20वीं शताब्दी में पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव चित्रकला पर भी पड़ा और कई कला विद्यालय खोले गए। केरल के राजा रवि वर्मा पहले जाने-माने आधुनिक चित्रकार थे।

अजंता की गुफाओं में अधिकांश भित्ति चित्र वहां रहने और अध्ययन करने वाले साधुओं की कृतियां हैं। इनकी चित्रकला और मूर्तिकला बुद्ध के जीवन और भारत के दृश्य को दर्शाती है। व्यक्ति के वेशभूषा, गहनों और स्त्रियों के केश सजावट की जानकारी प्राप्त होती है।

कुछ चित्रकला में हमें अन्य देशों से संबंधों की जानकारी मिलती है जैसे तुर्क, चीन, पर्शिया और तुर्की। चित्रकला की परंपराओं को पल्लवों, पश्चिमी पालुक्यों, राष्ट्रकूट, चोलों, होयसलो और विजयनगर के राजाओं ने भी कायम रखा। इनमें से अधिकांश चित्रकला उन सल्तनतों द्वारा बनवाए गए मंदिरों को दर्शाती है।

हरेक काल और समय में चित्रकला का अपना महत्व रहा है। मुगल काल में बाबर ने चित्रकला को अत्यधिक सम्मान और अहमियत दी थी। तैमूरों की तरह हुमायूं ने भी कला में रुचि विकसित की और फारसी संगीत तथा चित्रकला को सीखने में गहरी दिलचस्पी दिखाई। उसने दो फारसी चित्रकारों, सिर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुल अहमद, को अपने दरबार में आश्रय प्रदान किया। हुमायूं और उसके पुत्र अकबर ने इन दोनों से शिक्षा ग्रहण की। इन विदेशी कलाकारों ने भारतीयों के साथ मिलकर मुगल चित्रकला की नींव डाली। चित्रकला ने अकबर के शुरूआती कार्यों को प्रभावित किया। 1562 ई. के लगभग हिंदू और फारसी शैलियों ने अपने आप को प्रकट करना शुरू

किया। अकबर को चित्रकला की नई शैलियों के जन्मदाता के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए। यद्यपि अकबरनामा, अब्दुल फजल द्वारा लिखी गई उसकी जीवनी, में कई चित्रकारों के जीवन का वर्णन किया गया है। जहांगीर ने भी अपने समय में चित्रकला को नया रूप प्रदान किया। पशुओं और पक्षियों की श्रेष्ठ कृतियों को उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित किया गया। जहांगीर के बाद चित्रकला का संरक्षण लुप्त हो गया और चित्रकारों को मजबूर होकर राजस्थान और हिमालयी राज्यों के राजाओं के पास नौकरी करनी पड़ी।

औरंगज़ेब ने चित्रकला को इस्लाम के विरुद्ध मानते हुए, अपने विरोधी पुत्रों के कारावास के चित्रों को देखने के लिए कहा। इसके अतिरिक्त, उसने पूर्व की चित्रकला को मिटा दिया और उसकी पुताई करवा दी। उस समय के चित्रकारों को अवध, बंगाल, दक्षिण इत्यादि में शरण लेनी पड़ी।

मुगल सम्राट के पतन से पहले ही भारतीय चित्रकला का पतन हो चुका था। इस प्रकार, कोमलता और चमकदार रंगों के प्रयोग, भीड़-भाड़ के चित्र, पशु-पक्षियों के चित्र, सोने-चांदी के चमकदार रंगों का प्रयोग आदि विशेषताओं से भरी हुई चित्रकला थी।

चित्रकला के क्षेत्र में पहाड़ी चित्रकला की भी अपनी एक अलग विशेषता है। इस चित्रकला का जन्म गूलेर नामक स्थान से माना जाता है। 1780 ई. के आसपास इस शैली ने कांगड़ा में प्रवेश किया और कांगड़ा शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसकी विभिन्न शैलियों में गूलेर, कांगड़ा, बसोहली, चंबा, कुल्लू, गढ़वाल, जम्मू-कश्मीर आदि प्रमुख हैं। इस शैली के चित्रों में प्राकृतिक दृश्य, रामायण और महाभारत के चित्र, स्त्री और नायिकाओं के चित्र, नायिका भेद के चित्र, महलों और पशु-पक्षियों के चित्र, सोने-चांदी के रंगों का प्रयोग, वृक्षों का प्राकृतिक चित्रण, हस्त मुद्राओं द्वारा भाव प्रदर्शन, राधा कृष्ण का त्रिपुर सुंदरी की भित्ति चित्र, लोक शैली के चित्र, व्यक्ति चित्र, चंदन टीका आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार, हम देखते हैं कि चित्रकला के माध्यम से भी पुरातात्विक स्रोतों को जानने और समझने में सहायता मिलती है।

- अशोक कुमार शर्मा

अध्यक्ष, इतिहास विभाग।

Drama – Replicating Life

Life is cinematographic. The reels roll, the light flashes and the pictographic projection is displayed on silver screen. The plot, action, theme, message, character, and marvellous visuals intertwine with the thought of the Director, gradually pixels take the shape. The story is beautifully penned and the characters enact wisely and judiciously according to their allotted roles. A pinch of emotions and the essence of ecstasy add flavour to its taste. Reality amalgamates fiction to garnish the script. Finally, it is served on a platter for the audience.

Cinema and life are synonymous. It is the drama of reel and real life. The fate of man serves as the storyline, vivid shades symbolise the roller coaster of sentiments, and the varied roles he plays act as multiple characters of a movie. Although, his actions have no retakes or pauses. Moreover, there are no rhapsodic events of magic and surprise. Drama in real life is nothing but a reflection of life.

Drama has always provided a rich source to educate the masses through the stories drawn from the real source of life. There lies a great power in drama to influence, exploit and reform society. It has the potential to alter the course of action and the unparalleled strength to mould the perception of the global spectators with gentle strokes of actions and dialogues.

Truly, drama mirrors life. Every act being performed on the dais has real elements of realism mingled with fiction, to attract the audience. It pictures similar situations that we encounter each day – the corruption prevailing, the infatuation of teens, man's passion for wealth, the harsh struggle of the downtrodden, isolated man craving for company, mercy, kindness, benevolence, love, compassion, humanism, and tons of life skills. Humans learn myriad values and ethics from the plays and through the execution of themes displayed by the characters.

The characters are all drawn from the society to impress and satiate the spectators and to justify the dramatis personae. These characters play their roles imitating the real characters. The spectators can connect themselves easily to the characters and situations portrayed on the stage. The characters also become their role models which they follow instinctively. There have been numerous characters in the Indian epics who have left an indelible mark upon the society by exhibiting their traits – Maryada Purushottam

Ram, Guru bhakt Eklavya, Dharm Raj Yudhisthir and many others. These characters have inspired humans since ages.

Indeed, the form of drama has changed and the spectators have a different outlook in the contemporary world, yet, dramas are enriching the audience to a greater extent. And cinema is no less than an advanced form of drama; only the enhancement in light and sound, place and ambience, several retakes, and rest is identical. The theme, language, characters, plots, sub-plots, setting etc. are synonymous with each other.

There is an abundance of teachings and morals in the educative, religious, and philosophical drama which tunes the society and prepare them for ethical and social changes in every era. Mankind must practice these values in day-to-day life and even transfer them to the future generations. These reflections inspire us to be a true humanist. Hence, drama is a transcendental and transformative tool in life.

- Dr. Sumant Kumar Jha
Editor
Assistant Professor, Department of English

तमस: निम्न वर्ग और साम्प्रदायिकता

'तमस' देश-विभाजन के पूर्व की हमारी सामाजिक मानसिकता और भीषण साम्प्रदायिक दंगो को चित्रित करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसकी पृष्ठभूमि उस समय की है जब देश स्वतंत्रता के साथ विभाजन के दो राहों पर खड़ा था। अगर हम उस समय के ऐतिहासिक ग्रंथो और इतिहास की किताबों में साम्प्रदायिकता और विभाजन के दुःख,क्षोभ,निराशा ,उजाड़पन को देखने का प्रयास करेंगे तो हमें निराशा ही हाथ लगेगी। इसका मुख्य कारण इसमें दिया गया आँकड़ा है जो तत्कालीन सामाजिक स्थिति की दुर्दशा को उचित रूप से नहीं दर्शा पाती। परन्तु, साहित्यिक रचनाओं में हम विभाजन और उससे उपजे साम्प्रदायिक दंगों के चित्र को आसानी से देख पाते हैं।

'तमस'में भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिकता के दर्द को रेखांकित किया है। सन् 1947 के मार्च-अप्रैल महीने में पूरा पंजाब सम्प्रदायिक दंगो की आग में झुलस रहा था ।भीष्म सहनी ने 'तमस' में इन्हीं भीषण साम्प्रदायिक दंगों की कहानी को वर्णित किया है,जो उनके गृह जिले रावलपिंडी में घटित हुई थीं।

'तमस' की कहानी दो प्रमुख चरित्रों 'मुराद अली' और 'नत्थू' नामक चमार के वार्तालाप से शुरू होती है। मुराद अली जो म्युनिसिपल कमेटी का एक कर्मचारी है,वह 'नत्थू' से एक अंग्रेज अधिकारी के लिए सूअर को मारने को कहता है।नत्थू सूअर को मार देता है,परन्तु उसे बाद में पता चलता है कि उस मरे हुए सूअर को मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया गया है, जिससे शहर में दंगा भड़क गया है। सूअर के मारने की त्वरित प्रतिक्रिया दूसरे वर्ग के लोगों के द्वारा गाय मारने से होती है। जिससे दंगा शहर से लेकर आस पास के गांवों तक फ़ैल जाता है। इसके बाद शहर के नागरिकों का एक शिष्टमंडल नगर में शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से जिला कलेक्टर रिचर्ड से मिलते हैं। रिचर्ड के अनुसार यह एक 'छोटी सी बात' है। परिणाम शहर में लूटपाट,हत्या और आगजनी का तांडव होने लगता है। सबसे विकराल घटना सैय्यदपुर गाँव में होती है,जहाँ के गुरूद्वारे में सारे सिक्ख एकत्रित होकर मोर्चाबंदी करते हैं वहीं मुसलमानों का मोर्चाबंदी शेख गुलाम रसूल के घर पर होता है। दो दिनों में सिक्खों का मोर्चा शिथिल पड़ने लगता है और इसी बीच एक मर्मस्पर्शी घटना सामने आती है जब 'जसबीर' नामक सिक्ख महिला के नेतृत्व में तमाम महिलाएं अपने बच्चों समेत कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर लेती हैं। यह घटना हमें उस ऐतिहासिक सच्चाई से परिचित करती है जब पुरुषों को हारता देख औरतें सती या जौहर कर अपना शरीर त्याग देती हैं। 'पुरुषों के वर्चस्व की लड़ाई में इन महिलाओं का भला क्या दोष रहा होगा? लिहाजा दंगे के पाँच दिन बीतने के बाद दंगा शिथिल पड़ जाता है पर तब तक पूरे शहर का दृश्य बदल जाता है। संपत्तियां लूट ली जाती हैं या जलाकर खाक कर दी जाती हैं। सैकड़ों लोग मारे जाते हैं या लापता हो जाते हैं और सदियों में विकसित मानवीय सभ्यता का एक क्षण में नाश हो जाता है। इसके बाद दंगों के समाप्त होने की औपचारिकता पूरी कर ली जाती है। शांति स्थापित करने के लिए विभिन्न पार्टियों और सम्प्रदायों के अग्रणी नेताओं द्वारा साथ मिलकर कमेटी का गठन किया जाता है और शहर में शान्ति की अपील की जाती है।

वस्तुत: दिलचस्प बात यह है कि इनमें वे नेता भी शामिल हैं जो दंगे भड़काने का प्रमुख कारण थे। आम जनता तो इन दंगो का एक निमित्त मात्र होती है। वहीं मुराद अली जिसने सूअर को मारकर मस्जिद के सामने फेंका था अब वह 'हिन्दू-मुसलिम एकता' के नारे लगा रहा था। साम्प्रदायिकता के अतिरिक्त यह उपन्यास अंग्रेजों के कुटिल नीतियों,स्वार्थपरकता और कांग्रेस के नेताओं की आपसी खींचतान को उजागर करता है। अगर हम भारतीय जनमानस की वर्तमान स्थिति को देखें तो पाते हैं कि भारत के जनमानस पर साम्प्रदायिकता अब भी हावी है। लिहाजा नत्थूराम इस उपन्यास का प्रमुख पात्र और कथानायक है। वह गरीब, मजदूर,निर्धन और असहाय है तथा पांच रूपये उसके जीवन की बड़ी रकम है जो मुरादअली द्वारा उसे देकर सांप्रदायिक दंगों का साधन बनाया जाता है। वह निर्दोष, अपराध बोध से व्याकुल, भीषण अंतर्द्वंद्व से ग्रस्त और टोने-टोटके में विश्वास रखने वाला एक अनपढ़ व्यक्ति है तथा राजनीति और सांप्रदायिक हथकंडो से कोसों दूर मृत जानवरों की खाल निकालकर अपनी जीविका चलाने वाला एक विवश पात्र है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो कथाकार भीष्म साहनी ने अपने इस उपन्यास में निम्नवर्गीय समाज की सामाजिक स्थिति और विभिन्न दलों की निम्न वर्ग के व्यक्तियों पर उनकी राजनीतिक पकड़ के यथार्थ को रेखांकित किया है। यह वही अंधेरा है जो आज भी आए दिन निम्न वर्ग के व्यक्तियों और उनके सामाजिक जीवन में देखने को मिलता है। इसमें नत्थूराम का क्या दोष था? वह मस्तमौला जीवन जीने वाला व्यक्ति था फिर भी रावलपिंडी और पंजाब में हुए साम्प्रदायिक उन्माद का साधन बनाया जाता है।

अंततः इस आलेख के आधार पर मैं यही कहना चाहता हूं कि 'तमस' में नत्थूराम के माध्यम से इस सत्य का भी उद्घाटन किया गया है कि सांप्रदायिक घृणा व हिंसा का शिकार अक्सर समाज का निम्न व गरीब तबका होता है। साथ ही इस वर्ग का ही उपयोग सांप्रदायिकता फैलाने हेतु किया जाता है। अतः इस उपन्यास में वर्णित घटनाएं और पात्र आज भी प्रासंगिक हैं।

- डॉ. छटु राम

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

Geotourism and its Potential in Jharkhand

Geotourism, a relatively new concept, is the exploration of a region's geological features and landscapes. It is different from traditional tourism since it focuses on education, the protection of natural resources and supporting local communities through sustainable tourism practices.

This new form of tourism encourages travellers to explore the Earth's geological features, cultivating a deeper understanding of the planet's history and promoting conservation efforts. Observing rock structures and their formations can also help tourists learn about the process of rock formations and determine their age. The basis of this form of tourism is the identification of geosites. Geosites include areas like caves, springs, waterfalls, mountains, mining and mineral sites, rock forms etc.

The scope of geotourism on a global scale is vast. Many countries, recognizing the attractiveness of their unique geological features, have developed geotourism initiatives to attract visitors. For instance - Grand Canyon in the U.S.A, West Coast Fossil Park in South Africa, Undara Geotour in Australia, UNESCO Global Geopark in the United Kingdom, Luray Cavern- in Virginia, U.S.A. National parks, UNESCO World Heritage Sites, and geological landmarks are important points for geotourism activities, offering opportunities for hiking, rock climbing, fossil hunting, and educational programmes. The above-mentioned countries have developed these sites for tourists to learn about the geological features and have also developed other related infrastructure to make them attractive for recreational activities while also ensuring its sustainability.

In India, with its rich geological heritage and diverse landscapes, geotourism holds significant potential. From the majestic Western Ghats to the ancient Aravalli Range, India's geological formations tell a story about these landscapes that dates millions of years. The country's vast coastline, expansive plains, and towering mountains offer a wide array of geological attractions waiting to be explored. Most of the geological sites or monuments in India are identified in the southern and western regions of the country.

This article explores the scope and potential of geotourism particularly in Jharkhand, a state in eastern India, that has a large wealth of geological diversity and has the potential to become an important destination for geotourism in India. The state is known for its mineral wealth, with abundant reserves of coal, iron ore, uranium, and other minerals. However, beyond its industrial significance, Jharkhand is home to a variety of geological wonders that remain largely underutilised in terms of their potential for tourism. The following paragraphs provide examples of geosites in Jharkhand and the nature of their appeal to tourists.

Hills

Rajmahal hills, located in Jharkhand's Santhal Pargana region, hold a geological marvel. These hills consist of extensive lava flows of basic composition which is spread over an area of 2600 sq.km. They serve as a repository for plant fossils dating back 68 to 145 million years, known as the Rajmahal Flora, comprising over 45 genera and 116 species of Cycads, Ferns, and Conifers. Despite their geological significance, these treasures are in danger from unauthorized encroachment and uncontrolled stone mining, due to neglect from the government. Villagers, aware of the fossils' value, struggle to protect them without official support, yet geoscientists believe that proper excavation could uncover fossils of reptiles and other prehistoric creatures from the Jurassic and Triassic periods. Utilizing the potential of this site for geotourism could not only lead to local development and improve infrastructure but also preserve this invaluable geological heritage while strengthening the region's economy through increased tourism.

The Dalma Range, stretching from Jharkhand to West Bengal, is situated at the height of 3000 ft. above sea level. Dalma hills are surrounded by dense forests and the Subarnarekha River, offering an aerial view of nearby areas. The hills, a spectacular geological site are ideal for adventure sports like trekking, rock climbing and paragliding etc.

Netarhat commonly known as "Queen of Chotanagpur" is an undulating plateau and hill station in Latehar district. It consists of crystalline rocks and has a summit capped

with sandstone trap or laterite. This elevated plateau offers panoramic views of the surrounding forests and valleys and provides insight into the geological processes that formed the region's topography over millions of years. Some other hills worth seeing are Ranchi hill, Tagore hill, Bariatu hill, Parasnath hill (Giridih district) Canary hill (Hazaribagh).

The tourist will get interested in learning about the geological creation of these mountains if they are told how these mountains originated at that period and how various features, including joints, folding, faulting, and intrusions, came to be discovered on those mountains.

Hot Springs

Suraj Kund hot spring, located in the Barkhata block is the hottest hot water spring in India. This consists of five pools of hot water called kunds, namely Surya Kund, Lakshman Kund, Brahma Kund, Ram Kund and Sita Kund. Surya Kund reaches temperature of 87 degrees Celsius.

Water Falls

It provides a breath-taking view and a chance for geotourism in terms of understanding the characteristics of water flow, peak volume, and their effects on various rock types, among other things. The city of waterfalls, Ranchi, is home to numerous magnificent waterfalls, including the highest waterfall in Jharkhand, Lodh Falls, which is located in the Palamu Tiger Reserve of the Latehar district. Other notable waterfalls include Hundru Falls, Johna Falls, Dasham Falls, Hirni Falls in the Ranchi district, and Panchghagh Falls in Murhu of Khunti district. There are other waterfalls than these well-known ones that could serve as the foundation for a waterfall tourism route.

Mining Sites

Jharkhand is mostly renowned for its mining sites, with more than 37% of mineral reserves of India located in the state. In many nations, geotourism at mining sites is becoming increasingly popular as a way to preserve the geoheritage of mining and generate additional income. Former open-pit and underground iron ore and coal mines could be converted into geotourism destinations for both sightseeing and educational activities. For this reason, the Jharkhand government has scheduled the first development of two iron ore mines located in the East Singhbhum district: Kiriburu and Meghahatuburu. Later developments will also be made in Pakur, Bokaro, Lohardaga (bauxite), and Ramgarh (coal).

Geotourism in Jharkhand confronts several obstacles, such as infrastructure development, conservation initiatives, and community engagement, despite its potential and the instances mentioned above. Stakeholders such as government agencies and community leaders need to collaborate in order to advance sustainable tourism practices that safeguard the environment and help local communities in order to fully realize the potential benefits of geotourism. To sum up, geotourism presents a unique opportunity to highlight Jharkhand's geological legacy while encouraging environmentally friendly growth and cultural preservation. The state may become a top travel destination for travelers wishing to see the natural wonders of the world, get knowledge of its formation and history, and connect with the rich cultural legacy of the region with the right preparation and financial support.

- Dr. Binita Kumari
Department of Geology

Polycystic Ovarian Syndrome : A Multi-System Disorder

Polycystic ovarian syndrome (PCOS) is a complicated heterogenous endocrine and metabolic condition that affects 4–20% of females who are of reproductive age and causes infertility in 40% of those individuals. The hallmark features of this disorder are ovarian cysts, anovulation, and endocrine variation which negatively affect a woman's quality of life [1]. The prevalence of PCOS increased by 30.4% since 1990 to 66.0 million cases worldwide in 2019 [2]. In India, the prevalence ranged from 6% to 46.8 percent [3].

Symptoms of PCOS

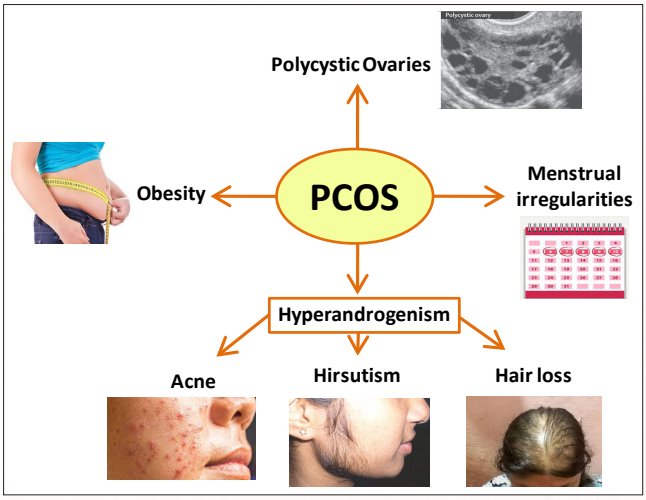

Hyperandrogenism, irregular menstruation, ovarian cysts of variable sizes, and abdominal obesity are clinical symptoms of PCOS (Figure 1), though there are subtle variations from person to person.

Figure 1. *Symptoms of Polycystic ovary syndrome.*

Risk Factors and associated complications of PCOS

Various research has demonstrated that a combination of genetic, environmental, and hormonal factors contributes to the development of PCOS.

Since PCOS is a multisystem disorder, it is associated with several long-term health hazards, including type-2 diabetes mellitus, dyslipidaemia, non-alcoholic fatty liver disease, endometrial cancer, obstructive sleep apnoea, cardiovascular disease, as well as anxiety and depression disorders [4] in addition to reproductive and hyperandrogenic characteristics (Figure 3).

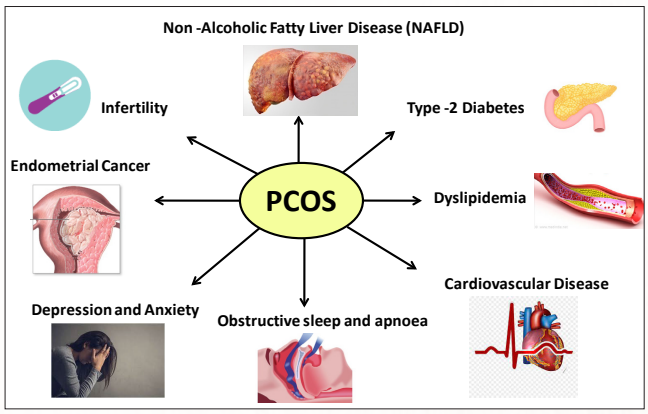

Figure 3. *Long-term associated comorbidities of PCOS.*

Treatment methods for PCOS

A few intervening drugs are taken to alleviate the clinical symptoms associated with PCOS, however, the cause of PCOS is uncertain so, there is currently no pharmaceutical therapy that may completely cure the syndrome.

- **Lifestyle modification:** A controlled diet and regular exercise to keep body mass index (BMI) below 25 can help prevent menstruation abnormalities, infertility, insulin resistance, and hyperandrogenemia.
- **Pharmacological measures:** When lifestyle modifications do not produce positive results, pharmacological measures may be used such as:
- **Oral contraceptives:** Progesterone-only tablets or combination pills that include both estrogen and progesterone. They are first-line treatments for menstrual irregularities and reduce hirsutism and acne.
- **Antiandrogens:** This group contains spironolactone, flutamide, finasteride, and cyproterone acetate, which reduces androgen output.
- **Ovulation-inducing agents:**

  Clomiphene citrate : First-line treatment for anovulatory sterile women [5].

  Tamoxifen : Tamoxifen works in the same way as clomiphene, which is used to treat anovulation in people who do not respond or fail to respond to clomiphene citrate.

Gonadotropins : Human menopausal gonadotropin (HMG) and recombinant FSH are the second-line treatments for anovulatory infertile PCOS women [6].

- **Insulin sensitizers:**

  Metformin: a safe and effective biguanide drug that is generally used to manage insulin resistance and menstrual abnormalities in PCOS [7].

  Thiazolidinediones: A second-line treatment option for PCOS women who are insulin resistant.

- **Surgical Interventions and IVF**

  In general, surgical procedures such as Laparoscopic ovarian drilling (LOD) and in-vitro fertilization (IVF) are used to treat infertility in PCOS individuals who have not had a satisfactory outcome with pharmacological treatments

  Without any associated risks, in-vitro fertilization (IVF) is advised as another therapy for addressing infertility in PCOS.

- **Alternative approach**

  Many medicines are currently in use to treat PCOS and induce ovulation. However, following repeated use, these therapies have been linked to serious side effects such as arthritis, joint or muscular pain [8], and psychological disorders [9]. Therefore, researchers are currently looking at alternative therapies to cope with such issues. As a result, these days emphasize herbal treatments with few or no adverse effects.

Conclusion

PCOS is a complicated prevalent multisystem disorder in women of reproductive age. The burden of PCOS and its effects on global health care is increasing. Along with polycystic ovaries, anovulation, and infertility, women with PCOS are more susceptible to developing metabolic syndrome, which increases their risk of developing associated complications such as type-2 diabetes, hypertension, and cardiovascular disease. So far, the research reveals a strong link between genetic, epigenetic, neuroendocrine, and environmental factors in the pathogenesis of PCOS. Lifestyle modifications and pharmacological and surgical procedures may aid in the treatment of PCOS clinical symptoms, but it is cost-effective and has side effects. Knowing the mechanisms of action of herbal or medicinal plants should be considered as alternatives to pharmaceuticals.

- Dr. Tarkeshwar Kumar
Assistant Professor & Head, Department of Zoology

सांख्य प्रवर्तक कपिल

देवहूति नन्दन सांख्य-प्रवर्तक कपिल भारतीय ऋषि परंपरा के मूर्धन्य ऋषियों में परिगणित है। भारत भूमि आध्यात्मिक समृद्धि के लिये विश्वप्रसिद्ध है। आज भी विश्व के कोने कोने से जिज्ञासु आत्मिक शान्ति एवं सत्यान्वेषण हेतु भारत भूमि का ही आश्रय ग्रहण करते हैं। इस आध्यात्मिक समृद्धि रूपी यज्ञ में कपिल एवं अन्य ऋषियों ने अपने दार्शनिक ज्ञान रूपी समिधा से इसे और भी अधिक समृद्धिशाली बनाया है। अपौरुषेय वेदों से निःसृत ज्ञानधारा ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद् तक जाकर ही नहीं रुकी वरन् इससे षड्दर्शन परंपरा का सूत्रपात हुआ जो कि आगे चलकर अनेक शाखाओं एवं प्रशाखाओं में पुष्पित एवं पल्लवित हुआ। इन षड्दर्शन में सांख्य दर्शन सर्वाधिक प्राचीन दर्शन है, जिसके प्रवर्तक परमर्षि कपिल हैं।

महर्षि कपिल के विषय में समाज में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, तथापि अनेक ऐसे तथ्य भी उपलब्ध हैं, जो उन्हें एक ऐतिहासिक पुरुष सिद्ध करते हैं। पर्याप्त शोध के उपरान्त विद्वानों ने पाया कि कपिल मुनि, ऋषि कर्दम एवं देवहूति के पुत्र थे तथा इन्हें विष्णु का अवतार माना गया है। (तदिदं सांख्यशास्त्रं कपिलमूर्तिर्भगवान् विष्णुरखिललोकहिताय प्रकाशितवान्)। वहीं कुछ स्थलों पर उन्हें अग्नि का अवतार भी कहा गया है (अग्निः स कपिलो नाम सांख्यशास्त्र प्रवर्तकः)। इसका तात्पर्य यह है कि कपिल का व्यक्तित्व अपनी मेधा के ऐसे चरमोत्कर्ष को प्राप्त था कि वैदिक काल के सर्वाधिक प्रभावशाली एवं एवं विशिष्ट देवताओं के रूप में उन्हें स्वीकार किया गया था। इस मृत्युलोक में कोई भी मानव सर्वज्ञ नहीं हो सकता। मानवमात्र के ज्ञान में कहीं न कहीं कुछ न्यूनता रहती ही है किन्तु कपिल मुनि सर्वज्ञ थे ऐसे श्रुति प्रमाण मिलते हैं- ऋषि प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे ज्ञानैर्विभर्त्ति जायमानं च पश्येत् । इन्हीं कारणों से उन्हे विष्णु का अवतार कहा गया है। वहीं ऐसे प्रसंग भी उपलब्ध हैं कि परमर्षि कपिल ने अपने शिष्य आसुरि को शरीर विहीन रूप में अपने सिद्ध शरीर द्वारा (निर्माण चित्तमधिष्ठाय) सांख्य शास्त्र का उपदेश दिया था।

प्राचीन इतिहास एवं पुराणों के साक्ष्यों एवं अध्ययन से भारतीय विद्वानों ने यह निश्चित किया है कि कपिल मुनि का जन्मस्थान शिवालिक श्रेणी के उत्तरपूर्व भूभाग में है। जहाँ आज भी एक पर्वतशिखर का नाम कपिल का टिब्बा है जन्म स्थान के समान ही कपिल के जीवन काल के विषय में भी पूर्व और पश्चिम के विद्वानो में मतभेद हैं, परन्तु साक्ष्यों के आधार पर भारतीय विद्वान कपिल का काल प्रथम सहस्राब्दि ईसा पूर्व के पहले का निश्चित करते हैं । इस आधार पर हम समझ सकते हैं कि भारत का दार्शनिक वैभव कितना प्राचीन एवं समृद्ध है।

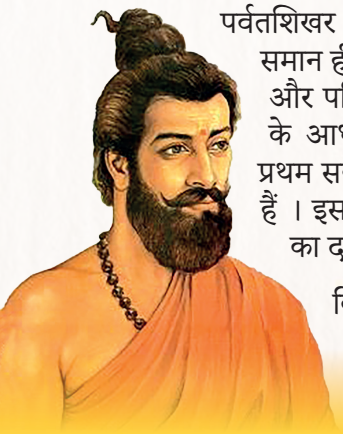

विष्णु पुराण भागवत पुराण आदि पुराणों एवं रामायण तथा महाभारत आदि में भी भगवान राम के पूर्वज महाराज सगर के साठ हजार पुत्रों को भस्म करने की कथा प्राप्त होती है। इस कथा के अनुसार जब महाराज सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया तो अपने यज्ञिय अश्व की रक्षा के लिये अपने साठ हजार पुत्रों को सेना के साथ उसके पीछे भेजा। अश्व अनेक भूभाग में विचरण करता हुआ स्वतंत्र रूप से जा रहा था तथा उसके मार्ग में आने वाले सभी राजा महाराज सगर की अधीनता स्वीकार करते जा रहे थे। महाराज सगर के इस बढ़ते हुए प्रभाव से विचलित होकर देवराज इन्द्र ने उस यजिय अश्व का अपहरण कर लिया। वह अश्व परमर्षि कपिल के आश्रम के समीप ही लुप्त हुआ था अतः सभी राज कुमार उसे खोजते हुए कपिल मुनि के आश्रम पहुंचे एवं उनसे अश्व के विषय में पूछने लगे। कपिल मुनि उस समय समाधि में लीन थे, अतः उन्होंने कोई उत्तर न दिया। राजकुमारों ने अनेक बार पूछने का प्रयास किया तथा कोई उत्तर न पाकर उन्होने ऋषि अपमान कर दिया। जिससे क्रोधित होकर कपिल मुनि ने उन्हें भस्म कर दिया। यह समाचार जब महाराज सगर को प्राप्त हुआ तो उन्होंने ऋषि से अपने पुत्रों के कृत्य के लिये क्षमा माँगी तथा उनके उद्धार का उपाय पूछा। तब कपिल मुनि ने उपाय बताया कि यदि उनके वंश का कोई व्यक्ति भगवान विष्णु के चरणों में स्थित माँ गंगा को पृथ्वी पर ला सके तो गंगा के जलस्पर्श से उनके पुत्रों का उद्धार हो जाएगा। महाराज सगर की अनेक पीढ़ियों ने जप तप दानादि किये परन्तु कोई भी माँ गंगा के अवतरण को संभव न कर सके। तब उनके वंश में राजा भगीरथ ने जन्म लिया। उन्होने कठिन तपस्या की तब गंगा जी भगवान विष्णु के चरणों से निकल कर ब्रह्मा जी के कमण्डलु में स्थित हुई और उन्होने भगीरथ से कहा कि यह पृथ्वी उनके वेग को सहन नहीं कर सकेगी, अत: उनके वेग को संयमित करने हेतु भगीरथ भगवान शिव की तपस्या करें जिससे वे माँ गंगा को अपने जटाओं में धारण कर उनके वेग को कम कर देंगे। भगीरथ ने ऐसा ही किया, तथा भगवान शिव ने उनसे प्रसन्न होकर माँ गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया। तदुपरान्त अपनी एक जटा खोलकर गंगा की एक धारा बहाई जो भगीरथ के पीछे-पीछे चली। भगीरथ उस धारा को लेकर अपने साठ हजार पूर्वजों के पास गए तथा गंगा के जलस्पर्श से उनका उद्धार किया। भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर अवतरण कराने के कारण गंगा का अपर नाम भागीरथी भी है।

सनातन काल में धरती पर अवतरित हुई गंगा आज भी प्राणिमात्र का पोषण कर रही हैं। इसके लिये सृष्टि परमर्षि कपिल एवं भगीरथ की ऋणी है।

- डॉ. आराधना तिवारी

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग

Mental Well-Being and Psychology : A Comprehensive Review

Psychological health or mental health rather is an integral component of one's overall well Psychological health or mental health rather is an integral component of one's overall well Psychological health or mental health rather is an integral component of one's overall well-being as it becomes the factor that aligns how an individual thinks, conducts and operates.

Through the means of psychological sciences, which help us examine the mind and through the means of psychological sciences it becomes easier for an individual to understand such concepts and hence develop their behaviour. It also becomes easier for an individual to understand such concepts and hence develop one's mental health. This article aims at minimizing the gap between psychological theories and real-life applications by underlining the significance of implementing the psychological principles that can help people to evolve as mentally healthier.

The mental health entails both emotional and psychological aspects as well as social aspects. It affects not only how people handle stress but also how they relate to others and the ways of thinking once they make up their mind. Contained in the mental health part are different aspects of Biology, Psychology, society, and the environment.

Psychology facilitates to formulate a scheme under which determines the relationship between different factors. Theories stemming from diverse psychological schools of thought give rise to a broad spectrum of theories and concepts. By presenting these theories, diagnosing the nature of mental disorders, and treatment programmes, we will try to provide readers with the knowledge and understanding of the psychiatric field.

The concept of mental health is considered to have gone through a major theoretical transformation. In antiquity it was considered very often a sign of a supernatural agency. Rituals, exorcisms and other magical elements were among the methods used in treatment. The classical Greek Physician Hippocrates was the first person who thought that natural factors such as imbalances of bodily fluids could be the cause of some psychological disorders.

During the medieval age, it was again dominated by the ideas of the demonic possession or punishment from God. Till renaissance the humanistic approach didn't develop where an increase was made in the study of human mind and body.

The Enlightenment was the cause of a shift in the field of science and gave rise to the systematic study of mental illness. In the 19th century, asylums emerged as sort of a response to the catastrophic events of the first half of the century.

The 19th and 20th centuries are recognized as the era of modern psychology with writers such as Sigmund Freud, who started psychoanalysis, and Emil Kraepelin, who established the foundation for the modern psychiatry. The rise of different psychological theories and the beginning of psychotherapy considerably helped in the progress of the knowledge and management of mental health problems.

Psychoanalytic theory, developed by Sigmund Freud, posits that unconscious processes, including repressed memories and desires, significantly influence behavior. Freud's model of the psyche consists of the id, ego, and superego, which interact to shape personality and behavior. Psychoanalysis involves techniques like free association, dream analysis, and transference to explore unconscious conflicts and bring them to conscious awareness, facilitating psychological healing.

Behavioral psychology focuses on observable behaviors and the principles of learning. John B. Watson, the father of behaviorism, argued that behavior is learned through interaction with the environment. B.F. Skinner expanded this theory with his concept of operant conditioning, which involves reinforcement and punishment to shape behavior. Behavioral therapy applies these principles to modify maladaptive behaviors and promote healthier ones.

Cognitive psychology examines how thoughts influence emotions and behaviors. Aaron Beck's Cognitive Behavioral Therapy (CBT) is a cornerstone of this approach, helping individuals identify and alter dysfunctional thought patterns to improve emotional regulation and mental health. CBT has been widely applied to treat a range of mental health disorders, including depression, anxiety, and PTSD.

Humanistic psychology, championed by Carl Rogers and Abraham Maslow, emphasizes individual potential and self-actualization. This approach highlights the importance of a supportive environment and empathetic understanding in fostering mental well-being. Person centered therapy, developed by Rogers, focuses on providing unconditional positive regard, empathy, and congruence to help clients achieve personal growth and self-discovery.

Implementation and promoting mental health using psychological principles is a complex and wide spread process. Taking benefit of theory, current research, and practice, we can bring mental health at both individual and social levels to advancement. Given the advancements in neuroscience, the promotion of mindfulness cultures, and the spread of digitized mental health care attrributes, the tendencies for the successful future in mental health care is high. Applying socio-cultural aspect together with execution of supportive policies the mental wellness of everyone can be on the rise.

- Shri Subodh Chandra Shukla
Assistant Professor, Department of Psychology

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण प्रकृति की महान् देन हैं। प्रकृति हमे वह सब कुछ होती है, जिसकी हमें आवश्यकता है- केवल मानव ही नहीं बल्कि पड़े पौधे और जीव जन्तु भी मानव के साथ इस पृथ्वी पर रहते है, जो अपने अस्तित्व के लिए प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर है। इसलिए हमें इनकी क्षति, प्रदूषण तथा शोषण से आवश्यक रक्षा करनी होगी, क्योंकि हम पृथ्वी को ही नष्ट कर डालेंगे, तब हम कहाँ बचेंगे? किसी महापुरूष ने सच ही कहा है:

पेड़ बचेंगे तो धरती बचेगी
जीवन बचेगा कल बचेगा
पेड़ से ही तो वर्षा होगी
नदी बचेगी जल बचेगा
जब खेतों में होगा अनाज
थालियों में भोजन बचेगा
जीवन में होगी खुशहाली
जब धरती पर पेड़ बचेगा।

पर्यावरण संरक्षण के हर व्यक्ति का सामाजिक दायित्व है। पर्यावरण अंग्रेजी भाषा के 'एनवारनमेन्ट' का हिन्दी की रूपान्तर है। 5 जून को विश्व एनवायरनमेंट दिवस के रूप मे मनाया जाता है।

पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर से घेरना मानव के चारों ओर से घेरना। अर्थात मानव के चारों ओर का वह क्षेत्र जो घेरे रहता है तथा उसके जीवन व क्रियाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है - उसे पर्यावरण कहते है। प्रत्येक मनुष्य पर पर्यावरण का प्रभाव गर्भाधारण से मृत्यु (womb to tomb) तक प्रभाव पड़ता है। जब बच्चा गर्मधारण मे आता है उस समय से लेकर मृत्यु तक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है।

पेड़ धरती पर जीवन का सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण साधन है। धरती पर स्वास्थ्य और व्यवसायिक समुदायों के लिये ये बहुत काम का है। कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से धरती पर ये सभी जीव जन्तुओं को फायदा पहुँचाते हैं। धरती पर सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ी हुइ है और प्रकृति के संतुलन से चलता है, अगर इसके साथ कोई गड़बड़ी होती है, पूरा पर्यावरण बाधित हो सकता है और धरती पर जीवन को नुकसान पहुँचा सकता है। पेड़ हमें बहुत सारी प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखता है और बहुत तरीकों से हमारे जीवन का पालन-पोषण करता है। ये हमारे पर्यावरण को स्वच्छ और पृथ्वी को हरा रखता है। इसलिये, हम भी इनके प्रति पूरे जिम्मेदार बने और इनको बचाने के लिये अपना सबसे बेहतर प्रयास करें लम्बे और परीपक्व पेड़ छोटे पेड़ों से अधिक लाभदायक होते है, क्योंकि वे अधिक कार्बन को सोखता है, ग्रीन हाउस गैसो को अत्यधिक दर पर छानता है, तूफानी पानी का अभिग्रहण करता है, बड़ी छाया उपलब्ध कराता है और शहर के उष्मा का विरोध करता है, ऊर्जा के इस्तेमाल को घटाता है आदि। इसलिये हमें आपात समय मे

भी इसे नहीं काटना चाहिये। पेड़ हमारे जीवन मे भोजन और पानी की तरह ही महत्वपूर्ण हैं। पेड़ हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जीवन प्रदान करता है, क्योंक ये ऑक्सीजन उत्पादन, Co_2 उपभोग का स्रोत, और बारिश का स्रोत है।

हवा को शुद्ध करने, पारिस्थितिक की संतुलन को बनाये रखने, दवा आदि उपलब्ध कराने के अलावा, ये हमें कई बीमारियों से भी बचाता है। पेड़ हमारे लिये महत्वपूर्ण संपत्ति की तरह होते हैं जो मिट्टी के कटाव से बचाते है, घर उपलब्ध कराते है, मिट्टी से पोषक तत्व आदि उपलब्ध कराते हैं। हमारे जीवन का पालन-पोषण करने के लिए हमारी 'धरती माँ' की तरफ से वास्तव में हमें बहतु सारे बहुमूल्य उपहार दिये गये हैं। उनमे से एक सबसे महत्वपूर्ण उपहार वृक्ष या पेड़ है। ये धरती पर मानव और पशु दोनों के लिये भोजन और छत का महत्वपूर्ण साधन है।

पेड़ के फायदे- हवा को शुद्ध करने और ग्रीन हाउस गैसों को सोखने के द्वारा परीपक्व पेड़ जलवायु परिर्तन से विरोध करने में हमें मदद करता है, क्योंकि वो जलवायु परिवर्तन के मुख्य स्रोत होते हैं।

वायु को ताजा करने के द्वारा पेड़ हवा को साफ करने मे मदद करता है, क्योंकि ये पर्यावरण मे मौजूद सभी दुर्गंध और प्रदूषित गैसों को सोख लेता है। एक एकड़ में परीपक्व पेड़ प्रति वर्ष 18 लोगों को ऑक्सीजन उपलब्ध करा सकती है। पेड़ गर्मी के मौसम की उष्मा के साथ ही कम सर्दी के तापमान का विरोध करता है। पेड़ सबसे बेहतर ऊर्जा संरक्षण और ग्लोबल वार्मिंग प्रबंधन तकनीक है, क्योंकि ये 500 तक ग्रीष्मकालीन वायु अनुकूलन की जरूरत को घटाती है।

अल्ट्रा वाइलेट किरणों से बचाने के लिए पेड़ हमें एक मजबूत कवच प्रदान करता है ओर इसी वजह से त्वचा कैंसर और त्वचा की दूसरी समस्याओं से भी बचाता है। पेड़ भोजन, (जैसे फल, सब्जी आदि) छत, दवा, अर्थव्यवस्था आदि का एक अच्छा साधन है।

आज समूचे विश्व मे पर्यावरण बचाओ आन्दोलन शुरू हो गए है। अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में तो हरियाली अन्दोलन का उदय हो चुका है। भारत सरकार ने पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण की नीति अपनाई है। इसमे वनों की अंधाधुन्ध कटाई पर रोक लगाई गई। वनों के रख-रखाव की समुचित व्यवस्था की गई है। देश में लगभग 400 गैर सरकारी संस्थाएं ऐसी है, जो पर्यावरणीय जागरूकता लाने की चेष्टा कर रही है। 'चिपको आन्दोलन' उतराखण्ड में स्वर्गीय सुन्दर लाल बहुगुणा द्वारा पूरे भारत मे पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक करने का एक अनूठा प्रयास था। पर्यावरण संरक्षण समाज के हर व्यक्ति का समाजिक दायित्व है। व्यक्तिगत स्तर से ही पर्यावरण संरक्षण सम्भव हो पाएगा।

- प्रो0 डी0 के0 चौधरी

विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र विभाग

नाग-नागिन

पौराणिक कथाओं में से एक शील नाग- नागिन की कथा जिसकी शुरूवात होती है राँची जिला के सोनाहातू अंचल के बारेन्दा से जंहा एक पर्वत स्थित है जंहा पर उस समय सभी प्रकार के जीव जंतु रहते थे उनके रहने के लिए भी उचित जगह था वर्तमान मे भी है l विशाल-विशाल गुफा होने के कारण वहां पर अन्य जीव के साथ नाग-नागीन भी रहते थे l समय था त्रेता युग। एक दिन मध्य रात्रि मे भयंकर भूकंप आया जिससे पहाड़ों में हलचल हुई जिससे निवास स्थल में खतरा होने की संभावना को देखते हुए नाग-नागिन ने उक्त जगह को छोड़ने का मन बना लिया। खाने पीने और रहने की समुचित व्यवस्था को देखते हुए सामने अवस्थित स्वर्णरेखा नदी के किनारे ही रहने का मन बना लिए l लगातार भूमिगत हलचल के कारण रात्री के समय वे दोनों वहां से निकल गए क्योंकि दिन में वहां से चलना उचित नहीं समझा । दिन में उन्हें मनुष्य से खतरा था।

इसलिए रात्री बेला में उन्होंने दुलमी गांव होकर स्वर्णरेखा नदी जाने का रास्ता चुना परंतु विधि ने कुछ और ही लिखा था। दुलमी गांव पार करते करते सुबह होने लगा लोगों की गतिविधि होने के कारण दोनों एक दूसरे से अलग हो गए l सूर्य की प्रकाश बड़ते देख दोनों एक दूसरे को देखने के लिए खड़े हो गए जो वर्तमान समय में पत्थर के रूप में अवस्थित है l जब दोनों नाग-नागिन विशाल रूप में धरती से ऊपर उठे तो माँ सबर्णी ने सोचा कि ये अगर मेरे प्रवाह स्थल में रहने लगेंगे तो मेरे ऊपर नर जीवों का आस्था उठ जाएगा और मन में डर की भावना उत्पन्न हो जाएगी क्योंकि मेरे धार से जीवों का प्यास बुझता है, पुण्य के लिए लोग स्नान करते हैं। अगर ये नदी में रहने लगेंगे तो जीव जंतु एवं मनुष्य मुझ पर सवाल करेंगे। अतः मुझे इन दोनों को आने से रोकना होगा l फिर क्या आकाश लोक से माँ सबर्णी आकाशवाणी की - हे नाग! आप हमारे प्रवाह स्थाल पर ना आएं अन्यथा अनर्थ हो जाएगा, मेरी पवित्रता पर भी सवाल उठेंगे l नाग नागिन की ओर से भी अनेक बिनती हुई परंतु माँ सबर्णी मानने को तैयार नहीं हुई। फिर भी नाग नागिन आगे बढ़ने लगे। इन दोनों की जिद्द को देखते हुए माँ सबर्णी क्रोधित हो गईं और दोनों को ऐसा श्राप दी जिसके वजह से दोनों नाग नागिन पत्थर के हो गए l

यह स्थल आज भी दुलमी गाँव पार कर अवस्थित है l माँ सबर्णी का दया है कि आज भी माँ सबर्णी का प्रवाह सीमा यानी स्वर्णरेखा नदी में कोई जहरीली साँप नहीं मिलती है। जहाँ पर नाग नागिन के पत्थरनुमा आकार हैं वहां हल्के फुल्के जंगल और मैदान हैं। नाग पंचमी के दिन पूजा पाठ होती है। माँ सबर्णी ने भी जीव जंतु एवं मनुष्य की रक्षा के लिए नाग नागिन को श्राप से पत्थर बनाया था जिसकी याद में मेले का आयोजन धूमधाम से होता है और जब स्वतंत्र भारत में लोगों और जीवों की रक्षा के लिए 26 जनवरी 1949 में संविधान लागू हुआ तो उस दिवस को ही मेले के आयोजन को सर्वसम्मति से मान्यता मिल गई।

ये स्थल पांच परगना क्षेत्र का दर्शनीय जगह है। बहुत लोग दर्शन करने आते हैं। कई वीडियो यू ट्यूब में भी चल रही है। ऐसी मान्यता है कि नाग नागिन ने माँ सबर्णी से अनवरत विनती के बावजूद उन्हे पत्थर का बना दिया तो जो भी मनुष्य उनके ऊपर पत्थर मार कर जो भी मन्नत मांगेगा, वह अवश्य ही पूर्ण होगा। उक्त जगह पर छोटे छोटे पत्थर का भारी मात्रा मे होना इस बात को प्रमाणित करता है। और आज भी स्थानीय लोग पत्थर फेंक कर मन्नत मांगते हैं और वो पूर्ण होता है l

- भूतनाथ प्रामाणिक

कुरमाली, विभागाध्यक्ष

UG DEPARTMENTS

DEPARTMENT OF BOTANY

DEPARTMENT OF GEOLOGY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

UG DEPARTMENTS

DEPARTMENT OF PHILOSOPHY

DEPARTMENT OF COMMERCE

UG DEPARTMENTS

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

मजदूर की करुण गाथा

मैं भारत माता के भाल का गुरूर हूं।
लाचार, बेबस, तंगहाल मजदूर हूं॥
मैं आपकी तरह ही एक इंसान हूं।
लेकिन भूला नहीं कि मैं एक मजदूर हूं।

किससे कहें हम अपने मन की व्यथा।
कैसी हम गरीबों की दशा॥
बन गई है जिंदगी एक सजा।
कोई तो मुड़कर हमारी ओर देखो जरा॥

मैं सर्दी गर्मी हर मौसम कर्म पथ अपनाता हूं।
नीली छतरी के नीचे रह पसीना बहाता हूं॥
जीवन के खातिर श्रम साधक बन जाता हूं।
ऊंची इमारत बनाने वाला धरती बिछौना पाता हूं॥

प्रतिदिन मुश्किलों से टकराता हूं।
परिश्रम को सदैव अपनाता हूं॥
महल की ललक नहीं रखता।
फिर भी महंगाई की मार सहता हूं॥

आंखों में समंदर भरे रहता हूं।
फिर भी खून की घूंट पीता हूं॥
पूरी दुनिया को बसेरा देता।
पर खुद सड़क किनारे पड़ा रहता हूं॥

कभी परिश्रम से घबराता नहीं।
मेहनत किए बिना खाता नहीं॥
कभी किसी के आगे हाथ फैलता नहीं।
सबका भला सोच पर, अपना समझने वाला कोई नहीं॥

सोने को चारपाई दूर बिछौना तक नहीं।
खुले आसमान तले सोने के अलावे दूजा रास्ता नहीं॥
किसी ने दिया कभी सम्मान नहीं।
मैं भी इंसान हूं कोई मशीन नहीं॥

हरदिन दूसरों की ख्वाहिश पूरा करता।
अपनी स्थिति मजबूत बनाने का प्रयास करता॥
अपने बच्चों की किस्मत लिखने की कोशिश करता।
भूल जाता हूं मजदूर हूं, सिर्फ मजदुरी कर सकता हूं॥

लोगों के कल्याण के लिए जीवन बिताता हूं।
उनके आत्म सम्मान को बचाता हूं॥
कहलाने को भविष्य निर्माता हूं।
मैं मजदूर हूं,आपके दिल में रहना चाहता हूं॥

करो न तुम मेरी वंदना बारंबार।
बस दे दो मेरी मेहनत का अधिकार॥
करो न मजबूर हाथ फ़ैलाने के खातिर।
बस दे दो मेरी मेहनत का पगार॥

नहीं देखता मैं ख्वाब सुखद जीवन का।
नहीं चाहिए मुझे पुआ- पकवान॥
खुश हूं सुखी रोटी, नमक, मिर्च प्याज पा कर।
यही बनायें हम मजदूरों के जीवन को सदा बहार॥

मुझे नहीं चाहिए अट्टालिका।
बस बन जाओ साक्षी मेरी मेहनत का॥
उज्ज्वल भविष्य हो आपका।
बस मुझे सम्मान दो मेरे हक़ का॥

- राजेन्द्र प्रसाद
सहायक प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान, विभाग

भारत में नारी जाति का स्थान

हमारा इतिहास साक्षी है कि भारतीयों ने नारी जाति को हमेशा सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। वैदिक युग में नारी सामाजिक स्तर पर सम्मानित थी। प्रकृति स्वरूपा नारी को परमेश्वर की शक्ति के रूप में स्थान दिया गया है। यही कारण है कि इन्हें विद्या, विभूति, सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा जैसे कई उपासक नाम दिए गए हैं।

अत्यधिक प्राचीन युग में मातृसत्तात्मक परिवार होता था, जिसमें माता परिवार की मुखिया होती थी और उसके नाम से ही परिवार जाना जाता था। कालांतर में पितृप्रधान परिवार होने लगे, किंतु मातृपद पूजनीय ही बना रहा। लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व वैदिक युग में स्त्रियों को श्रेष्ठ सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। उन्हें न केवल वैदिक मंत्रों के पाठ का बल्कि वेद मंत्रों की रचना करने का भी अधिकार था। परिणामतः कोई भी धार्मिक अनुष्ठान स्त्री के बिना पूरा नहीं होता था। मसलन स्त्रियां गृहप्रधान ही नहीं बल्कि राज्यप्रधान और कभी-कभी युद्ध क्षेत्र में भी पुरुषों का साथ देती थीं। यथा कुंती, शकुंतला, रुक्मिणी, कैकेयी आदि के नाम विभिन्न संदर्भों में उल्लेखनीय हैं।

समय के साथ परिस्थितियां बदलीं तथा सामाजिक परिवेश भी। आचार-विचार में परिवर्तन होते रहे। देश में अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक क्रांतियां हुईं। प्राचीन मूल्य के ढांचे लड़खड़ा गए तथा नए-नए मूल्यों का उद्भव हुआ। मध्य युग आते-आते स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में काफी पतन आ गया था। आदर्श एवं श्रद्धा के स्थान पर नारी भोग एवं मनोरंजन की वस्तु बन गई। विदेशी यवनों के आक्रमण तथा राज्य स्थापना के पश्चात देश की सभ्यता एवं संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुस्लिम शासनकाल में नारी जाति का अधःपतन तेजी के साथ हुआ। उस पर चाहे अनचाहे अनेक बंधन लग गए। उनकी स्वतंत्रता घर की दीवारों के भीतर ही सीमित हो गई। साहित्य और समाज में वह मनोरंजन का साधन तथा घर की दासी बनकर रह गई। समय के साथ विचारों में परिवर्तन हुआ किंतु उनके प्रति विचार नहीं बदले। उनके लिए कबीर का यह दोहा पर्याय है:

"नारी की झाई पड़त; अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, जो नित रानी के संग॥"

फलतः प्रत्येक क्षेत्र में नारी को आघात लगा। पर्दा प्रथा तथा बाल विवाह का प्रचलन आरंभ हो गया। कन्या को शिक्षा देना अनावश्यक समझा जाने लगा। सामाजिक कार्यों में नारी का

प्रवेश वर्जित हो गया। इस तरह नारी जाति क्रमशः शक्ति का प्रतीक न रहकर अबला बन गई। अर्थात मैथिली शरण गुप्त के अनुसार:

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।"

लेकिन आधुनिक युग में पुनः नारी के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आने लगा। इस युग में नारी पूज्या और श्रद्धा की पात्र रहे या ना रहे परंतु उसे बराबर का अधिकार जरूर मिल रहा है। हालांकि अभी भी पूर्वाग्रह समाप्त नहीं हुआ है, फिर भी अब नारी के उत्थान में नारी की ओर से कमी हो रही है। नारी के हितार्थ स्वयंसेवी संस्थाएं जितना चाहिए, उतनी जुझारू नहीं हो पा रही हैं।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण काल में समाज सुधारकों और विचारकों ने नारी की दुर्दशा पर भी ध्यान दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर तथा महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने जिस संस्कृति को जन्म दिया उससे नारी मुक्ति आंदोलन की लहर फैल गई। अंग्रेज शासकों को भी बाध्य होकर सती जैसी कुप्रथा पर कानूनी रोक लगानी पड़ी। धीरे-धीरे स्त्रियों को अधिकार मिलने लगे। बाल विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा प्रथा आदि शिथिल पड़ने लगे तथा स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह जैसे प्रगति मूलक कार्यों पर जोर दिया जाने लगा। समस्त विचारकों ने अपने-अपने ढंग से नारी मुक्ति आंदोलन में योगदान दिया। नारी को सामाजिक अधिकार दिए जाने लगे तथा लोगों को उसकी महत्ता का अभ्यास होने लगा। इसी के साथ साहित्य में नारी जागरण का संदेश गूंज उठा।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, कमला नेहरू आदि ने पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया और यातनाएं सहीं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में बंदूक धारण करने वाली आजाद हिंद सेना की नारी सैनिकों का साहस और शौर्य भुलाया नहीं जा सकता।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारी ने राजनीति में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक महिला थीं। वर्तमान में सर्वोच्च संवैधानिक राष्ट्रपति पद पर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू आसीन हैं। राजनीतिज्ञ, न्यायाधीश, प्रशासन, राजदूत, कवि, चिकित्सक, समाजसेवी, खिलाड़ी एवं वैज्ञानिक के रूप में भारतीय नारी ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। अब वह किसी भी क्षेत्र में अबला नहीं रही। उसने सिद्ध कर दिया है कि उसमें पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर घर और बाहर सभी क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता है। भारतीय संविधान ने भारतीय महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किया है।

किंतु आज स्थिति अनुकूल है। महिलाओं के बिना पुरुष प्रधान मानव समाज विकलांग है। यही कारण है कि द्विवेदी युग के अधिकांश कवियों ने नारी के महत्व को अपने काव्य में विशेष रूप से स्थान दिया है। नारी वर्तमान राजनीति और समाज का मेरुदंड है। अपितु वर्तमान परिदृश्य में नारी आदिकाल की तुलना में ज्यादा सशक्त हुई हैं। चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, या कला साहित्य का, या फिर ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र हो। सभी वर्गों में इन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है। इस प्रकार भारतीय नारी ने अपनी शक्ति को पहचान लिया है। उसने अपने आप को प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित कर लिया है।

- रविकांत मेहता
वाणिज्य विभाग

झारखंड – एक परिचय

झारखंड प्रकृति की गोद में बसा एक राज्य है, जिसके उन्मुक्त रंगीन और रसमय वातावरण में झारखंडी जीवन व्यतीत करते हैं। यहां की हरियाली और फूलों से भरे हुए जंगल, रहस्यमय गुफाएं, कलकल करते झरने,शीतल हवाएं, पहाड़, मधुर स्वरों से जंगलों को गुलजार करने वाले पंछी और न जाने कितने मनोरम दृश्य झारखंडी जन जीवन की दुनिया है।

झारखंड में ऋतु व मौसम के अनुसार पर्व त्यौहार की शुरुआत होती है।आदिवासियों का सबसे बड़ा त्योहार सरहुल है, जो बसंत ऋतु में मनाया जाता है। आदिवासी समुदाय इस पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। झारखंड के आदिवासी इस दिन प्रकृति की पूजा कर एवं नए वर्ष के आगमन का स्वागत कर खेत-खलिहान की हरियाली की कामना करते हैं। मुंडा आदिवासियों का सबसे प्रमुख और प्राचीन गीत जादुर है, जिसे मुंडा जाति सरहुल पर्व के आगमन में बड़े उल्लास से गाते हैं। बसंत गीत जो बसंतोत्सव का प्रतीक है। प्रकृति जब अपना अभिनव शृंगार करती है तब जंगलों में बसंत की छटा छा जाती है। प्रकृति के इस रूप से समस्त मानव व पशु-पक्षी स्वर में स्वर मिलाकर झूम उठते हैं। इनके मस्ती भरे मन पर छाया हुआ सारा वातावरण ही पर्व बन जाता है। ये एक-एक फूल के पास जाकर उसकी निराली मुस्कान का रहस्य पूछते हैं और उनके जादुर गीत प्रकृति के आंचल में बैठकर मधुर संकीर्तन करते हैं। जब पलाश के फूलों और कुसुम की नई कपोलों से सारा वन लाल हो जाता है तब उनके मोहक खुशबू से पूरे वातावरण में जादुर की मीठी और रसीली गीत प्रकृति में घुल-मिल जाती है।

मुंडा कवियों ने प्रकृति के स्वतंत्र रूप का सजीव वर्णन करने के साथ विभिन्न गीतों से बसंत के स्वागत में गीत गाया है, जिनके कुछ दृष्टांत (उदाहरण) देखे जा सकते हैं :–

“खड् तयोमेतेम- हिजकन
राजा रानी लेकम समपोड़कन
इसु दिनतेञ उडु: केन
मेन्दोम् मुलु: लेन बा चंडु:
पुरन पाण्डु सकम नोचो: केते
नव सुड़ सड़िम ओमेतद,
विरते दरू,कोञ लेलउकेन
मोए-तन,बा-तन, जोतन।

"करमा" पर्व झारखंडी संस्कृति की एक मुख्य पहचान है। इस पर्व को झारखंड के आदिवासी से लेकर सदान भी समान रूप से मनाते हैं। यह पर्व झारखंड के सदान और आदिवासी दोनों समुदाय की एक साझा संस्कृति है। करमा पूजा भादो की शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है। करमा गीत झारखंडी जनजीवन की सीमाओं तक बंधे हुए नहीं हैं अपितु, गर्मी के वन वृक्षों की शीतल छाया में, आषाढ़ की काली घटाओं में, बरसात के एकांत खेतों में और भादो की सूनी राहों तक समान रुप से फैली हैं।

झारखंडी संस्कृति में करमा वृक्ष की डाली को आंगन में आदर पूर्वक गाड़कर पूजा-अर्चना करते हैं। इसके बाद नृत्य-संगीत, ढोल, नगाड़े, मांदर, बांसुरी और शहनाई आदि वाद्ययंत्रों के द्वारा करमा त्यौहार को मनाया जाता है।

"बुरू" पर्व सांस्कृतिक दृष्टि से दूसरा प्रमुख त्योहार है, जिसे विभिन्न जनजातियों के लोग अलग-अलग नामों से पुकार कर उसकी पूजा करते हैं। यह मुख्य रूप से मुण्डा जाति का पर्व है जिसे अगहन पूर्णिमा में मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक प्रकोप से मानव समाज की रक्षा करना है। इस पर्व पर पहान समुदाय नहा-धो कर अरवा चावल की चुनी से रोटी बनाते हैं तथा सरना स्थल पर लाल मुर्गा, हड़िया और चावल का रस चढ़ाते हैं। वहीं "सोहराई" पर्व झारखंड में सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रसिद्ध है। यह पर्व सामान्यतः अमावस्या कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रथम एवं कार्तिक द्वितीय शुक्ल पक्ष के दिन मनाया जाता है। यह त्योहार मुख्य रूप से पशु सेवा व पशुधन में वृद्धि एवं सामूहिक जीवन-यापन की कामना करता है। इस पर्व में पशुओं को तेल, सिंदूर, अरवा चावल तथा विभिन्न रंगों से सजाया जाता है।

"मण्डा" का पर्व अक्षय-तृतीया वैशाख माह में आरंभ होता है। इसमें महादेव की पूजा की जाती है। यह पर्व आदिवासी और सदान दोनों समुदाय में मुख्य रूप से प्रचलित है। "जनी शिकार" झारखंडी संस्कृति का मुख्य रस्म है,जो प्रत्येक 12 वर्षो में एक बार मनाया जाता है।इस रस्म में महिलाएं सामूहिक रूप से पुरुष वेशभूषा का धारण कर परंपरागत हथियार लेकर गांवों के अंदर शिकार खेलने निकलती हैं। ये महिलाएं एक दूसरे के गांवों में जाकर बकरी,भेड़, सुअर,हंस,बतख आदि पशुओं का शिकार करती हैं।

"मदइती" झारखंडी संस्कृति का एक प्रमुख धरोहर है।यह परंपरा मुख्य रूप से ग्रामीण जनजीवन में देखने को मिलती है। यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है जो प्रेम, सौहार्द, एकता और भाईचारा का प्रतीक है। इस परंपरा को झारखंड के आदिवासी व सदान दोनों ही समुदाय के लोग समान रूप से मनाते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं।

"छऊ-नृत्य:" झारखंड में ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष में अपना एक अलग पहचान लिए हुए है। यह नृत्य झारखंड के साथ-साथ पड़ोसी राज्य उड़ीसा में भी प्रचलित है। इसमें नृत्यकार मां दुर्गा, शिव, गणेश,कार्तिक और महिषासुर आदि देवी-देवताओं की वेशभूषा धारण कर अपने नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावे "पैका नृत्य" भी झारखंड में काफी प्रचलित है। जिसे युद्ध- नृत्य भी कहा जाता है। इसमें नर्तक सैनिक वेशभूषा का धारण कर हाथों में तलवार,भाले, एवं अस्त्र-शस्त्र के द्वारा अपने युद्ध कला का प्रदर्शन करते हैं। यह नृत्य मुख्य रूप से शादी विवाह और विशेष कार्यक्रमों में आयोजित किए जाते हैं।

- लखींद्र मुंडा
सहायक प्राध्यापक, मुंडारी विभाग

कोरोना: मानव समाज के लिए सबक

ईश्वर की सबसे अकल्पनीय संरचना मानव है। मानव का विकास और प्रकृति का विनाश यह खुशहाली और एक बेहतर समाज बन जाने की गारंटी नहीं देता। जब हम प्राकृतिक सौंदर्य को कुचल कर अन्तरिक्ष पर कब्ज़ा करने की कोशिश कर रहे थे,तब प्रकृति ने हमें संकेत देने के लिए अपने प्रतिनिधि के रूप में कोरोना को भेज दिया। मानव बड़ी-बड़ी तकनीक विकसित कर रहा है, किन्तु वह प्रकृति के संकेतों की व्याख्या करने और उनसे सीखने में हमेशा नाकाम रहा है। यह वक्त उन संकेतों को समझने और उसके आधार पर अपनी रीति-नीति बदलने का है।

यह सच है कि हम इस पृथ्वी और इसके आसपास पाए जाने वाले संसाधनों के मालिक नहीं, बल्कि ट्रस्टी (संरक्षण) भर हैं। मानव प्राकृतिक संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण की धक्का-मुक्की में यह देख ही नहीं पाया कि किस तरह अपनी जरूरत और हैसियत से बाहर जाने के कारण हमारी दुनिया में हिंसा, आतंक, असमानता, साम्प्रदायिकता, लैंगिक उत्पीडन और असुरक्षा का असीमित विस्तार हो गया। मानव समाज ने उद्योग के नाम पर गंगा और यमुना नदी में घातक अवशिष्ट का निस्तार करके विकास की जो धारा प्रवाहित किया है वह मानव और उसकी संस्थाओं को भीतर ही भीतर खोखला कर दिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि कारपोरेट बाज़ार भी यह समझ नहीं पाया कि इस तरह का उपभोग और संसाधनों का शोषण उनके लिए भी आत्मघाती है।महात्मा गांधी ने इसे ही "शैतानी सभ्यता" की संज्ञा दी थी और कहा था कि यह सभ्यता एक दिन खुद को ही नष्ट कर लेगी।

भारत ने गांधी विचार को अपनी नीति में शामिल नहीं किया, जबकि वह विचार भारत को उसका सही मुकाम दिलाने का साधन हो सकता था और आज भी हो सकता है।गांधी से कहा जाता रहा कि तकनीक और आर्थिक विकास की गति में विश्वास करने वाली इस दुनिया में वे बिलकुल विपरीत बात कर रहे हैं, तब गांधी कहते हैं कि इससे न वे सही साबित होते हैं और न मैं गलत।जब पतंगें (कीड़ा) का अंत नज़दीक आता है, तब वह दीपक के ज्यादा करीब आकर चक्कर लगाने लगता है। अतः कोरोना के संक्रमण ने यह सिद्ध किया है कि हमारी जीवन शैली प्रकृति की अनुकूल नहीं है।

ऐसे में कोरोना वायरस ने छः महीनों में इसी ताकतवर दुनिया को गांधी की चेतावनी के करीब लाकर खडा कर दिया। इस कोरोना काल में हम सबने देख लिया है कि हमारे विकास का माडल दो महीने में ही डगमगाने लगा। जिस वक्त कोरोना के फैलाव की सूचना मिली, उस वक्त लगभग पांच करोड़ लोग अपने स्थाई घर से दूर पलायन पर थे। तालाबंदी के बावजूद वे उन शहरों या औद्योगिक क्षेत्रों में नहीं रुकना चाहते थे जहां उनकी जीविका चलती थी। लेकिन फिर भी वे अपने घर वापस लौट जाना चाहते थे। अतः विकास का मॉडल धरा का धरा रह गया और हज़ारों मजदूर सैकड़ों किलोमीटर दूर पैदल चलने के लिए विवश हो गए। वे किसी भी परिस्थिति में अपने गाँव, अपनी जड़ों की तरफ लौटना चाहते थे।

जब मजदूर सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलकर घर लौट रहे थे, तब भारत का मध्यम वर्ग उन्हें समाज विरोधी की संज्ञा दे रहा था, बिना जाने के ये मजदूर कितनी जीवटता से मरने से पहले अपनी जड़ों की तरफ लौट जाना चाहते हैं। कोरोना ने समाज के भीतर ही नहीं, बल्कि परिवारों के भीतर भी एक नए किस्म का फासला खडा कर दिया है।उनके साथ कोई मानवीय संवेदना और प्रेम का रिश्ता हमारे समाज में नहीं था, क्योंकि उन्हें लगता है कि किसी भी छोटे से छोटे संकट में मजदूरों के साथ बना संवेदनशील रिश्ता उन्हें और ज्यादा मुनाफा कमाने से रोकेगा। हम आर्थिक विकास चाहते हैं, किन्तु उसमें प्रेम, अमन और संवेदना के लिए कोई स्थान नहीं रखना चाहते हैं, यही बात कोरोना के संक्रमण काल ने सिद्ध की है।

मनुष्य होने के नाते, हम सभी एक जैसे दुख, एक जैसी उम्मीदें, एक जैसी क्षमताएँ साझा करते हैं। कोविड-19 महामारी ने हमें याद दिलाया है कि हम एक-दूसरे पर कितने निर्भर हैं।एक व्यक्ति के साथ जो होता है, उसका असर जल्द ही कई अन्य लोगों पर भी पड़ सकता है। इसलिए, यह हम सभी पर निर्भर करता है कि हम एक-दूसरे को सम्मान करें और इस बारे में सोचें कि हम दूसरों के लिए क्या कर सकते हैं, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिन्हें हम कभी नहीं देखते। ऐसे समय में चिंता और डर महसूस करना स्वाभाविक है जब इतने सारे लोग पीड़ित हैं। लेकिन केवल शांति और स्पष्ट दृष्टि विकसित करके ही हम दूसरों की मदद कर सकते हैं। यहाँ तक कि खुद की भी मदद कर सकते हैं। अपने जीवन में, मैंने अक्सर पाया है कि सबसे कठिन चुनौतियों ने ही मुझे ताकत हासिल करने में मदद की है। वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य संकट हमें यह भी याद दिलाता है कि मानव परिवार को प्रभावित करने वाली समस्याओं का समाधान हम सभी को करना होगा। विशेष रूप से पर्यावरण से संबंधित समस्याओं का जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर निर्भर करता है। अंततः, यदि मानवता को समृद्ध होना है, तो हमें याद रखना चाहिए कि हम एक हैं।

-धान सिंह महतो

परीक्षा नियंत्रक

Butea monosperma (Lamk.) Taub. "Flame of The Forest" : A Review

The plant *Butea monosperma* (Lamk.) Taub. is a vibrant and culturally significant bloom found abundantly in Indian state of Jharkhand. Revered for its fiery red and orange petals is often referred to as the "Flame of the forest" or "Flame tree". is the state flower of Jharkhand. The striking flower and entire plant not only adds a splash of colour to the landscape of Jharkhand but also holds deep culture, ecological and medicinal values.

Taxonomic Classification

Kingdom	-	Plantae
Division	-	Magnoliophyta
Class	-	Magnoliopsida
Sub-Class	-	Rosidae
Order	-	Fabales
Family	-	Fabeaceae
Genus	-	Butea
Species	-	B. monosperma

The plant find mentioned in Regveda and is known by many names like Palash, Tesu, Khakra, Raktapushpa, Brahmakalah, Kinshasa, Dhaka and plasu etc.

Hindu mythology

The tree is a form of Agni, God of Fire. It was a punishment given to him by Goddess Parvati for disturbing her and Lord Shiva's privacy.

Plant's Description :-

The beauty of dry deciduous forest of Jharkhand reach there height when most trees have fallen their leaves and Palash is its full bloom during February to April.

The Butea monosperma tree is diminutive to mediocre - sized height of around 5-15 m.

Stem - It is made up of Porus soft wood with greenish white tint.

Leaves - The leaves are pinnate with 8 to 16 cm petiole and three leaflets.

Flowers - The flowers are 2.5 cm long Bright Orange red and produced in racemes. Each flower features 5 petals two "wings" and a "keel" that resembles the curled beak of a parrot.

Fruit- It is Flat legume you 15 cm long 3.5 cm wide pod. The younger pod have lots of hairs owing to its velvety.

This plant indigenous to India. The various indigenous system such as Siddha, Ayurveda, Unani, horopathy, herbal medicine and traditional medicinal system use plants species to treat many health problems. Today's estimate that about 80% of people of rural areas are still relay on herbal or traditional medicinal system. In the state of Jharkhand Palash is associated with the folk tradition.

Ecological Importance:-

The Palash tree which bear Palash flower, plays a crucial role in the ecology of Jharkhand. The tree is well -adapted to the region's climate and soil, providing vital support to the local ecosystem. It acts as a host plant for the various species of birds, insects and animals. Flower attract pollinator such as bees and butterflies to pollinate the other crops. The tree also preventing soil erosions with its extensive root system which stabilize the soil.

Medicinal Importance :-

The Palash flower and other parts of trees have been used in traditional medicinal system for centuries.

Leaves:- used against Anti-diabitic and Anti-oxidant effects.

Flowers:- used against Anti -cancerous Anti-inflammatory effects.

Seeds:- used for hormonal balance Anti-viral and Anti -microbial effects.

Fruits:- used against hypoglycemic and Antihelminthic effects.

Economic Value:-

In addition to its cultural and medicinal significance the palace flowers contributes to the local economy of Jharkhand. The natural dye produce from the flower is in demand for organic and eco friendly products. The locals used flowers to make colours for the celebration of Holi. Artisans and local businesses often use these dyes for textile, craft and other products, creating a niche market that supports sustainable Livelihood.

Conservation Efforts:-

Despite it's numerous benefits the Palash tree faces threats from deforestation and habitat loss. Efforts are being made to conserve this iconic plant species through reforestation and awareness campaign local communities along with government and non government organisation are working together to ensure the preservation of Palash tree and it's environment.

Conclusion :-

Palash flower is the symbol of Jharkhand's natural beauty and cultural richness. it's vibrant present in the forests and festivals of the region reflects the deep connection between the people and their environment. By understanding and appreciating the significance of Palash flower, we can contribute the conservation of this valuable species and ensure that it continues to bloom brightly in the heart of Jharkhand for generation to come.

- Dr. Soni Kumari
Department of Botany

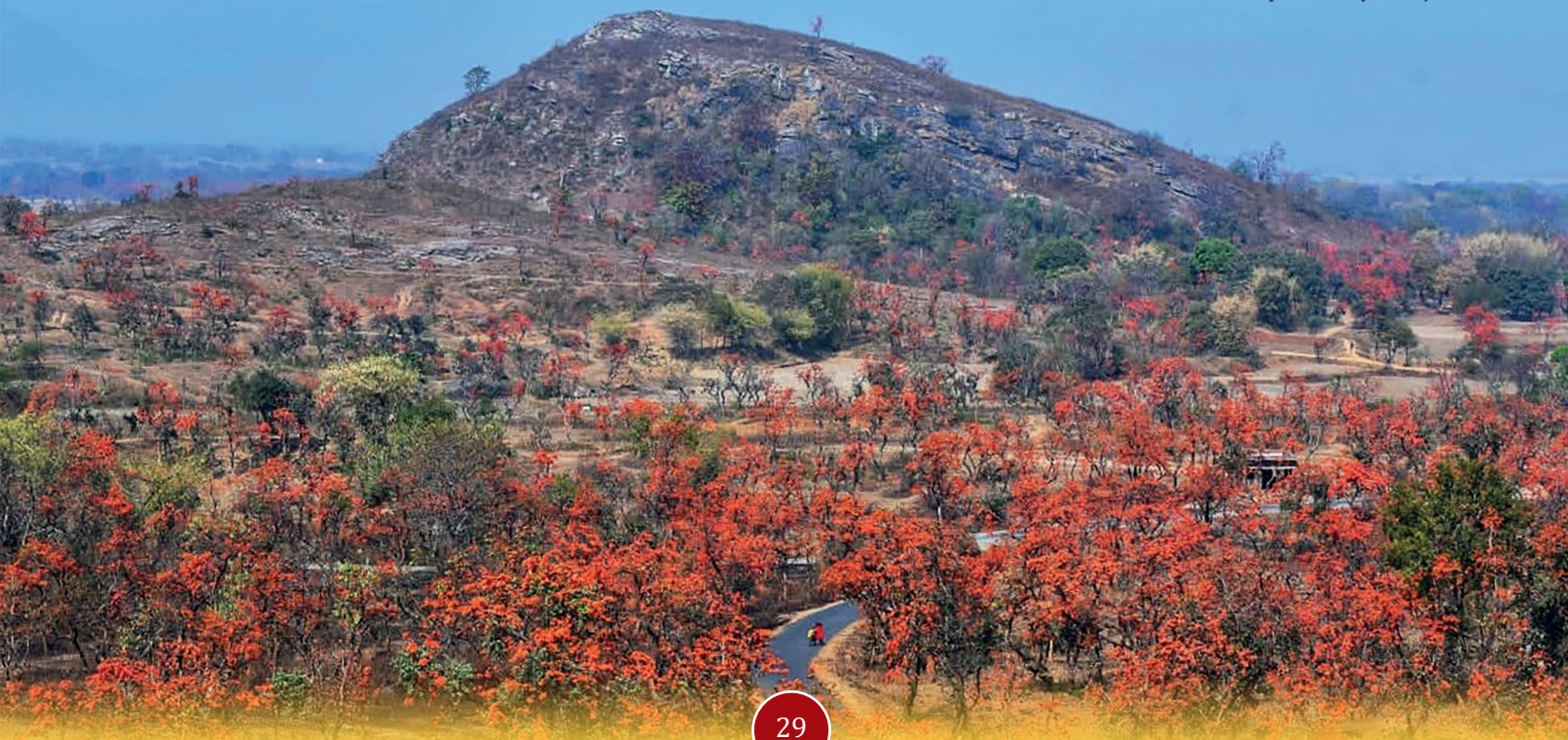

महाविद्यालय एक परिचय

झारखंड का पंच परगना क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित एक अनूठा प्रांत है। जिसकी अपनी भाषा,साहित्य कला एवं संस्कृति है। यह भाग अपने मनमोहक एवं मनोरम दृश्य ,कल- कल करती नदियां, झील-झरने और पहाड़ों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी संस्कृति पूरे झारखंड प्रदेश का प्रतिनिधित्व करती है।अपनी असीम संभावनाओं के बावजूद झारखंड का यह क्षेत्र अति पिछड़ा है। यही कारण है कि यहां गरीबी,बेकारी,जादू-टोना, और सामाजिक विघटन जैसी कई समस्याएं हैं। इन तमाम समस्याओं का मुख्य कारण है शिक्षा की कमी, क्योंकि शिक्षा अज्ञानता रूपी मरुस्थल में भी ज्ञान की गंगा बहाती है। शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है। यह अंधेरे से उजाले की ओर ले जाती है। इसी अंधकार को दूर करने के लिए यहां के कुछ महान विभूतियों ने इस क्षेत्र में एक कॉलेज की स्थापना की जिसका नाम पांच परगना किसान महाविद्यालय,बुंडू है।

यह महाविद्यालय रांची शहर के बुंडू प्रखंड में स्थित है। इसकी स्थापना आज से 50 वर्ष पूर्व हुई थी। यह महाविद्यालय इस क्षेत्र का एकमात्र शासकीय महाविद्यालय है। इसकी स्थापना के पूर्व इस क्षेत्र के प्रगतिशील जिज्ञासु छात्रों को अपनी मैट्रिक की पढ़ाई के उपरांत आगे की शिक्षा लेने के लिए महानगरों में स्थित विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालयों में प्रवेश लेना होता था। इसके लिए छात्रों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में इस पंच परगना क्षेत्र के विशिष्ट महानुभवों ने यहां महाविद्यालय की स्थापना करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा मंत्री से विचार विमर्श किया। उस समय बुंडू बिहार राज्य के अंतर्गत आता था और हमारे शिक्षा मंत्री श्री करमचंद भगत थे। माननीय करमचंद भगत जी से बुंडू के विशिष्ट लोगों ने विचार विमर्श किया और यहां की कठिनाइयों से उन्हें अवगत कराया कि यहां उच्च शिक्षा के लिए बच्चों को महानगरों में स्थित महाविद्यालय का सहारा लेना पड़ता है।जिससे उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। माननीय करमचंद भगत जी ने इस समस्या को ध्यान में रखा और और बुंडू पंच परगना क्षेत्र में महाविद्यालय की स्थापना के लिए अपनी सहमति दी साथ ही अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए अपना सहयोग दिया। इस प्रकार उनके द्वारा की गई बातचीत से इस महाविद्यालय की परिकल्पना की शुरुआत हुई।

सर्वप्रथम स्वर्गीय काली प्रसाद गुप्ता जो इस महाविद्यालय के निर्माण में कोषाध्यक्ष थे उन्होंने इस महाविद्यालय की स्थापना में अपना भारी योगदान दिया। साथ ही अपने घनिष्ठ साथियों तथा बुंडू के प्रतिष्ठित महानुभावों को इस कॉलेज की स्थापना में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करके इस पंच परगना क्षेत्र में महाविद्यालय की स्थापना की नींव डाली।

उनके प्रथम सहयोगी श्री विनय गुप्ता जी ने इस निर्माण कार्य में सेक्रेटरी का पदभार संभाला और अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए इस कार्य में अपनी सहमति जताई। श्री विनय गुप्ता जी इस पंच परगना क्षेत्र के प्रतिष्ठित लाह व्यापारी थे।

उनके द्वितीय सहयोगी श्री अमरेंद्र नाथ शाहदेव जी थे जो तमाड़ के राजा थे। उन्होंने अपना कीमती समय निकालकर महाविद्यालय की स्थापना में अत्यधिक धनराशि देकर महाविद्यालय के कार्य को आगे बढ़ाया। तदोपरांत माननीय पन्नालाल जयसवाल जी ने महाविद्यालय के निर्माण कार्य में अध्यक्ष की भूमिका निभाई और सर्वप्रथम महाविद्यालय के निर्माण कार्य के लिए जमीन की खरीद करवा कर कार्य को आगे बढ़ाया।

स्वर्गीय काली प्रसाद गुप्ता जी के चतुर्थ सहयोगी उनके घनिष्ठ मित्र श्री प्रेम शंकर चौधरी जी हैं जिन्होंने बिल्डिंग कमेटी के अध्यक्ष के पद पर रहकर महाविद्यालय के निर्माण कार्य में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इन महानुभावों के अथक प्रयास से सन 1972 को पंच परगना महाविद्यालय की स्थापना हुई। इस महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य माननीय विनोद खेल को बनाया गया जो इस क्षेत्र के अत्यधिक शिक्षित व्यक्तियों में से एक थे । साथ ही वे सोने चांदी के प्रसिद्ध व्यापारी भी थे। उन्होंने 1 वर्ष तक प्राचार्य के पद भार को संभाला क्योंकि वे अपने कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहते थे। तत्पश्चात माननीय एस.बी. प्रमाणिक जी ने प्राचार्य के पद भार को संभाला और महाविद्यालय के शिक्षण कार्य को अपने अथक प्रयासों से प्रगति की ओर अग्रसर किया।

- संगीता जायसवाल

सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग

टैगोर के जीवन देवता

विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर एक दार्शनिक लेखक हैं। 'गीतांजलि' उनकी अनमोल रचना है। 'गीतांजलि' में उनके गीतों का संकलन है। उनके गीतों में प्रकृति, आकाश, नदी, मौसम, त्योहारों आदि का चित्रण है। ईश्वर को उनके गीत समर्पित हैं। गीतांजलि में वे कहते हैं: "आज की पारसमनि को हृदय से छूकर इस जीवन को ध्यान करो दहेज दान देकर।"

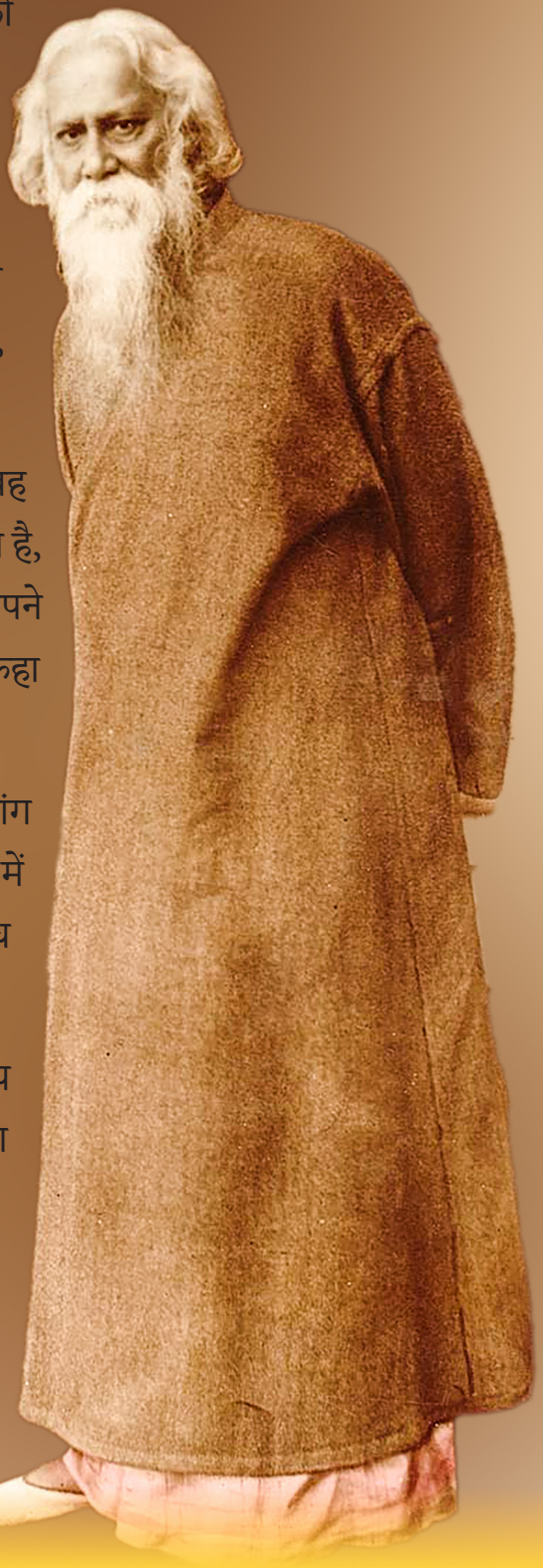

ईश्वर विश्व का निर्माता और केंद्र बिंदु है। मानव की धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति ईश्वर में विश्वास से होती है। ईश्वर पूर्ण व्यक्तित्व है। ईश्वर को "जीवन देवता" कहते हैं। गीतांजलि में उन्होंने जीवन प्रदान करने वाले ईश्वर के बारे में कहा है: "आनंद लोक में, मंगला लोक में विराजो सत्य, सुंदर:।"

उन्होंने धर्म के जिस रूप को अंतिम रूप में प्रतिपादित किया है, वह "उनका मानव धर्म" है। यह शरीर मौसम के थपेड़ों को झेलती हुई नौका है, जो बार-बार जन्म लेती है और आत्मा इससे मुक्ति चाहती है। वह अपने घर वापस लौटना चाहती है। उनके प्रसिद्ध गीत "एकला चलो रे" में कहा गया है कि यदि तुम्हारे बुलाने पर कोई साथ न दे, तो अकेले चलो।

जब ढोल की थाप गूंजती है, तो उनके प्रसिद्ध नृत्य गीत "घीतांग-घीतांग बोले" और "एई मादोलेर तान तोले" याद आता है। टैगोर की रचनाओं में मानवीय रूप का स्पर्श मिलता है। टैगोर का कवि हृदय मानवीय संबंध स्थापित करता है।

ब्रह्म वेदांत के ब्रह्म और ईश्वरवाद को टैगोर ने ईश्वर दोनों में समन्वय स्थापित किया है। "जीवन देवता" को टैगोर ने प्रेम का अधिष्ठाता माना है। प्रेम सभी प्रकार की भिन्नताओं को समाप्त करती है। टैगोर के "जीवन देवता" के स्वरूप का चित्र मानव के स्वरूप पर विचार करने से स्पष्ट होता है। मानव को देवता का अंश माना गया है।

- जयंती दत्ता

सहायक प्राध्यापिका, पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, विभाग।

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह सामाजिक सेवा से सम्बन्धित राष्ट्रीय स्तर पर खेल मंत्रालय द्वारा संचालित एक कार्यक्रम है। जिसमें विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तथा उसकी इकाइयों में अध्ययनरत युवाशक्ति में मानव सेवा स्वच्छता, पर्यावरण सुरक्षा, सहयोग आदि मानवीय गुणों को विकसित करने हेतु विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हमारे महाविद्यालय में भी राष्ट्रीय सेवायोजना की तीन इकाइयाँ प्राचार्य मुकुल कुमार की अध्यक्षता में तीन कार्यक्रम पदाधिकारियों डॉ. आराधना तिवारी डॉ. तारकेष्वर कुमार एवं सुश्री संगीता जयसवाल के सहयोग से संचालित हो रही हैं। जिसमे समय समय पर प्रतियोगिताएँ सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य गतिविधियों के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों में आत्मनिर्भरता नेतृत्व क्षमता एवं मानव सेवा पर्यावरण संरक्षण आदि सद्‌गुणों का विकास करने का प्रयास किया जा रहा है। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई ने सम्मिलित रूप से पर्यावरण दिवस एवं वन महोत्सव कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए महाविद्यालय परिसर में 200 वृक्ष लगाने का लक्ष्य पूरा किया है। वहीं मतदाता जागरूकता, सड़क सुरक्षा, नषा मुक्ति आदि कार्यक्रम आयोजित करते हुए रैली निकाली जिसमें जनसामान्य को उनके अधिकारों और कर्तत्यों के लिये जागरूक किया गया इसी प्रकार समय पर महापुरूषों की जयंती पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से छात्रों में राष्ट्र चुतना एवं उत्साह का संचार किया गया महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा दो गाँवों – बारूहातु एवं जाडेया को उनके सामाजिक शैक्षिक एवं आर्धिक उन्नयन हेतु गोद लिया गया है जिसमें समय समय पर हमारे स्वयंसेवक वहाँ जा कर सेवा कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय द्व ारा गोद लिये जाने से ग्रामवासियों में अत्यंत उत्साह है वे खुलकर हमारे स्वयंसेवकों से अपनी समस्यओं पर बातचीत करते हैं तथा समाधान प्राप्त करते हैं। इन सभी क्रियाविधियों से हमारे महाविद्यालय के छात्र भी बहुत लाभान्वित होते हैं।

SADAK SURAKSHA SAPTAH

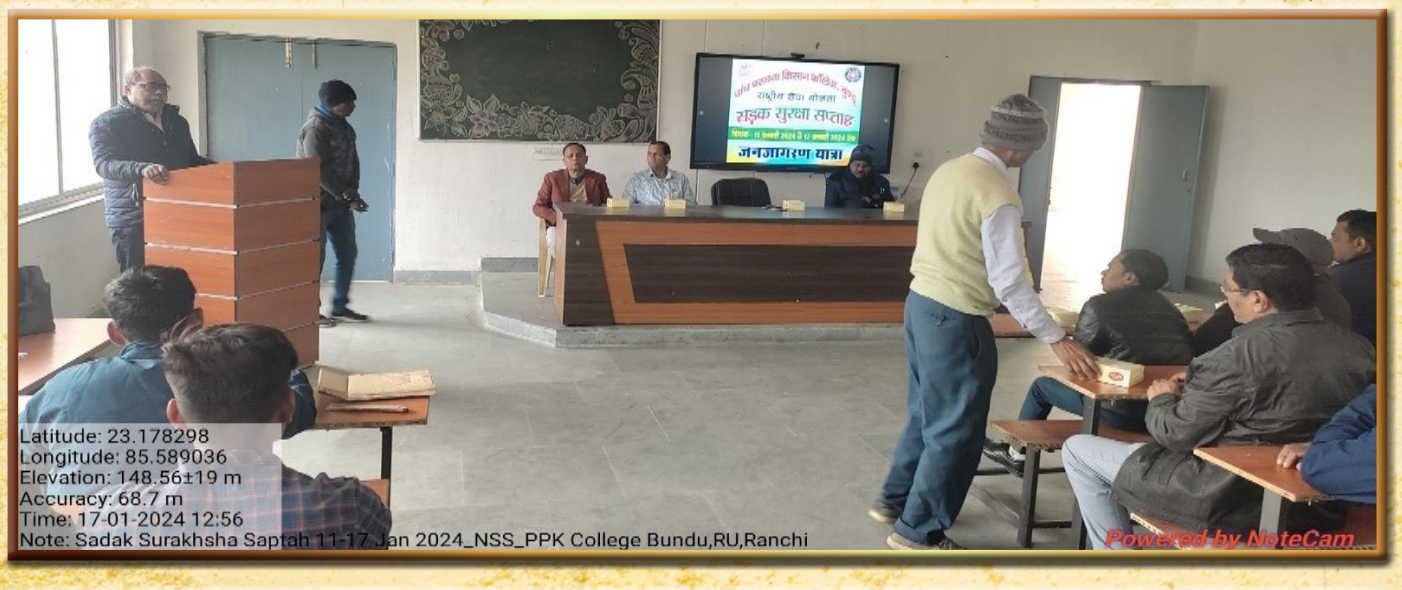

INTERNATIONAL YOGA DAY

VAN MAHOTSAV

Latitude: 23.178346
Longitude: 85.588988
Elevation: 352.76±7 m

Latitude: 23.178186
Longitude: 85.58907
Elevation: 352.76±13 m

Gaon God Liya

भूगोल के जनक इरेटोस्थनीज का भूगोल में योगदान

भूगोल को एक अलग अध्ययन शास्त्र के रूप में स्थापित करने का श्रेय प्रसिद्ध यूनानी विद्वान इरेटोस्थनीज को जाता है। इरेटोस्थनीज ने तत्कालीन ज्ञात पृथ्वी पर पांच कटिबंधों का विभाजन किया था— पहला उष्णकटिबंध, दूसरा शीतोष्णकटिबंध, और तीसरा शीतकटिबंध।

नील नदी के पश्चिम में निवास करने वाले नबियन्स का उल्लेख करने वाला प्रथम विद्वान इरेटोस्थनीज ही था। इन्होंने "ज्योग्राफिया" नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें गणितीय भूगोल का वर्णन किया गया है। इसके अलावा, उनके योगदान को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया जा सकता है:

1. इरेटोस्थनीज का पृथ्वी संबंधित विचार
2. इरेटोस्थनीज द्वारा पृथ्वी की परिधि मापन
3. इरेटोस्थनीज द्वारा अक्षांश और देशांतरों का निर्धारण
4. इरेटोस्थनीज का विश्व मानचित्र
5. इरेटोस्थनीज के अनुसार पृथ्वी के जलवायु क्षेत्र

1. **इरेटोस्थनीज का पृथ्वी संबंधित विचार:** इरेटोस्थनीज का विचार था कि पृथ्वी की आकृति गोलाकार है। यह अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक बार घूर्णन करती है, जिसे हम घूर्णन कहते हैं। इसी गति से पृथ्वी पर दिन और रात होते हैं। उनका यह भी मानना था कि पृथ्वी के चारों ओर अनंत ब्रह्मांड है, जिसमें वह स्वतंत्र रूप से घूमती है। सूर्य और चंद्रमा भी गतिशील आकाशीय पिंड हैं जो ब्रह्मांड में घूम रहे हैं। इनकी गतिशील क्रियाओं से ही पृथ्वी पर मौसमी परिवर्तन होते हैं। उन्होंने सूर्य की स्थिति के अनुसार पृथ्वी पर अक्षांश और देशांतरों को निर्धारित करने का प्रयास किया। माना जाता है कि उन्होंने अपने पूर्ववर्ती भूगोलवेत्ता पायथस के ज्ञान का लाभ उठाया। पायथस का मानना था कि गर्मियों में सूर्य के मध्यांतर समय पर जिस स्थान पर कोण बनता है, वही उस स्थान का अक्षांश है। यह विचार आज भी सही है।

2. **इरेटोस्थनीज द्वारा पृथ्वी की परिधि मापन:** इरेटोस्थनीज ने पृथ्वी की आकृति गोलाकार मानते हुए दो भिन्न स्थानों

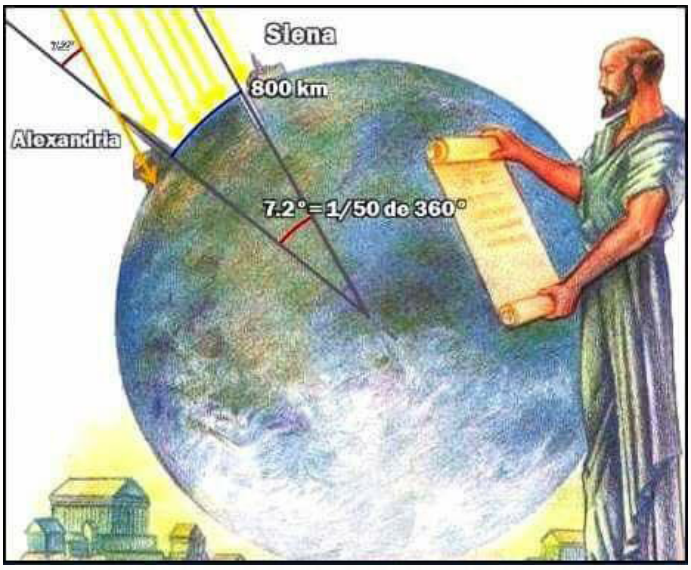

पर सूर्य के कोण मापन के माध्यम से पृथ्वी की परिधि का मापन किया। ये दो स्थान सीन (वर्तमान असवान) और सिकंदरिया (अलेक्ज़ेंड्रिया) थे। इसके लिए उन्होंने तीन परिकल्पनाएं कीं:

- सीन और सिकंदरिया के बीच की क्षैतिज दूरी 5000 स्टेडिया है।
- सीन नगर कर्क रेखा पर स्थित है, इसलिए जून में सूर्य की किरणें इस नगर पर लंबवत पड़ती हैं।
- सीन और सिकंदरिया एक ही देशांतर रेखा पर स्थित हैं।

उन्होंने समय सीन में एक कुएं को इस कार्य के लिए चुना।

3. **इरेटोस्थनीज द्वारा अक्षांश और देशांतरों का निर्धारण:** इरेटोस्थनीज ने उस समय के प्रमुख नगरों के अक्षांश और देशांतरों का भी निर्धारण किया। उन्होंने भूमध्य रेखा के उत्तर में चार प्रमुख अक्षांश बताए:

पहला अक्षांश मेरो का था, जो नील नदी के मेरो नगर से होता हुआ भारत के दक्षिणी भाग से गुजरता है। भारत की समुचित जानकारी न होने के कारण उन्होंने सोचा कि इस देश का विस्तार इसी अक्षांश तक है।

दूसरा अक्षांश सिकंदरिया का था, जो दजला-फरात घाटियों में होता हुआ भारत के उत्तरी भाग से गुजरता है।

तीसरा अक्षांश रोड्स का था, जो पश्चिम में जिब्राल्टर से प्रारंभ होकर पूर्व में हिमालय तक जाता है।

चौथा अक्षांश उत्तरी ध्रुव पर था, जिसे थूले अक्षांश का नाम दिया। इसे वर्तमान में आर्कटिक वृत्त कहते हैं।

ये सभी मानक यंत्र की सहायता से मापे गए थे। आज के अनुसार ये काफी अशुद्ध हैं, परंतु उस समय यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

इरेटोस्थनीज ने देशांतरों का भी निर्धारण किया। उन्होंने सिकंदरिया से गुजरात तक मध्य देशांतर बताया। इस देशांतर को उन्होंने सीन, मेरो, रोड्स, ल्रोआस, बिर्जेन्टाइन, और बोरोस्थनीज नगरों से गुजरता हुआ दिखाया। दूसरा देशांतर कार्थेज, रोम, मसीन, जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। तीसरा देशांतर पूर्व में दजला-फरात घाटी से गुजरता है। चौथा देशांतर फारस से, पांचवां देशांतर भारत की पश्चिमी सीमा से, और छठा देशांतर भारत की पूर्वी सीमा तक खींचा गया।

4. **इरेटोस्थनीज का विश्व मानचित्र:** इरेटोस्थनीज ने 220 ई. पू. में ज्ञात विश्व का मानचित्र बनाया। इस पर सिकंदर और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा एकत्रित भौगोलिक ज्ञान को दर्शाया गया था। यह मानचित्र अक्षांश और देशांतर रेखाओं के जाल पर आधारित था। इसमें 7 अक्षांश और 7 देशांतर रेखाएं निरूपित की गईं। उनका मानना था कि पृथ्वी पर मानव के रहने योग्य भूमि का विस्तार पश्चिम-पूर्व दिशा में अधिक है और उत्तर-दक्षिण दिशा में कम है। उनके अनुसार, पश्चिम में अटलांटिक महासागर से पूर्व में पूर्वी सागर तक भूमि 78000 स्टेडिया लंबी है, और उत्तर में थूले से दक्षिण में सीनामन तक इसका विस्तार 38000 स्टेडिया है। उन्हें यूरोपीय क्षेत्रों का समुचित ज्ञान था और भूमध्य सागरीय देशों की यात्रा स्वयं की थी। वे स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस, इटली, और यूनान के बारे में अच्छी तरह से जानते थे। हालांकि, उत्तरी जर्मनी, ब्रिटेन, और काला सागर के उत्तर की भूमि के बारे में कम जानकारी थी। एशिया का मानचित्रण उन्होंने सिकंदर के द्वारा दिए गए वर्णन के अनुसार किया। उन्होंने फिलिस्तीन क्षेत्र के टारस पर्वत को सही ढंग से दिखाया और बताया कि ये पर्वत आर्मीनिया, कुर्दिस्तान, एल्बुर्ज, और हिमाचल पर्वतों से जुड़े हुए हैं। उन्होंने हिमालय को इमोस पर्वत नाम दिया और बताया कि ये भारत के उत्तर में पश्चिम-पूर्व दिशा में फैले हुए हैं। उन्होंने गंगा नदी के प्रवाह मार्ग को पश्चिम-पूर्व दिशा में बताया और इसके मुहाने को पूर्वी सागर में दर्शाया।

5. **इरेटोस्थनीज के अनुसार पृथ्वी के जलवायु क्षेत्र:** इरेटोस्थनीज का यह योगदान महान उपलब्धि था। उन्होंने जलवायु क्षेत्रों का निर्धारण अक्षांशों के आधार पर किया। पृथ्वी पर मानव के रहने योग्य स्थानों को मुख्यतः पांच जलवायु क्षेत्रों में विभक्त किया। पृथ्वी के बीचों-बीच के क्षेत्र को उष्णकटिबंध कहा, जहाँ साल भर गर्मी रहती है। यह क्षेत्र भूमध्य रेखा से 24° दक्षिण में फैला है, जो आज भी सही है। इसके उत्तर और दक्षिण में समशीतोष्णकटिबंध है, जहाँ न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी। इसके अतिरिक्त, उत्तर और दक्षिण में शीतकटिबंध है, जहाँ अत्यधिक सर्दी पड़ती है।

- बिनोद कांत तिवारी

सहायक प्राध्यापक, अध्यक्ष, भूगोल विभाग।

आध्यात्मिकता और पर्यटक का केंद्र पांच परगना

आध्यात्मिक और पर्यटन दो अलग-अलग क्षेत्र हैं, लेकिन मानव के जीवन के विकास में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मानवीय जीवन के उदात्त भाव—प्रेम, दया, विवेक, बुद्धि, बल आदि और अनुदात्त भाव—लोभ, क्रोध, काम आदि के बीच संतुलित जीवन जीने की उर्वरा भूमि हमें आध्यात्मिक और पर्यटन के माध्यम से मिलती है। इसी सन्दर्भ में हम झारखंड के पांच-परगना क्षेत्र के पर्यटन और धार्मिक स्थलों को मानव के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व के प्रश्नों पर प्रकाश डालने की कोशिश कर रहे हैं। पांच-परगना के धार्मिक और पर्यटन स्थल बहुत हैं, जैसे—दिवडी मंदिर, हाराडीह मंदिर, बामलाडीह का हुकूचरा, महामायी मंदिर, बुंडू बारूहतू का झरना, वारेंदा का सती घाट धाम, सोनाहातु का मारांगबुरु आदि। इन स्थलों को पर्यटन उद्योग के विकास के संदर्भ में आध्यात्मिक पर्यटन के महत्त्व पर विचार किया गया है।

आध्यात्मिक पर्यटन मानव-मन, शरीर और आत्मा के बीच संतुलन और समरसता को विकसित करने में एक सशक्त माध्यम होता है, जो मानव को आत्म-अन्वेषण, आंतरिक शांति, सत्य की खोज और सांस्कृतिक उन्नति का अनुभव करने में मदद करता है। इसके साथ ही, आंतरिक स्वरूप को पहचानने, चिंतन और उद्धार करने, आत्मा की उन्नति के लिए प्रेरणादायिका बनती है। आध्यात्मिक पर्यटन के माध्यम से हम जीवन के आदर्श, मूल्यों और उद्देश्यों को समझते हैं, अतः स्पष्ट है कि आध्यात्मिक पर्यटन मानव जीवन को गहराई और मानसिक आध्यात्मिकता की ओर ले जाने का एक माध्यम है। आज विश्व की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। भारत जैसे विकासशील देश में इस महत्वपूर्ण क्षेत्र का विकास कम हुआ है, विशेषकर झारखंड जैसे राज्य में जहाँ प्राकृतिक पर्यटन क्षेत्र से भरा हुआ होने के बावजूद पर्यटन उद्योग देश के औसत पर्यटन विकास दर से काफी कम है। पर्यटन उद्योग के विकास से देश और राज्य के लाभों को रेखांकित करते हुए, शोधार्थी और पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन विभाग, हिमाचल प्रदेश, केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के नवनीत कौशल लिखते हैं, "विश्व अर्थव्यवस्था में पर्यटन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर रहा है। भारत जैसे विकासशील देश में इस महत्वपूर्ण क्षेत्र का व्यवस्थित ढंग से दोहन नहीं हुआ, तथापि पर्यटन उद्योग देश का विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। पर्यटन क्षेत्र में एक मिलियन निवेश से 47.5 नए रोजगार के अवसर सृजित होते हैं, जो देश के कृषि जैसे पारंपरिक और महत्वपूर्ण क्षेत्र से भी अधिक है, जिसमें इतने ही निवेश से केवल 44.7 नए रोजगार के अवसर सृजित होते हैं। विश्व के देशों में यह विश्वास हो चला है कि नई सहस्त्राब्दि में विकास के सभी क्षेत्रों में पर्यटन क्षेत्र अग्रणी भूमिका निभायेगा।"

झारखंड के पांच-परगना में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलने से सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों को संरक्षण मिलेगा, वहीं विकास के सभी स्तरों पर राज्य की प्रगति को भी सुनिश्चित किया जा सकेगा। इस विषय पर विचार करते हुए स्थानीय निवासियों का कहना है कि स्थानीय युवकों को रोजगार मिलेगा और पर्यटन इकाइयों की स्थापना में निजी निवेश के लिए भी आकर्षित होंगे। पांच-परगना के प्रमुख आध्यात्मिक, प्राकृतिक, राजनीतिक और धार्मिक पर्यटन स्थलों की विवेचना निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है:

माँ दिवडी मंदिर: यह झारखंड की राजधानी रांची जिले के तमाड़ प्रखंड के दिवडी ग्राम में स्थित है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग NH-33 पर रांची से 65 किलोमीटर की दूरी पर है। मंदिर के बारे में किंवदंती है कि यह लगभग 2700 वर्ष प्राचीन है और सम्राट अशोक के कलिंग विजय के समकालीन माना जाता है।

कुछ लोगों का मानना है कि मंदिर को 700 वर्ष पहले खरसावाँ के राजा के प्रधान पांडा के आग्रह पर पुनः संरक्षित किया गया था। स्थानीय भक्तों का मानना है कि माँ दिवडी के दर्शन मात्र से समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

हाराडीह मंदिर: यह मंदिर झारखंड की राजधानी रांची जिले के तमाड़ और बुंडू प्रखंड के सीमावर्ती हाराडीह और बुढाडीह ग्राम में स्थित है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग NH-33 के बुंडू से सोनाहातु रोड पर स्थित है। मंदिर में कई शिव लिंग स्थापित हैं और यहाँ के भक्तों का मानना है कि बाबा भोले के दर्शन से मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

हुकुचरा और महामाही धाम बामलाडीह: ये स्थल झारखंड की राजधानी रांची जिले के तमाड़ के बामलाडीह ग्राम में स्थित हैं। हुकुचरा धाम में शिव लिंग स्थापित है और यहाँ की किंवदंती है कि यदि कोई हुका या गांजा बाबा को दिए बिना सेवन करता है, तो बाबा उसे छिपा देते हैं। महामाही धाम माँ दुर्गा के रूप में पूजित है और इसे माँ दिवडी का बहन माना जाता है।

इसके अतिरिक्त, सूर्य मंदिर बुंडू, बड़का तालाब बुंडू, कांची नदी का गर्म जल कुण्ड, बारूहतू बुंडू का झरना, सोनाहातु का मारांगबुरु, चिरगालडीह सोनाहातु का गर्म और स्वच्छ जल कुण्ड, वारेंदा का सती-घाट, दुलमी का पत्थर निर्मित नागिन-धामना, राहे का शम्भु पहाड़ जैसे कई अन्य पर्यटन स्थल भी हैं।

इस प्रकार, पांच-परगना क्षेत्र में पर्यटन के कई स्थल हैं जो प्राकृतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। इन स्थलों की दशा और दिशा में सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है, जैसे:

- सामुदायिक पर्यटन को प्रोत्साहित करना।
- वैश्विक पहचान के लिए प्रचार और प्रसार बढ़ाना।
- यातायात और मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करना।

- डॉ. विद्याधर महतो
सहायक प्राध्यापक, हिंदी वभाग

अभिनंदन

जीवन मोह माया का बंधन है।
इसमें आप सबका का अभिनंदन है।
कहीं दुख तो कहीं सुख का सागर,
कहीं धूप तो कहीं मिट्टी का चंदन है।
आपका इस जीवन मे अभिनंदन है।

जी लो अपने तरीके से साथ रहकर,
किसी के बन जाओ, किसी को बना लो,
यह खांडव बन का चंदन है।
जिसमें हार्दिक आपका अभिनंदन है।
आए हैं तो सबको यहाँ से जाना है
कुछ खोए कुछ खोकर यहाँ पाना है।

उस परमात्मा को बारम्बार वंदन है।
आपका इस जीवन मे अभिनंदन है।
कहीं आदि तो कहीं पर अंत है,
कहीं पतझड़ कहीं पर बसंत हैं,
'आदी' अनादि अनंत को वंदन है।
मन मुरारी राघव का अभिनंदन है।

- जगदीश प्रसाद प्रामाणिक
प्रयोगशाला प्रदर्शक, भौतिकी विभाग

Global Warming

Global warming refers to the gradual rise in the overall temperature of the atmosphere of the Earth. There are various activities taking place which have been increasing the temperature gradually. Global warming is melting our ice glaciers rapidly. This is extremely harmful to the earth as well as humans. It is quite challenging to control global warming; however, it is not unmanageable. The first step in solving any problem is identifying the cause of the problem.

Therefore, we need to first understand the causes of global warming that will help us proceed further in solving it. It is not happening because of a single cause but several causes. These causes are both natural as well as manmade. The scenarios referred to above depend mainly on future concentrations of certain trace gases, called greenhouse gases, that have been injected into the lower atmosphere in increasing amounts through the burning of fossil fuels for industry, transportation, and residential uses. Modern global warming is the result of an increase in magnitude of the so-called greenhouse effect, a warming of Earth's surface and lower atmosphere caused by the presence of water vapour, carbon dioxide, methane, nitrous oxides, and other greenhouse gases. Of all these gases, carbon dioxide is the most important, both for its role in the greenhouse effect and for its role in the human economy. It has been estimated that, at the beginning of the industrial age in the mid-18th century, carbon dioxide concentrations in the atmosphere were roughly 280 parts per million (ppm). By the end of 2022 they had risen to 419 ppm, and, if fossil fuels continue to be burned at current rates, they are projected to reach 550 ppm by the mid-21st century—essentially, a doubling of carbon dioxide concentrations in 300 years. Further, volcanic eruptions are also responsible for global warming. That is to say that these eruptions release tons of carbon dioxide which contributes to global warming. Similarly, methane is also one big issue responsible for global warming.

After that, the excessive use of automobiles and fossil fuels results in increased levels of carbon dioxide. In addition, activities like mining and cattle rearing are very harmful to the environment. One of the most common issues that are taking place rapidly is deforestation.

So, when one of the biggest sources of absorption of carbon dioxide will only disappear, there will be nothing left to regulate the gas. Thus, it will result in global warming. Steps must be taken immediately to stop global warming and make the earth better again.

As stated earlier, it might be challenging but it is not entirely impossible. Global warming can be stopped when combined efforts are put in. For that, individuals and governments, both have to take steps towards achieving it. We must begin with the reduction of greenhouse gas. From now, we need to start plantation which may help to prevent global warming.

- Dr. Jinia Nandy
Geology Department

Interesting Facts about Our Planet Earth

1. Earth is the densest planet of solar system. Average density of Earth is 5.51 g/cm3.
2. Earth is not actually round. The planet bulges around the equator. Average equatorial radius is 6378.1 km and average polar radius is 6356.7 km.
3. Age of Earth is approximately 4.54 billion years.
4. **Earth's Oldest Minerals**: Zircons found in Western Australia contain some of the oldest minerals on Earth, dating back approximately *4.4 billion years.*
5. The Himalayan range began to form between 40 and 50 million years ago, when two large landmasses, India and Eurasia, driven by plate movement, collided.
6. The deepest natural point on Earth is the Challenger Deep in the **Mariana Trench**, reaching over 36,000 feet (10972 meter)
7. *The average depth of Ocean is 3682 meter.*
8. Based on rheological properties, Earth is stratified into five main layers. These layers include the inner core (inner most layer), outer core, Mesosphere, Asthenosphere and Lithosphere (outer most layer). Outer core is the only layer which is in liquid state.
9. Earth's core is as hot as the sun's surface (ranges from 4400 oC - 6000 oC)
10. Earth's magnetic poles have reversed183 times in the last 83 million years, and at least several hundred times in the past 160 million years.
11. Today, the Earth's axis is tilted 23.5 degrees from the plane of its orbit around the sun. But this tilt changes. During a cycle that averages about 40,000 years, the tilt of the axis varies between 22.1 and 24.5 degrees.
12. Lonar Lake, also known as Lonar crater, is a notified National Geo-heritage Monument, saline, soda lake, located at Lonar, 79 km from Buldhana city in Buldhana district, Maharashtra, India. Lonar Lake is an astrobleme created by a meteorite impact about 76,000 ± 47,000 years ago.

- Kalyan Roy
Assistant Professor, Department of Geology

Coal

Coal is a brown to black coloured, solid, combustible, sedimentary rock, primarily composed of vegetal matter rich in carbon. It is formed by the partial decomposition of vegetable matter without free access of air and under the influence of moisture and often increased pressure and temperature. It is widely used as a natural fuel. Low rank coal, Sulphur increases about 4% High rank coal, Sulphur decreases

Coal is composed primarily of carbon, hydrogen, Nitrogen, Sulphur and oxygen. Exact composition of coal varies, depending on its age and origin.

Classification of Coal (based on Carbon content)

Age, Carbon content, heating value/rank and depth increases

Lignite	Sub – Bituminous	Bituminous	Anthracite
Low rank coal, Sulphur increases about 4%		High rank coal, Sulphur decreases	

Lignite/Brown Coal

- Brown in colour
- Carbon content varies between 65-70%
- Contains more Sulphur and mercury other than coal
- It has low carbon content, low heating value, high moisture and high ash content.
- Used as an ornamental stone
- Occur in tertiary sediments of Tamil Nadu, Puducherry, Kerala, Gujrat, Rajasthan and Jammu & Kashmir.

Sub – Bituminous/ Black lignite

- Dark brown to grey black in colour
- carbon content varies between 70-76 %
- used in steam electric power generation
- Found in the regions of Rajasthan, Tamil Nadu and Jammu & Kashmir.

Bituminous

- Usually black but sometimes dark brown in colour
- It has high carbon and low moisture content.
- Carbon content varies between 69-86%
- Used in steel and cement production as well as in electricity generation and coke production.
- Found in Jharkhand, Odisha, West Bengal, Chattisgarh and Madhya Pradesh.

Anthracite

- Glossy black coloured coal
- High rank coal with high carbon and very low moisture content
- It has high carbon content (>86%)
- Used primarily for residential and commercial space heating
- Found in smaller quantity in the regions of Jammu & Kashmir.

Dr. Tarit Sanga
Assistant Prof. (Need Based), Department of Geology

Mineral resource of India : Emphasis on precious, semi precious and strategic minerals

Natural resources are materials from Earth that are used to support life and meet people's needs. Any natural substance that humans use can be considered a natural resource. Minerals, oil, coal, Natural gas, precious stones and sand are natural resources. Other natural resources are air, water, sunlight and soil. Mineral resources are prerequisite for providing the necessary base for industrial development in a country. Fortunately, India is endowed with a rich variety of mineral resources due to its varied geological formations. About 6 varieties of economically important minerals are found in India out of them 10 are metallic minerals, 46 non metallic minerals, 3 atomic minerals, 4 fuel minerals and 23 minor minerals (including building and other materials).

On the basis of economic importance minerals are classified into 10 major categories as below

1. Metallic Minerals (Ferrous Group)
2. Metallic Minerals (Non-Ferrous Group)
3. Precious & semi-precious Minerals
4. Strategic Minerals
5. Fertilizer Minerals
6. Refractory Minerals
7. Ceramic and Glass Minerals
8. Other Industrial Minerals
9. Minor Minerals
10. Mineral fuels (Coal, Oil & Gas).

Metallic minerals are the sources of metals and provide a strong base for the development of metallurgical industry. They produce metal and exhibit a metallic shine or luster in their appearance. Metallic minerals can be further divided into ferrous and non- ferrous metallic minerals.The former include Chromite, Iron ore (Hematite, Magnetite) Manganese ore. Similarly the later group contains Antimony, Bauxite, Copper, Lead and Zinc and Platinum Group of Metals (PGM).

There are only four precious minerals viz diamond, sapphire, ruby and emeralds. They are distinguished by their quality, their rarity and the beauty of their colors. All other minerals are therefore called semi perious minerals like copper, nickel, zinc, garnet, corundum, gold, silver etc. Another group known as strategic minerals are those minerals which are essential for the socio-economic development of the country as well as enhancing its defensive capabilities. Usually such minerals are imported from those countries where they are abundant and when domestic production is unable to keep up with the demands. In this article an attempt has been made to account for precious ,semi precious minerals along with strategic minerals as natural resource occurring in India

Description of Precious, Semi Precious and Strategic minerals of India.

- **Precious and Semi Precious-**

  Corundum- Corundum is a crystalline form of aluminium oxide (Al_2O_3) with traces of iron, titanium and chromite. It is a rock-forming minerls, Transparent specimens are used as gems, called ruby. Colored ones are called sapphire.

Diamond- The ancient Indians were the first, in the world, to take notice of the mineral diamond for its beauty and hardness. The primary sources of diamonds are kimberlite, lamproite and other kimberlite clan rock. India is known for its diamond cutting and polishing business especially for small sized diamonds. Most of the the world's business on diamond comes to India, particularly to Surat in Gujarat.

Presently, diamond fields of India are grouped into four regions: The South Indian tract of Andhra Pradesh, comprising part of Anantapur, Cuddapah, Guntur, Krishna, Mahaboobnagar and Kurnool districts. The Central Indian tract of Madhya Pradesh, comprising Panna belt. The Behradin-Kodawali area in Raipur district and Tokapal, Dugapal areas in Bastar district of Chhattisgarh and The Eastern Indian tract in Odisha, lying between Mahanadi and Godavari valleys.

i. **Garnet-** Garnet is a collective name for a group of minerals. It is hard with sharp angular chisel-edged fracture, containing small amounts of free silica and exhibits high resistance to physical and chemical attacks. It is used both as semi-precious stone and also as an abrasive. In India garnet deposits occur in Andhra Pradesh, Chhattisgarh, Jharkhand, Kerala, Odisha, Rajasthan and Tamil Nadu. Gem variety of garnet occurs in Ajmer, Jaipur, Kishangarh, Tonk and Udaipur districts of Rajasthan. Tamil nadu alone accounts for more than 59% of the total resources, followed by Andhra Pradesh 33% and Odisha 6%.

ii. **Gold-** Gold is a noble metal and occurs mainly as native metal. It is used as an adornment for cultural status and ornamental purposes. Gold is a relatively scarce metal in the world and a scarce commodity in India. Largest resources of gold in India are located in Karnataka. It is followed by Rajasthan, Andhra Pradesh and Jharkhand.

iii. **Silver-** Silver is one of the five noble metals. It has brilliant white colour, good malleability and resistance to atmospheric oxidation. It has always been a highly desired precious metal and is used in more industrial applications than any other metal, in the world. In India, there are no native silver deposits except the small and unique Bharak deposit of silver in Rajasthan. Silver occurs, generally with lead, zinc, copper and gold ores. Rajasthan accounted for about 87% resources in terms of ore, Whereas Jharkhand 5%, Andhra Pradesh 4% and Karnataka 2%.

b. **Strategic Minerals**

Cobalt- Cobalt is an important strategic metal having wide industrial applications. It mostly occurs associated with copper, nickel and arsenic ores. About 69% of India's total reserve of cobalt occurs in Orissa whereas Jharkhand and Nagaland accounts for remaining 31%. Major use of cobalt is in metallurgical field specially in alloy/super alloy industries.

Molybdenum- Molybdenum is a refractory metal. It is used mainly as an alloying agent in steel, cast iron and super alloys manufacture to enhance their strength. It does not occur in nature in free state. It is found in chemically combined form with other elements. Molybdenite (MoS_2) is the principal ore of molybdenum. In India, by-product concentrates of molybdenum are produced intermittently from uranium ore of Jaduguda mine belonging to Uranium Corporation of India Ltd (UCIL) in Jharkhand. In India, molybdenum is associated with copper, lead and zinc ores. It occurs in Rakha copper deposit in Jharkhand. Malanjkhand copper deposit in M.P and Dariba-Rajpura lead-zinc deposit in Rajasthan. The multimetal deposit at in Khasi and Jaintia Hills,

Meghalaya is an important occurrence. Molybdenum deposit also occurs in Karadikuttam in Madurai district, Tamil Nadu.

Nickel- Nickel, when added in small quantity to iron, increases its properties manifold and makes the product hard and stainless. The demand of nickel lies in the production of stainless steel. It is also used in plating. Nickel is not produced from primary sources. The entire demand is met through imports in India. However, it is recovered as nickel sulphate crystals, a by-product obtained during copper production. Nickeliferous limonite is found in the overburden of chromite is Sukinda Valley and Jaipur district of Odisha. Nickel also occur is sulphide form along with copper mineralization in the East Singhbhum district, Jharkhand. In addition, it is found associated with uranium deposits at Jaduguda, Jharkhand. Other reported occurrence of nickel are from Karnataka, Kerala and Rajasthan. Polymetallic nodules are yet another source of nickel.

Tin- Tin is one of the earliest known metals. It is used mainly in bronze implements. It is a very scarce element. It is non-toxic. Highly metalleability. It is chemically inert. It can form an amalgam. It can form an alloy with other metals. Pure tin is a silvery-white metal which is soft and malleable. The most important tin mineral is cassiterite (SnO2), which, in its purest form contains 78.6% tin. The less common tin ore is stannite. Occurrences of tin in primary as well as secondary forms have been reported from Bihar, Chhattisgarh, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Karnataka, Odisha, Rajasthan and West Bengal. The total resources of tin ore in the Country are about 83.73 milloin tonnes.

Tungsten- tungsten is a vital metal of strategic importance. The chief sources of tungsten are minerals scheelite ($CaWO_4$) and wolframite [(Fe,Mn) WO_4] which are deposited by hydrothermal solutions. Tungsten has a high melting point and is resistant to all acids at ordinary temperatures. The total resources of tungsten ore in India are about 87.4 milloin tones. Resources are mainly distributed in Karnataka (42%), Rajasthan (27%), Andhra Pradesh (17%) and Maharastra (9%). Remaining 5% resources are in Haryana, Tamilnadu, Uttarakhand and West Bengal.

Vanadium- Vanadium is a scarce element. It occurs in association with titaniferous magnetite. It is also recovered as a by-product during iron and steel manufacture. In addition, vanadium present in bauxite can also be recovered as vanadium sludge. In India, vanadium is associated with titaniferous magnetite. The total estimated resources of vanadium ore are about 24.72 million tones.

- Dr Jugnu Prasad
Asst. Prof. Dept of Geology

FUTURE SCIENTISTS OF GEOLOGY

सोशल मीडिया : शिक्षा पर प्रभाव

सोशल मीडिया हमारी आंखों के सामने तेजी से विकसित हो रहा है और इस नवीनतम तकनीक से हमारे बच्चों को अस्वीकार करना और छिपा पाना व्यावहारिक रूप से मुश्किल हो रहा है। मीडिया की पहुँच व्यापक हो रही है। सर्वेक्षण कहता है कि और 73 प्रतिशत भारतीय बच्चे सेल फोन उपयोगकर्ता हैं और प्रत्येक वर्ष गेमिंग और इंटरनेट के आदी बच्चों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 2017 में भारत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की वृद्धि की वार्षिक दर लगभग 1.29 प्रतिशत है, जो चीन 1.09 प्रतिशत से भी अधिक है। हमारे देश के विभिन्न शहरों में इंटरनेट डेडडिक्शन सेंटर शुरू किए गए हैं। प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों का प्रभाव पड़ता है। यह भविष्य की पीढ़ी के इष्टतम विकास और विकास के लिए प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए प्रोद्योगिकी और मीडिया के लाभों और नकारात्मक प्रभावों को समझने का उच्च समय है। 21वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये आयामा द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खड़ा कर दिया है। जिसमें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है। संभवतः अखबार ही पहला जनसंपर्क माध्यम थ, इसके बाद मल्टीमीडिया का प्रयोग हुआ। 1895 में मारकोनी ने बेतार रेडिया संदेश भेजा था फिर 1901 में टेलीग्राफ का प्रयोग रेडियो के द्वारा शुरू हुआ, आज भी रेडियों तरंग ऑडियो प्रसारण में प्रयोग हो रहा है।

सोशल मीडिया दुनिया भर में सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाने के लिए बनाया गया ऐप्स का एक नेटवर्क है। विभिन्न ऐप्स और साइटें अनुकूलित प्लेटफॉर्म बनाने में योगदान देती हैं जो मनोरंजन और सूचना के बीच संतुलन प्रदान करने के लिए विकसित हुए हैं। शिक्षा उद्योग सहित प्रत्येक उद्योग विभिन्न तकनीकी प्रगति से लाभान्वित होता है। शिक्षा पर सोशल मीडिया के प्रभाव ने छात्रों को वैश्विक स्तर पर लोगों से जुड़कर सीखने की एक नई दुनिया से परिचित होने में मदद की है।

कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में शैक्षणिक प्रणालियों को प्रभावित किया। मार्च 2020 में कोविड-19 के मामलों की संख्या बढ़ने लगी और कई शैक्षणिक संस्थान और विश्वविद्यालय बंद हो गए। अधिकांश देशों ने कोविड-19 के प्रसार को कम करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद करने का निर्णय लिया। यूनेस्कों का अनुमान है कि अप्रैल 2020 में बंदी के चरम पर, राष्ट्रीय शक्षिक बदो न 200 दशा म लगभग 1.6 बिलियन छात्रा का प्रभवित किया। 94% विद्यार्थी जा कि लगभग आबादी आर वश्विक आबादो का पाचवा हिस्सा थ, प्रभावित हए। अनमान ह कि यह बदो आसतमन 41 सप्ताह (10.3 महोन) तक चलो। इनका छात्रा को पढाइ पर महत्वपण नकारात्म्क प्रभाव पडा ह, जिसका शिक्षा आर कमाइ दाना पर दोघकालिक प्रभाव पडन का अनमान ह। महामारो क दारान कवल साशल मोडिया हो शिक्षा बजट आर शिक्षा क लिए आधिकारिक सहायता कायक्रम स बजट म कमो आइ ह।

गरोबो वाल दशा म वश्विक स्तर पर शिक्षा म नामाकित छात्रा को कल आबादो म स, यनस्का न 31 माच, 2020 तक बताया कि 89% स अधिक लाग COBID 19 बद हान क कारण स्कल स बाहर थ। यह 1.54 अरब बच्चा आर स्कल या विश्वविद्यालय म नामाकित यवाआ का प्रतिनिधित्व करता ह, जिनम लगभग 743 मिलियन लडकिया भो शामिल ह।

16 मार्च 2020 का भारत न स्कला आर कालजा पर दशव्यापो तालाबदों को घाषणा को। 19 माच 2020 का विश्वविद्यालय अनदान आयाग न विश्वविद्यालया का 31 मार्च 2020 तक परोक्षाए स्थगित करन का कहा। सोबीएसइ आर आइसोएसइ बाड द्वारा आयाजित बाड परोक्षाए पहल 31 मार्च 2020 तक आर फिर बाद म जलाइ तक क लिए स्थगित कर दो गइ। इस अवधिक म बच्चा को शिक्षा स्कला एव विश्वविद्यालया न साशल मोडिया क माध्यम स शिक्षा प्रारम्भ किया।

रोहित कुमार चौबे
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग

गर्म लहरे (Heat Wave) प्रभाव, कारण और समाधान

गर्म लहरें को प्रायः हीट वेव की संज्ञा दी जाती है जब कोई स्थान कुछ समय के लिए वास्तव मे औसत से बहुत गर्म हो जाता है उसे हीट वेव की उपमा दी जाती है। यह चरम गर्म मौसम की लंबी अवधि होती है, जो मानव स्वास्थय, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकुल प्रभाव डालती है। भारत एक उष्णकटिबंधीय देश होने के कारण विशेष रूप से हीटवेव के प्रति अधिक संवेदनशील है जो हाल के दिनो मे लगातार और अधिक तीव्र हो गई है। उतर भारत के क्षेत्रो मे मार्च से जून महीनो मे अधिक गर्मी पड़ती है लेकिन अप्रैल महीनो मे ही उतर प्रदेश, दिल्ली, बिहार झारखण्ड, राजस्थान जैसे राज्यो के शहरो मे तापमान समान्यतः 45C के आसपास या उससे अधिक देखा जा रहा है जो अधिक चिंतनीय है।

भारत मे हीट वेव घोषित करने के भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के मानदंड के अनुसार यदि किसी स्थान का तापमान मैदानी या समतल क्षेत्रो मे 40C या अधिक एवं पहाड़ी क्षेत्रो मे 30C या अधिक हो जाता है तथा समान्य से 4 से 5C की वृद्वि को लू की स्थिती माना जाता है तथा समान्य तापमान यदि 40C या उससे अधिक होती है और समान्य तापमान से 6C या उससे अधिक की वृद्वि को गंभीर हीट वेव की स्थिती माना जाता है।

भारतीय मौसम विभाग (IMD) और राष्टीय आपदा प्रबंधन विभाग (NDMA) संयुक्त रूप से चेतावनी जारी करते है, इस तरह की चेतावनी के साथ एक कलर कोड जारी भी साझा किया जाता है जो मुख्यतः चार प्रकार के होते है–

रेड अलर्ट (Red Alert) :- जब तापमान 45C पार करने की उम्मीद होती है और जान–माल के नुकसान का डर रहता है, तब मौसम विभाग लोगो को सचेत रहने की चेतावनी देते हुए रेड अलर्ट जारी करता है जो प्रायः 5 दिन तक हो सकता है।

ऑरेंज अलर्ट (Orenge Alert) :- जब तापमान 43C से 45C के बीच दर्ज किया जाता है तब ऑरेंज अलर्ट लोगो को सचेत करने के लिए होता है कि वे अपनी सेहत को लेकर किसी भी तरह की लापरवाही न करे और बहुत जरूरी होने पर ही घर से निकले।

येलो अलर्ट (Yellow Alert) :- जब तापमान 40 से 42C के बीच रहता है तब येलो अलर्ट जारी किया जाता है, ये आने वाले समय मे और भी भीषण गर्मी पड़ने का खतरा है। ये जस्ट वाय का सिग्नल है ऐसे मे लोगो को सावधान रहने की सलाह दी जाती है।

हरा अलर्ट (Green Alert) :- इसमे अधिकतम तापमान समान्य स्तर पर रहता है इसमे कोई ऐहतियाति कदम उठाने की जरूरत नही होती है। पृथ्वी पर तापमान के पूर्व के डाटा को देखा जाए तो विश्व मौसम संगठन (WMO) के अनुसार अब तक के विश्व का सबसे अधिकतम तापमान 10 जुलाई 1913 को फर्नेस क्रीक केलिफोर्निया (USA) मे दर्ज किया था। वर्तमान समय मे भारत के विभिन्न शहरो की तापमान 45C के आस पास पहुँच जा रहा है। वर्ष 2021 मे कुवैत मे नवासिब शहर 53.2 दर्ज किया गया जो शहरी मामलो मे अव्वल रहा। 2016 मे भारत के राजस्थान के फलोदी मे 51C तापमान दर्ज किया गया जो अब तक का अधिक तापमान है।

हीट वेव का प्रभाव :– हीट वेव जीव–जंतु, अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण की काफी प्रभावित करते है जिन्हे तथ्यो के आधार पर रखा जा सकता है।

- स्वास्थय संबंधी प्रभाव :– उच्च वायु तापमान मानव स्वास्थय को काफी प्रभावित करते है जिनसे कई प्रकार की बिमारियो का प्रकोप बढ़ जाता है। जैसे– श्वसन संबंधित, मधुमेह, किडनी, हीट स्ट्रोक और हाइपरथर्मिया जैसे रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।
- पर्यावरणीय प्रभाव :– अत्याधिक गर्मी से सुरक्षा और जंगल की आग जैसी अन्य आपदाओ का खतरा बढ़ जाता है। यहॉ तक की पारिस्थितिकी असंतुलन की समस्या उत्पन्न हो जाती है।
- कृषि उत्पादन की कमी :– उच्च तापमान से कृषि पैदावार को नुकसान हो सकता है गर्म दिनो से पौधो पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे कृषि पैदावार कम हो सकती है।
- बुनियादी ढांचे पर दबाव :– गर्म लहरो के साथ बिजली की कमी से स्वास्थय सुविधाएँ, परिवहन और जल संबंधी बुनियादी ढांचे पर असर पड़ता है।
- वायु गुणवता पर प्रभाव :– गर्म लहरो मे वायु की गुणवता सतही स्तर पर ओजोन उत्पादन और एयर कंडिशनिंग से होने वाली प्रदुषण प्रभावित हो सकती है।
- पशुधन पर प्रभाव :– गर्म लहरे पशुधन पर दबाव डाल सकती हैं जिससे दुध उत्पादन मे कमी और धीमी वृद्वि हो सकती है। यह गर्भधारण दर को भी प्रभावित कर सकता है।
- अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :– हीट वेव बड़ी अबादी को गंभीर रूप से प्रभावित करती है, सार्वजनिक आपात स्थिती पैदा करती है और कार्य क्षमता मे कमी जैसे अत्याधिक मृत्यु दर और समाजिक आर्थिक परिणामो को जन्म देती है।
- सागरीय क्षेत्रो पर प्रभाव :– हीट वेव महादीप के साथ साथ सागरीय क्षेत्रो पर भी भंयकर प्रतिकुल असर पड़ता है।

ग्रीष्म लहर के प्रभाव को कम करने के लिए सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओ का पहल :–

- परिवर्तन के लिए राष्टीय कार्य योजना (NAPCC) भारत सरकार के द्वारा 8 कार्य मिशन है जो जलवायु परिवर्तन के विषय मे प्रमुख लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए बहुआयामी और एकीकृत रणनिति बनाते है जो सतत् पारिस्थितिकी समुदाय का निर्माण करते है।

इंडिया कूलिंग एक्शन प्लान (ICAP)

NDMA दिशा निर्देश – राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण **(NDMA)** ने हीटवेव को कम करने के लिए कई दिशा–निर्देश जारी किए है।

- आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सैंजई फ्रेमवर्क 2015–30 का प्रभावी कियान्वयन जारी है।

निष्कर्ष :– यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हीट वेव कई कारको के संयोजन से प्रभावित जटिल घटनाएँ है और उन हीट वेव की तीव्रता इन कारको के संयोजन के आधार पर एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र मे भिन्न हो सकती है। अत्याधिक गर्मी के प्रति लचीलापन विकसीत करने के लिए रणनितियो मे संवेदनशील आबादी की पहचान ठंडी छतो और फुथपाथ बनाना, छायादार पेड़ लगाना, उर्जा दक्षता को बढ़ावा देना जलवायु जोखिमो की योजना बनाना और समझने के लिए जलवायु मानचित्र उपकरण ो का उपयोग करना अनिवार्य है।

– डॉ0 सुनील कुमार
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग

ABOUT NCC

पी0पी0के0 कॉलेज, बुण्डू मे एनसीसी 1985 ई0 से संचालित है। एनसीसी का मुख्य उद्देष्य युवा नागरिकों में चरित्र, भाईचारा, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों का विकास करना है। इसके अलावे इसका उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व के गुणों वाले संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का एक समूह बनाना है जो चाहे कोई भी कैरियर चुनें राष्ट्र की सेवा करेंगे। यह भारतीय युवाओ को सशस्त्र बलों में वातावरण और अवसर भी प्रदान करता है।

इस कॉलेज में 7/3 एनसीसी कम्पनी है जिसका हेड ऑफिस 3 झारखण्ड बटालियन एनसीसी राँची में है। कॉलेज के छात्र छात्राओं को एनसीसी में निःशुल्क नामांकन लिया जाता है। एनसीसी प्रशिक्षण के दौरान कैडेट को निःशुल्क वर्दी दिया जाता है एवं क्लास के उपरांत जलपान मुहैया कराया जाता है। कॉलेज में एनसीसी होने से एनसीसी कैडेट का चयन सशस्त्र बलों में हुआ है व विभिन्न क्षेत्रों में सेवा दे रहे हैं। कैडेट को एकता और अनुशासन में रखा जाता है। स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त एवं गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को कॉलेज एवं अनुमंडल के परेड समारोह में मुख्य भूमिका निभाता है। यहाँ के एनसीसी द्वारा समय समय पर जागरूक कार्यक्रम चलाया जाता है। जैसे स्वछता से संबंधित, मध–निषेद, मतदाता जागरूकता, पर्यावरण से संबंधित आदि साथ ही सरकार द्वारा चलाया जाने वाला सामाजिक राष्ट्र हितैसी कार्यक्रम व योजनाओं का यहाँ के एनसीसी द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जाता है, ताकि जनमानस भी जागरूक हो सके व देश के विकास में अपना योगदान दे सके।

NATIONAL CADET CORPS

NATIONAL CADET CORPS

Shikshak Diwas Samaroh

ALUMNI MEET

PANCH PARGANA KISAN COLLEGE
BUNDU
RANCHI UNIVERSITY, RANCHI
ALUMNI MEET
DATE - 19/05/2024
TIME- 11:00AM
Latitude: 23.178278
Longitude: 85.589298
Elevation: 356.06±14 m
Accuracy: 14.2 m
Time: 19-05-2024 11:48
Note: Alumni meet_PPKC_Bundu_19/05/2024
Powered by NoteCam

PANCH PARGANA KISAN COLLEGE
BUNDU
RANCHI UNIVERSITY, RANCHI
ALUMNI MEET
DATE - 19/05/2024
TIME- 11:00AM
Latitude: 23.178533
Longitude: 85.589208
Elevation: 356.06±58 m
Accuracy: 53.4 m
Time: 19-05-2024 12:26
Note: Alumni meet_PPKC_Bundu_19/05/2024
Powered by NoteCam

शिक्षक कौन होते हैं ?

गुरु ही ब्रह्मा, महेश गुरु ही चारों धाम, विष्णु
भव तर जाए गुरु कृपा से लगे न कुछ भी दाम,
सरस सुगम पथ के निर्माता करते नहीं विश्राम,
शिक्षक वह होते हैं, शिक्षक वह होते हैं,
जो उज्जवल राह दिखाते, शिक्षक वह होते हैं,।

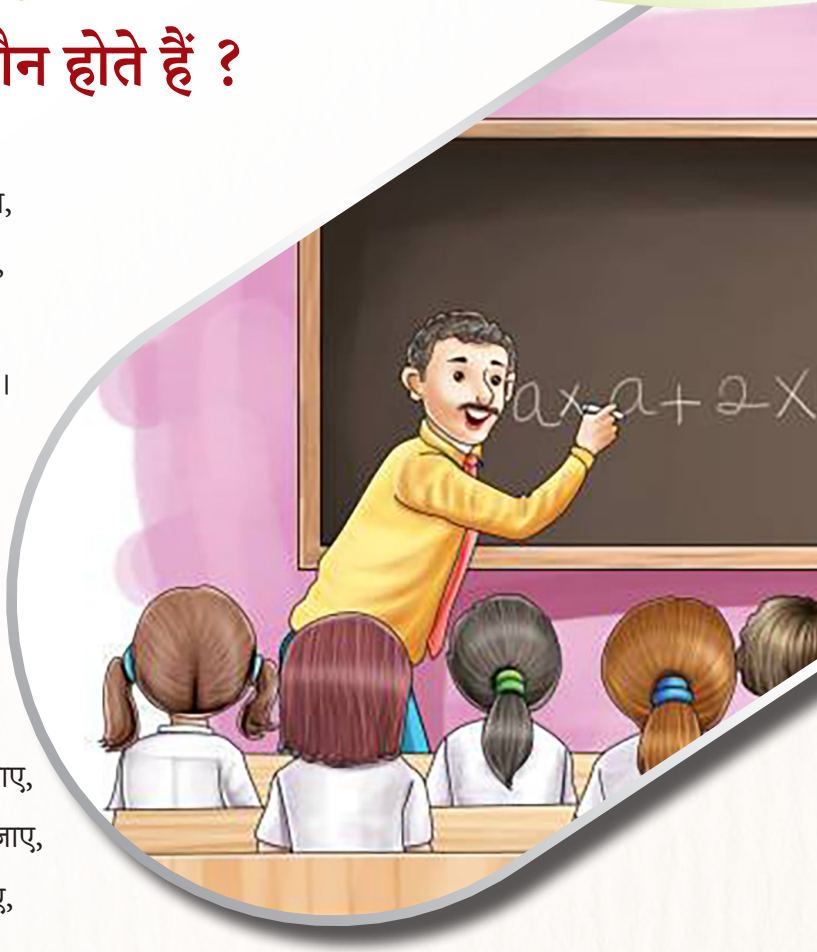

ज्ञान ज्योति से आलोकित जग करते सदा निरंतर,
जो नित प्रकाशमय कर अज्ञानता करते हैं छूमंतर,
दीन, धनी शिष्यों में कभी करते नहीं जो अंतर,
शिक्षक वह होते हैं, शिक्षक वह होते हैं,
जो बिगड़ी राह बनाते, शिक्षक वह होते हैं ।

जिनकी तेज किरण से दुर्गम राह सुगम बन जाए,
जिनकी कृपा की बारिश से पत्थर सावन बन जाए,
तमस अविद्या दूर भगाने खुद ज्वाला बन जाए,
शिक्षक वह होते हैं, शिक्षक वह होते हैं
जो मंजिल राह दिखाते, शिक्षक वह होते हैं ।

शिक्षक जिसके घर आए तर जाए शिष्य अभागा,
टूटा हुआ नसीबा समझो उसका अब है जागा,
इस धरती से उस अंबर तक फैली जिनकी आभा,
शिक्षक वह होते हैं, शिक्षक वह होते हैं,
जो पीड़ा दूर भगाते , शिक्षक वह होते हैं।

वह शिष्य बड़ा अभागा जिससे मुकर जाएं ,
सुख विलासिता महलों में वह जीते जी मर जाए,
जो रच मात्र की कृपा से आया पारस कर जाए ,
शिक्षक वह होते हैं, शिक्षक वह होते हैं,
जो बिगड़ी राह बनाते, शिक्षक वह होते हैं।

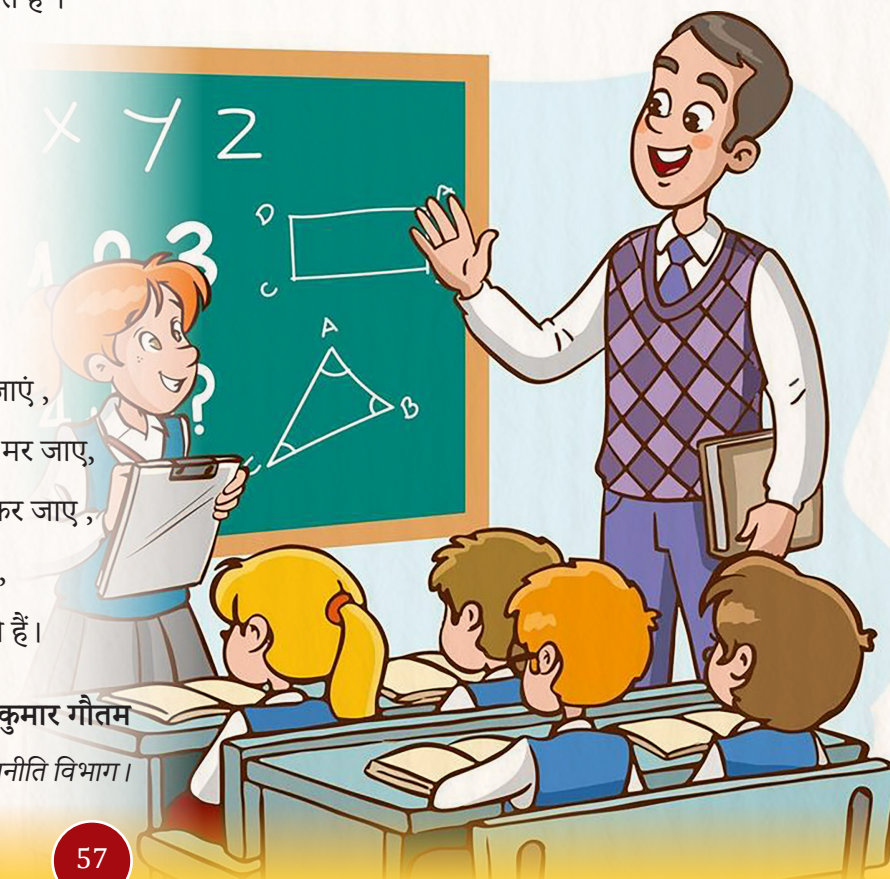

- कुमार गौतम
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विभाग।

सदन संसद के

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार भारत में संसद एक प्रमुख राजनीतिक संस्था है। संसद का कार्य देश के लिए कानून बनाना है। संसद के दो सदन होते हैं-राज्य सभा और लोक सभा।

राज्य सभा - यह स्थायी सदन है। इसे वरिष्ठ (बुजुर्गों) का सदन भी कहा जाता है। इसे संसद का उपरी सदन भी कहा जाता है। 30 वर्ष या इससे अधिक उम्र का कोई भी भारतीय नागरिक निर्वाचित या मनोनीत किया जा सकता है। राज्य सभा के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष की होती है। इसके एक तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष पर सेवानिवृत हो जाते हैं। राज्य सभा को कभी भी भंग नहीं किया जा सकता है। राज्य सभा के सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सभापति और उपसभापति के रूप में दो सर्वोच्च पदाधिकारी होते हैं। राज्य सभा के सभापति उपराष्ट्रपति होते हैं जो सभा का संचालन करते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उपसभापति सदन का संचालन करते हैं।

लोक सभा - भारतीय संविधान के अनुच्छेद 81 में लोक सभा के गठन का प्रावधान है। इसे संसद का प्रथम सदन या निम्न सदन या लोकसदन भी कहा जाता है। लोक सभा के सदस्यों का चुनाव जनता के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक वयस्क मताधिकार द्वारा किया जाता है। इसे आम चुनाव कहा जाता है। आम चुनाव भारतीय निर्वाचन आयोग के निर्देशन में प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर सम्पन्न होता है। वर्तमान में लोक सभा का आमचुनाव 2024 जारी है। यह चुनाव सात चरणों में सम्पन्न होने हैं। जब तक यह लिखी जा रही है तब तक दो चरणों के मतदान सम्पन्न हो चुके हैं।

सदस्य संख्या : लोक सभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या

552 हो सकती है। वर्तमान में लोक सभा के सदस्यों की संख्या 545 है जिसमें से 530 सदस्य राज्यों से तथा 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं। 02 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं जो आंग्ल भारतीय समुदाय से होते हैं। लोक सभा में समाज के सभी वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व हो इसके लिए कुछ सीटें अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए सुरक्षित होते हैं।

योग्यता: कोई भी भारतीय नागरिक जिसकी आयु 25 वर्ष से कम नहीं है, मानसिक रूप से विक्षिप्त या दिवालिया नहीं है, लोक सभा का चुनाव लड़ने एवं निर्वाचित होने की योग्यता रखता है। समय-समय पर योग्यता के कुछ तत्वों में संशोधन किए जाते रहे हैं ताकि चुनाव की पवित्रता एवं विश्वसनीयता बनी रहे।

कार्यकाल: लोक सभा के सदस्यों का कार्यकाल प्रायः पांच वर्ष का होता है। लेकिन प्रधानमंत्री के सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा इसे पहले भी भंग किया जा सकता है।

अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष: लोक सभा के सदस्य अपने बीच से ही अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष को चुनते हैं। अध्यक्ष लोक सभा का संचालन करते हैं। लोक सभा अध्यक्ष को कुछ विशेष शक्तियां प्राप्त होती हैं।

सत्र: संसद के दो सत्रों के बीच 06 माह से अधिक अवधि तक का अंतराल नहीं हो सकता है। भारत में संसद के लगभग तीन सत्र पाए जाते हैं:

- **बजट सत्र**
- **मानसून सत्र**
- **शीतकालीन सत्र।**

संसद की शक्तियां:

1. **विधायी शक्ति**
2. **कार्यपालिका शक्ति**
3. **वित्तीय शक्ति।**

विधायी शक्ति: संसद का मुख्य कार्य विधान बनाना है। यह सम्पूर्ण भारत या इसके किसी एक भाग के लिए कानून बना सकती है।

कार्यपालिका शक्ति: संसदीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका (मंत्रिपरिषद) संसद के प्रति उत्तरदायी होता है। केंद्र सरकार तभी तक अस्तित्व में रहती है जब तक उसे संसद (लोक सभा) का विश्वास प्राप्त होता है। यदि लोक सभा सरकार के प्रति अविश्वास प्रस्ताव पारित कर दे तो उसी समय सरकार गिर जाती है। संसद के पास सरकार पर नियंत्रण रखने एवं उत्तरदायी बनाने के लिए अनेक उपाय हैं, जैसे- अविश्वास प्रस्ताव, स्थगन प्रस्ताव, कटौती प्रस्ताव आदि।

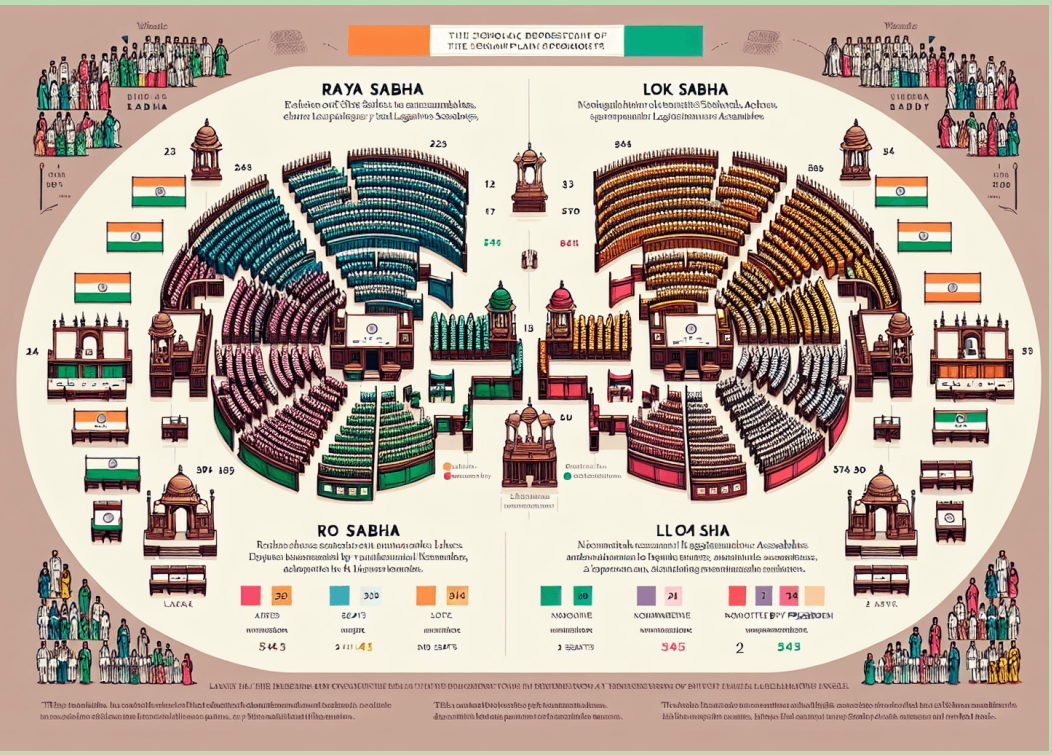

वित्तीय शक्ति: संसद करों में संशोधन कर सकती है। अनुदान मांगों पर मतदान के द्वारा सरकार पर नियंत्रण रखती है। संसद के अनुमति के बिना कोई भी कर जनता पर नहीं लगाई जा सकती है।

इस तरह देखा जाय तो लोकतंत्र का पूरा सार संसद एवं उसकी कार्यप्रणाली में समाहित है। जैसा कि अभी हमारे देश में लोकतंत्र का पर्व देश के गर्व के रूप में मनाया जा रहा है हमें भी इसका सहभागी बनना चाहिए और लोकतंत्र का आनंद लेना चाहिए।

- सुरेश कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान, विभाग।

Nature : An Admirable Gift

Since ages, nature has been the best companion of mankind. We cannot imagine life on earth without flaura and fauna. It not hyperbolic to refer nature as the creator and God of living beings. Nature is like a mother because it gives us a lot of things for humans to survive like Oxygen, Nitrogen, mineral resources, plants, water, air, fruits, vegetables and many more.

Nature plays a vital role in purifying the air, soil, and water. Due to this, the earth becomes a better place to live in. Nature gives us cooling shade and fresh air. It protects the earth from the effect of scorching heat. It also helps us to protect from air pollution and ultraviolet rays.

Nature always attracts the people by its serene beauty. We cannot imagine life without nature. That is why we must protect our nature. Trees should be planted in abundance. A tree is as valuable as gold hence it's called the Green Gold . The ancient people lived among the trees and plants in the forest so they were healthy and happy. But, in today's time, humans live in a concrete jungle. Nature is existence of our life. More trees mean more purification of the environment. Earth is the only planet in the entire universe where humans and flora and fauna both exist together. If we protect nature today, nature will protect us and our future generations.

Nature is a precious gift to all of us. Plants absorb the vicious, gas carbon dioxide from humans and trees provide Oxygen to human beings. Trees restore greenery to the earth. Nature doesn't belong to us, we belong to the nature. So, we should save our ecosystem as nature is future. We must come forward to save this life-line of earth. We must take a pledge to protect tis precious gift of God.

- Niru Kumari
M.A. Sem 1, English

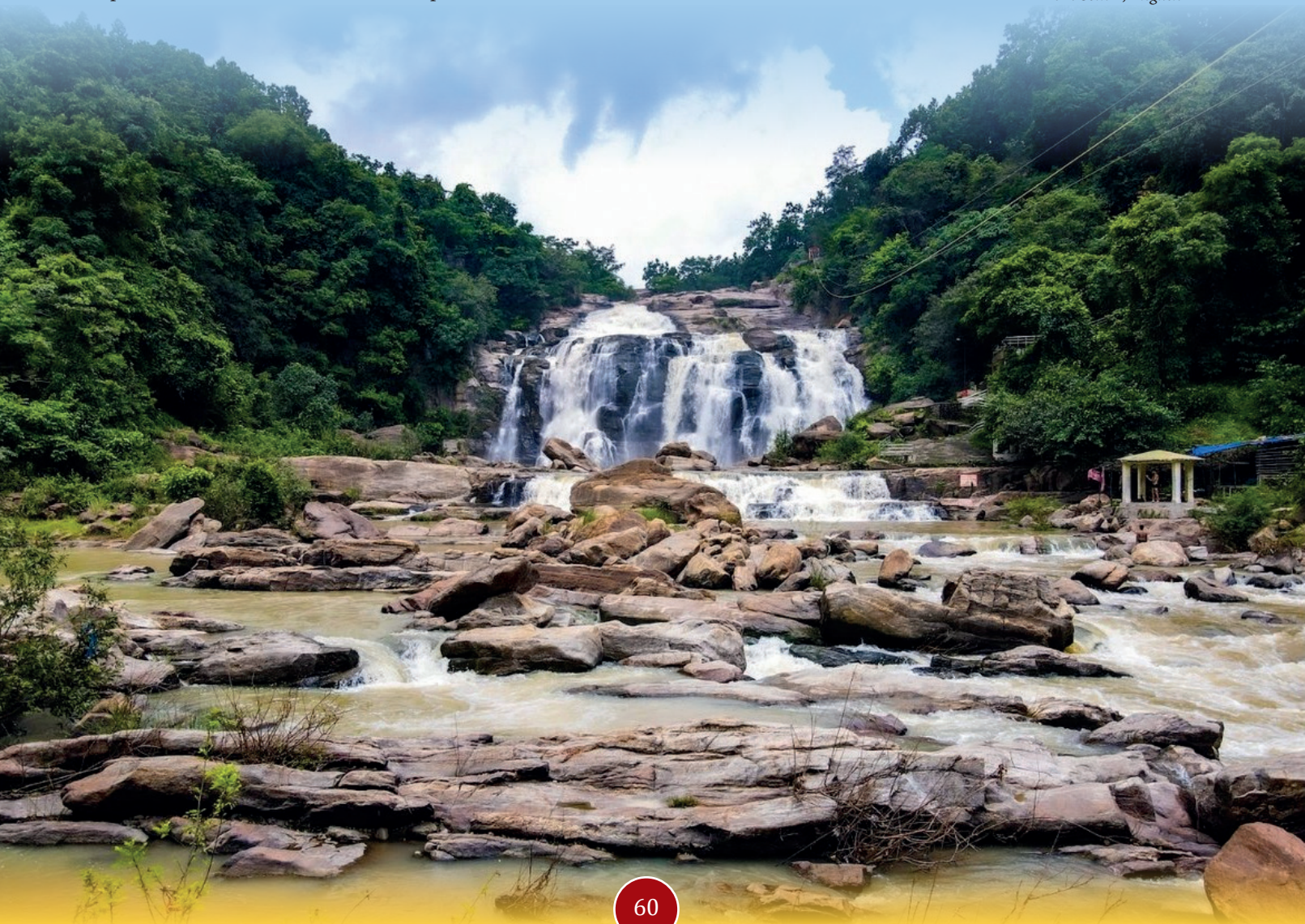

Need for Empowering Women

Women is treated as Goddess in the holy books. They are the creators and sculptors of human race. Hence their empowerment is a very important and essential need in our society, as it also promotes gender equality through which girls and women can get a chance to scale heights in the society. It includes ensuring that women and girls will get the same rights, equal opportunities and a fair chance to represent themselves in every field. Empowerment of women will also lead to the economic growth of a nation.

Empowering women will lead to the growth of families as well as the society. As they will get better education, they will be more conscious towards health and outcomes for family and society. As of now even in the most modern cities or towns, girls or women don't feel very safe and confident in their day-to-day life. They always face injustice, discrimination and a bad attitude towards them. Women empowerment is just a matter of fairness in men and women but it's important for development and progress.

When women will get the right to have better education in villages or in cities they will get a fair chance of employment opportunities helping in the growth of economic development and it will boost productivity. Most of the women have no access of healthcare facilities in every places. Empowering them will lead them to have access of better health care facilities, leading to improved outcomes for themselves and their family.

Educated women will have the tendency to provide the best education possible for their children ensuring them to have a bright future and a fair chance to stand in the competitive world. If women and girls will get the same educational facilities without gender biased system, they will show significant growth in the society. As women will become educated and literate, they will contribute to social stability by promoting social justice for girls and women, and they will help get others to have a fair chance, equal rights and opportunities.

Women empowerment themes in English literature, reflects attitudes of society towards gender roles and equality. Jane Austen in her novel "Pride and Prejudice" featured strong female protagonists who challenge the thoughts of the society against equality of women and assert their independence within the constraints of their time.

Women empowerment is not only a strategic investment in the betterment of society instead by providing women with equal rights, opportunities, and resources, we can create a more inclusive, prosperous, and sustainable world. Empowered women contribute to economic growth, social stability, improved healthcare outcomes, and political participation. Moreover, women's empowerment is essential for achieving the Sustainable Development Goals and building a society for future generations with no gender discrimination. It is mandatory that we continue to prioritize women's empowerment to unlock the full potential of half of the world's population and create a brighter future for all.

- Baibhav

M.A. Sem 1, English

Stop Affecting Climate

Recently, the forest survey of India (FSI) reported 343 large forest-fires in India. In Uttarakhand more than 200 forests are on fire. This is because of climatic change. Once the wind takes over the dry land the high temperature ignites such fire and it becomes wild. It is evident that when temperature rises human suffers.

The vital question is that whether the loss of ecology be compensated at any cost. The answer is a big NO. Our survival is impossible without the forest and environment. The cause of climate change can be seen in Antarctica. The glaciers are melting day-by-day. Global warming has caused Antarctica to change the physical and living environment. Climate changes adversely affect penguins in Antarctica. Indra Point which has earlier known as Pygmalion point is now sunk to the bottom of the Bay of Bengal.

Sonam Wangchuk, an engineer by profession has coined the term "Climate fast" to save the melting Himalayan range. He kept twenty-one days fast to save the climate. His companions also witnessed rapid glacier loss, erratic snowfall and several natural calamities. A salute to such a nature saver and his entire team-members.

After facing several climatic changes, we must be aware and take a strong stand against Climate crisis. The Government should make some policies to control Climate changes on a large scale. Political parties should look at this matter and give first priority to safe guard the environment.

The Government should encourage people to plant more trees. They should launch new ideas like solar missions to reduce the Climate change. Government should introduce new technology that reduces energy consumption. We should switch to electrical vehicles.

The general elections are being held all over India, but unfortunately not a single political party care for this issue. Even no manifesto exhibits this global issue. We all should understand that the environment is the life-line of all species. It is more important than the economy or politics. So, let us be aware before destroying nature. We are the first generation to face the impact of the climate crisis, and the last generation that can do something about it.

- Gautam Seth
B.A. Sem 3, English

Education should be Equal

Education is a powerful tool that opens the door to a brighter future of every individual. But imagine if not everyone had the access to this tool. Unfortunately, that's the reality for many people around the world. Therefore, it's crucial to ensure that education is equal for everyone.

Equality in education means that every student, no matter their background or financial status has the same opportunities to learn. It's about giving every student a fair chance to reach their full potential.

When education is unequal, it creates unfair advantages for some and disadvantages for others. A rich student attends a school with modern facilities, well-trained teachers, and plenty of resources, while the other goes to a school with old, unqualified teachers, overcrowded classrooms, outdated textbooks and incomplete syllabus. It's easy to see how this inequality can affect their chances of getting better education.

But it's not just about the buildings and resources. Equal education also means addressing issues like discrimination, poverty, and access to technology. It means making sure that every child, regardless of their race, gender, or family income, has the support they need to thrive in school.

When we invest in equal education, we're not just helping individual students – we're building a better future for everyone. Equal access to education means more opportunities for students in economic growth, stronger communities, and a successful career.

It is not easy, and it won't happen immediately. But, by working together and raising this issue and prioritizing equal education, we can create a world where every child has the opportunity to learn, grow, and succeed. And this will result in the overall growth of the society. And in this manner the entire human race with stand with togetherness.

- Supriya
M.A. Sem 1, English

Lessons from My Father

My father is very lovely father of the world. He is my super hero and a best friend. He is my true inspiration and most kind person I have ever confronted. He helps me a lot in every preparation of all significant work. He is very loyal to his family and takes care of my entire family members. A businessman by profession, he is a very hardworking man. An intelligent person who answers all my questions. He is the pillar of support and strength of our family. He always stands beside us in times of need. A man of ethics who preaches morals and practices the same.

His contribution to my personality is immense. He enunciates us to be good and to do good to others. He used to say that the real blessings come from those whom you have ever helped. He believes that in this world when you could acquire any social or professional dignity and designation, always do good without expecting anything back. This is the success mantra of his life.

Further, he highlights that kindness is your greatest legacy. He believes that a true character can only be measured only through you attitude and behaviour towards others. Moreover, he always keep trying and never quits. My father believes that determination, passion and willingness to succeed are more important than any natural talent. He never fears the tough situations of life and faces it with all courage and confidence. The only person I always admire in my life is my father who I love from the deepest core of my heart. They are the real reason for my happiness and happiness.

- Piya Sen
B.A. Sem 3, English

A Harboured Ship

Life mirrors a harboured ship. Standing at the shore is not the purpose of a ship but to traverse miles. A Ship leaving the harbour is just the perception of leaving your comfort zone and dragging your dreams, where no one believed in them. It's just the perception that life without safety & security is always endangered, but that life lacks of adventure too.

The world is full of these people who take the risk & do what they have faith in them & deliver just because they have the belief that "Noise of Abuse will be hidden under the Sound of Applause". This is not just a philosophical gesture but a case with full of proofs, whether it is the World History or Political Scenario. The World is rated by only those who left everything behind & chased their dreams.

The Ship leaving the harbor is not just a case of discovery or running after something which is uncharted but it is more of bravery because the Ship sacrifices the safety & security and bets for everything, kills it's cowardness just to fulfill the dreams. That is why it is said that, chasing a dream & falling in love has one common thing, that is Bravery. As you must fight against whole world for this.

The world would never be discovered if Christopher Columbus would have stayed back in Europe. He left the land mass & entered in the ocean of uncertainty & danger, lastly fulfilled his faith into reality. There would not have the equality in Indian Society if Dr. B. R. Ambedkar would not have taken discrimination in the way of revenge in changing the world. The success of his life & dream is proved by Indian Constitution itself.

The racial discrimination was ended by that person who was victim of it, as Nelson Mandala was in prison for 13 years & finally became the President of that land that understood him nothing. A child coming to India after partition became the member of criminal society but changed the face of sports in India & got the tag of 'flying Sikh.' The journey of Napoleon Bonaparte is one of the best examples of going out of comfort zone. Sometimes dreams are not related to individual but whole of Nation too. The Missile Man of India lived for the security of India in fulfilling his dreams just to protect his motherland. Finding the truth of life can be more important than sacrificing it, leaving everything behind including his state, family etc. and following his faith & looking for the answer-to- the question has been the life of Buddha.

The moral is that taking the first step is the common sense but continuing it is all about faith & confidence. Taking the Ship out of harbor is not just related to chasing dreams or coming out of comfort zone or not just even about taking risks in life, but it is also about common senses. The more we fear the greater is a threat of losing it, we must dare to do something. Daring should become a part and parcel of life. If we want to achieve greatness and success, we should come out of the cocoon and face the world with all might and courage.

- Simran
M.A. Sem 1, English

The Journey

Embarking on a path unknown,
Through fields of dreams and seeds unsown,
With every step, the horizon near,
The journey calls, dispels all fear.

Mountains high and valleys low,
Rivers fast and winds that blow,
Each challenge met with heart and mind,
In trials and triumphs, strength we find.

Companions join, then fade away,
Some for moments, some to stay,
Lessons learned with each new face,
In every footstep, a trace.

Stars above and earth below,
Guide us as we onward go,
Through the night and into dawn,
A journey lived, a spirit drawn.

For in the end, it's not the end,
But every twist, each turn and bend,
The journey's joy, the path we trod,
Transforms the soul, connects to God.

So step by step, embrace the way,
With open heart, without delay,
For in each breath, each moment's grace,
We find our journey's true embrace.

- Manisha
M.A., Sem 1, English

पेड़ हमारे लिए क्या-क्या करता है

पेड़ पर्यावरण और मावन जीवन के लिए मौलिक है। जो प्रकृतिक का वरदान है पेड़ भी इंसानो और जानवरों की तरह ही जीवित प्राणी है। जो कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करता है और ऑक्सीजन छोड़ता है और पेड़ CO_2 को कम करता है जो साल भर में एक पेड़ 22 KG तक CO_2 को खत्म करता है पेड़ किसी इलाके का तापमान 1 से 5 डिग्री तक कम करता है। और पेड़ तापमान को नियंत्रित करता है। पेड़ रहने से हमें AC और कूलर आवश्यकता नहीं होगी जो पेड़ हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है पेड़ अनेक प्रजातियों को आवास प्रदान करती है, इसके अलावा पेड़ हमें सांस लेने के लिए ताजी हवा, खाने के लिए फल, जलावन के लिए सुखी लकड़ी, धूप से बचने के लिए छाया और अनेक प्रकार की औषधियाँ प्रदान करती है। पेड़-पौधे वाष्प उत्सर्जन करके बारिश कराती है जो लोगों को पानी की जरूरतो को पूर्ति की जाती है। पेड़ के कारण ही भूमि संरक्षण किया जाता है। जो मिट्टी को बचाये रखने में मदद मिलती है। तथा जलवायु को नियंत्रित करता है। जिसे क्षेत्र में पेड़ अधिक रहता है उस क्षेत्र में वातावरण स्वच्छ रहेगा जो कि लोगों को वहाँ रहने में पसंद आता है। इसलिए लोग शहर को छोड़ के गाँव की ओर आकर्षित होते हैं। इसलिए हमें पेड़ को अधिक से अधिक लगाना चाहिए।

- बजरंग महतो

भूगोल, सेमेस्टर - VI

किसान

हमने भुला है, किसी की मेहनत को
यूं तो कहते हैं, जान की बातें
कौन ही जाने, किसान की बातें
यूं ही नहीं, बनता अनाज
बारिश की आस मे, गर्मी की ताप में
ये तो पड़े है, बीच मझधार में

बूंद को तरसते है, सिंचाई को मरते हैं,
बाढ़ से डरते है, खाने को तरसते हैं,
तब जाकर सोने की मोती
लहलहाती है खेतों मै कौ
कौन ही जाने, किसान की बातें

हर एक निवाला, मिला है उनसे
जिसे हम, चाव से खाते है
आज की पिढी कहती है,
हमने तो ऑनलाइन खरीदा है
अरे पैसे से तो कोई मोल नहीं
यह तो अनमोल सोना है
कौन ही जाने किसान की बातें,

क्या तुमने किया है, किसान ये नाज
अरे जिसका काम उसी को साज़े
पर एक कदम तो, बढ़ाओ न
आओ करें किसान की बातें
यह पंक्ति दोहराव न
हमने भुला है, किसी की मेहनत को।

- प्रिया राज गुप्ता
भूगोल विभाग, सेमेस्टर- VI

प्रकृति का प्रकोप

कहीं बूंद बूंद को तरसने लोग
तो कहीं जल का उमड़ा सैलाब है

प्यासी है धरती कहीं
तो कहीं बादलों की टकरार है

प्रकृति की क्रोध है यह
मनुष्य की तृष्णा का है कारण

तबाह हो गई है आम जिंदगियां
दो वक्त की रोटी को मोहताज है

ना सर पर छत है
नहीं उम्मीद की कोई किरण

हर तरफ हाहाकार ही हाहाकार है
प्रकृति की प्रकोप है यह
प्रकृति की क्रोध ही है यह ॥

- काजल कुमारी
भूगोल विभाग, सेमेस्टर- III

बेटियाँ

बेटी से ही संसार है, जो समाज की अमूल्य धरोहर व जननी मानी जाती है। हिंदू धर्म में बेटियों को साक्षात मां लक्ष्मी का रूप माना जाता है इसीलिए बेटियों को लक्ष्मी स्वरूप भी कहा जाता है । भारत तथा दुनिया के कई देशों में हर साल 24 सितंबर को राष्ट्रीय बेटी दिवस यानी National Daughter's Day मनाया जाता है।

सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा देवी कहने को अवतार है बेटियाँ,

हर घर, गली, सड़क, मोहल्ले और सजाती घर द्वार है बेटियाँ

आंगन की तुलसी बनकर घर को महकाती है बेटियाँ,

पानी से निर्मल स्वच्छ नजर आती है बेटियाँ,

जिस घर जाए वही उजाला लाती है बेटियाँ,

जब जब जन्म लेती है खुशियां साथ लाती है बेटियाँ।

- पूजा चैटर्जी

भूगोल विभाग, सेमेस्टर- III

सांस्कृतिक कार्यक्रम

SHIKSHAK SAMMAN SAMAROH

SUPERANNUATION

आज की लड़कियां

हवाओं सी बन रहीं हैं लड़कियां,
उन्हें बेखौफ चलने में मजा आता है,
उन्हें पसंद नहीं बेवजह रोका जाना।

परिंदों से बन रही हैं लड़कियां,
उन्हें उड़ने में मजा आता है,
उन्हें पसंद नहीं बेवजह,
उनके पर कट जाना।

और समुंदर से बन रहीं हैं लड़कियां,
उन्हें फैल कर जीने में मजा आता है,
उन्हें मंजूर नहीं सिकुड़ सिकुड़ कर जीना।

और सूरज सी बन रहीं हैं लड़कियां,
उन्हें चमकने में मजा आता है,
उन्हें पसंद नहीं बादलों से ढका जाना।

पहाड़ों से बन रहीं हैं लड़कियां,
उन्हें सर उठाकर जीने में मजा आता है,
उन्हें पसंद नहीं सर झुका कर जीना।

- कुमारी आरती
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान, विभाग।

शिक्षक

जीवन मे जो राह दिखाए,
सही तरह से चलना सिखाए।

माता-पिता से पहले आता,
जीवन मे सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।

कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथदर्शक है जो।

मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव मे सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उन जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

- खुशी रूज मोदक
भूगोल, सेमेस्टर – VI

सर्वाइकल कैंसर

प्रत्येक वर्ष 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। यह दिवस सर्वप्रथम सन् 1933 ई0 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुख्यालय जेनेवा में मनाया गया था। यह दिवस आम लोगों के बीच कैंसर के खतरो के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसके लक्षण और बचाव की जानकारी देने के उदेश्य से मनाया जाता है तथा इस वर्ष, 2024 का थीम है "कैंसर गैप को बंद करें"।

जब हमारे शरीर के किसी अंग के कोशिकाओं का अनियमित एवं अनियंत्रित रूप से विभाजन होता है तो कैंसर रोग उत्पन्न होता है। कैंसर रोग कई प्रकार के होते है जैसे स्तन कैंसर, फेफड़ा कैंसर, लीवर कैंसर, त्वचा कैंसर, सर्वाइकल कैंसर आदि। इनमे सबसे खतरनाक फेफड़ा कैंसर है। इस कैंसर के वजह से प्रति वर्ष लाखों लोगों की मौत होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2020 में कैंसर पीड़ित होने वाले लोगो की संख्या लगभग 18.1 मिलियन थे तथा इसमें महिलाएँ 1/49.3 मिलियन1/2 एवं पुरूष 1/48.8 मिलियन1/2 थे तथा संक्रमित कैंसर रोग से मरने वाले लोगों की संख्या 10 मिलियन थी। WHO के कथनानुसार वर्ष 2070 तक इसकी संख्या में 77% की वृद्धि होगी तथा उनमें मौत 50% तक हो सकती है। WHO के अनुसार यह एक घातक बिमारी है अतः हमें सतर्कता बरतना चाहिए एवं लोगो को जागरूक करने का प्रयास करना चाहिए।

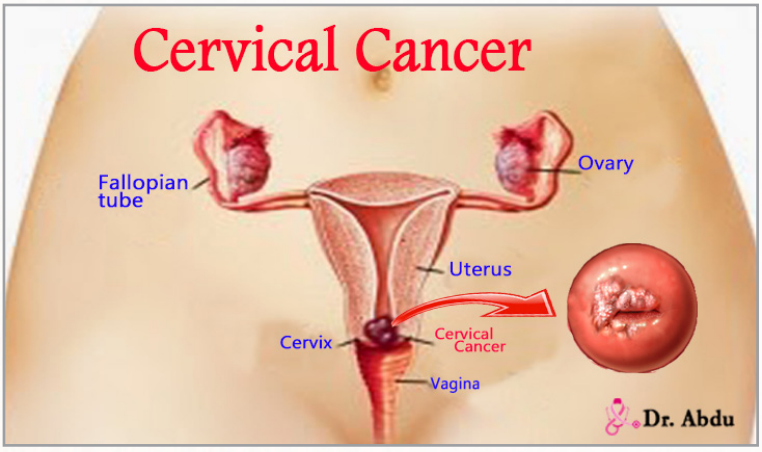

सर्वाइकल कैंसर योनि एवं गर्भास्य के बीच कोशिकाओं का अनियमित, अनियंत्रित विभाजन से होता है। यह भी अन्य कैंसर की तरह काफी खतरनाक है। इस कैंसर के बारे में 2 फरवरी, 2024 में अंत्रिम बजट घोषित किया गया। वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन के द्वारा भी इस कैंसर के बारे में विस्तृत चर्चा की गई थी। परंतु इस पर लोग जानने का प्रयास नहीं करते हैं। लेकिन हाल ही में एक महिला अदाकारा पुनम पांडे ने अपने मृत्यु का मजाक बनाते हुए इस सर्वाइकल कैंसर से लोगो को जागरूक करने का प्रयास किया। लोगों ने पुनम पांडे के मृत्यु की खबर से सर्वाइकल कैंसर के बारे मे जानने को उकसुक हुए।

अतः यह एक खतरनाक कैंसर है। हम सभी को इसे कैंसर से जागरूक होना चाहिए और हमारे आस पड़ोस के सभी लोगों को इस कैंसर से जागरूक कराना अति आवश्यक है। यह कैंसर HPV (पैपिलोमा वायरस) के कारण होता है। इसके लगभग 200 से अधिक वेरीअन्ट है तथा इनमें से ज्यादा खतरनाक वैरियंट 16 एवं 18 है। इसके फैलने का कारण एकाधिक सेकशुअल पार्टनरस, अशुरक्षित यौन संबंध, बहुत ज्यादा बच्चे पैदा होना, HIV इंफेक्शन, आदि है।

इनके लक्षण सेक्स के बाद रक्त का बहना, मासिक धर्म का सही समय पर न होना, योनि से रक्त स्त्रव के साथ बदबू आना, सेक्स के समय योनि में दर्द होना आदि इसके प्रमुख लक्षण है। अतः इसके निवारण के लिए उपाय Papsmear टेस्ट कराना चाहिए तथा इसके बाद HPV - DNA टेस्ट करना चाहिए एवं 21 साल की उम्र के बाद प्रत्येक 3 साल में एक बार जाँच कराना चाहिए तथा अधिक उम्र वाले महिला पहली बार स्क्रीनिंग टेस्ट 35-40 की उम्र में तथा दूसरी बार 50 की उम्र में कराना चाहिए।

इसके बचाव के अन्य उपाय है अपूर्ण सेक्स से बचें, Papsmear टेस्ट करवाएं। एक से अधिक से सेक्स संबंध न बनाएं, धुम्रपान से दूर रहे, यौन संबंधों के दौरान हमेशा प्रोटेक्शन का इस्तेमाल करे। अतः इस कैंसर से निपटने के लिए सरकार द्वारा 9-14 वर्ष तक की लड़कियों को Cervavac नामक टीका इन्द्रधनुष अभियान के द्वारा देने की घोषणा की गई है।

- दुर्गा प्रसाद मुण्डा
भूगोल, सेमेस्टर – VI

Excursion : Beyond Boundaries

किसान

हमने भुला है, किसी की मेहनत को
यूं तो कहते हैं, जान की बातें
कौन ही जाने, किसान की बातें
यूं ही नहीं, बनता अनाज
बारिश की आस मे, गर्मी की ताप में
ये तो पड़े है, बीच मझधार में
बूंद को तरसते है, सिंचाई को मरते हैं,
बाढ़ से डरते है, खाने को तरसते हैं,
तब जाकर सोने की मोती
लहलहाती है खेतों मै कौ
कौन ही जाने, किसान की बातें
हर एक निवाला, मिला है उनसे
जिसे हम, चाव से खाते है
आज की पिढी कहती है,
हमने तो ऑनलाइन खरीदा है
अरे पैसे से तो कोई मोल नहीं
यह तो अनमोल सोना है
कौन ही जाने किसान की बातें,
क्या तुमने किया है, किसान ये नाज
अरे जिसका काम उसी को साज़े
पर एक कदम तो, बढ़ाओ न
आओ करें किसान की बातें
यह पंक्ति दोहराव न
हमने भुला है, किसी की मेहनत को।

- प्रिया राज गुप्ता
भूगोल, सेमेस्टर – VI

संस्कृत में मां पर समर्पित श्लोक

१. 'यस्य माता गृहे नास्ति, तस्य माता हरीतकी।

अर्थ - हरीतकी मनुष्यों की माता के समान हित करने वाली होती है।

२. 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

अर्थ -जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

३. 'माता गुरुतरा भूमेरु।'

अर्थ - माता इस भूमि से कहीं अधिक भारी (श्रेष्ठ) होती है।

४. 'नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गति:।
नास्ति मातृसमं त्रांण, नास्ति मातृसमा प्रिया।'

अर्थ - माता के समान कोई छाया नहीं, माता के समान कोई सहारा नहीं। माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय वस्तु नहीं है।

५. 'मातृ देवो भव:।'

अर्थ - माता देवताओं से भी बढ़कर होती है।

६. 'अथ शिक्षा प्रवक्ष्याम: मातृमान् पितृमानाचार्यवान पुरुषों वेद:।'

अर्थ - जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य हो।

७. 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता यस्य से मातृमान।'

अर्थ - वही व्यक्ति मातृमान् अर्थात् माता वाला कहलाता है-जिसकी माता विदुषी और धर्म युक्त आचरण वाली होती है। तभी मनुष्य ज्ञानवान होगा।

८. 'आपदामापन्तीनां हितोऽप्यायाति हेतुताम्।
मातृजङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने।'

अर्थ - जब विपत्तियां आने को होती है, तो हितकारी भी उनमें कारण बन जाता है। बछड़े को बांधने में मां की जांघ ही खम्भे का काम करती है।

९. 'नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गति:।'
नास्ति मातृसमं त्रांण नास्ति मातृसमा प्रपा।'

अर्थ - माता के समान कोई छाया नहीं, कोई आश्रय नहीं, कोई सुरक्षा नहीं, माता के समान इस विश्व में कोई जीवन दाता नहीं।

- काजल महतो
संस्कृत विभाग।

लक्ष्य पर तू निशान रख

कुछ करना है, तो डट कर चल।
थोड़ी इस दुनिया से हटकर चल॥

लीक पर तो सब चल लेते हैं।
कभी तू इस इतिहास को पलटकर चल॥

बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के दाम कैसा?

जब तक ना हासिल हो मंजिल,
तो उस राह में आराम कैसा?

अर्जुन सा तू निशान रख।
मन में ना कोई बहाना रख॥

लक्ष्य सामने है,
बस उसी पे अपना ठिकाना रख॥

- तानिया कुमारी
इतिहास विभाग

"मेरी शख्सियत का शिखर बाकी है.."

चलना बस शुरू किया हूं,
ठहरकर कहीं जरा सा मेरा हवा भाँपना,
सोचो मत कि थम गया हूं !
अभी पूरा सफर बाकी है....

हौसलों का चरम देखा कहाँ तुमने,
बस अभी तो पांव फटे हैं,
दिन चढ़ने देखोगे जज्बा,
अभी तो तीनों पहर बाकी है...

इमारतें लिखनी हैं अनगिनत,
हर क़दम पर सफर के !
झुकेगी दुनिया कदमों पे मेरे,
मेरी शख्सियत का शिखर बाकी है..
मेरी शख्सियत का शिखर बाकी है..

- दयानंद सेठ
इतिहास, विभाग।

जिज्ञासा

सर्दियों का दिन था। रोज की तरह सुबह-सुबह सुरज की रोशनी में धूप सेंकते हुए। अपने खेत में खरपतवार को हटाते हुए, मैं और मेरे पापा से रोज की तरह कुछ न कुछ पुछती हूं।

मैं : पापा मैंने आज स्कूल में पढ़ा कि हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था, फिर हमारे देश के महापुरुषों को हमारे देश को आजाद कराने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा।

पापा : और क्या-क्या पढ़ा स्कूल में?

मैं : मैं स्कूल में और भी पढ़ी महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, सुभाष चन्द्र बोस, सुखदेव, राजगुरु, भगत सिंह जैसे महापुरुषों के संघर्ष से हमारा देश आजाद हुआ। हमारा देश आजाद हुआ तभी हम पढ़ पा रहे हैं, कहीं जा पा रहे हैं, घुम पा रहे हैं।

पापा : हां, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुखदेव, भगत सिंह के संघर्ष के बाद हमारा देश भारत आजाद हुआ।

मैं : पापा इंदिरा गांधी जवाहर लाल नेहरू की बेटी थी?

पापा : हां

मैं : तो इंदिरा को गांधी क्यों कहते हैं नेहरू क्यों नहीं?

पापा : कुदाली चलाते हुए, (मुझे बोले) पीने के लिए पानी ला दो।

मैं : पानी से भरे भारी डब्बा को पापा के पास लाते हुए, हम भी पियेंगे पापा .....।

पापा : पापा पानी पीते हुए, अब घर जाओ और स्कूल जाओ।

मैं : पहले आप बताइए इंदिरा को गांधी क्यों कहते हैं?

पापा : कुछ समय तक चुप रहे।

पापा : कल बताएंगे आज स्कूल जाओ।

मैं : कल दुसरा पुछेंगे बताओ न जल्दी से।

पापा : इंदिरा गांधी हिंदू परिवार से थी और मुसलमान परिवार से शादी कर ली थी जिससे नेहरू जी को समझ में बदनामी हो रही थी, जिससे हिंदू समाज और मुस्लिम समाज के बीच लड़ाई सी हो रही थी, एक दूसरे के बीच बात नहीं बन रही थी, जिसके कारण भारत की आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए लोगों को एकजुट करने में महात्मा गांधी को मुश्किल हो रहा था, इस कारण से गांधी जी ने नेहरू को समझाया और बोला इंदिरा को मैं अपना नाम दूंगा। और तब से इंदिरा को इंदिरा गांधी के नाम से जानते हैं।

मैं : चुप

पापा : चुप

मैं : पापा

पापा : हां

मैं : अगर आज के दिन कोई अपना छोड़ के दुसरे जाति में शादी करते हैं तो क्या होगा?

पापा : कुछ नहीं। चुप।

पापा : लेकिन हां, जाति समाज सबका अपना-अपना ठीक है.... और अगर ऐसा कुछ होता है तो लड़की को अपना समाज छोड़ना होता है।

मैं : क्यों

पापा : हमारा भारत पितृ प्रधान देश है। इसलिए।

मैं : चुप

पापा : हमारे देश में पिता के संपति का बंटवारा किया जाता है। और दुसरे देशों में माता के संपति का बंटवारा होता है, वहां मातृ प्रधान देश है।

मैं : पापा सबकी जाति अपने जाति समाज में बराबर का सम्मान है।

पापा : हां। सभी जाति का अपना-अपना विशेष योगदान है। हमारे देश में।

मैं : कैसे?

पापा : हम त्योहारों को मिल-जुल कर मनाते हैं, हर त्योहारों को मनाने में हर जाति, धर्म के लोगों का योगदान है, तभी हम त्योहार मना पाते हैं। किसी को त्योहार मनाने की खुशी होती है तो किसी को त्योहार में घरों को सजाने की वस्तुओं को बेचकर पैसे जमा करने की खुशी होती है। और त्योहार धूमधाम से मनाते हैं। एक त्योहार को मनाने के लिए सभी जाति, धर्म के लोगों का सहयोग रहा है। और इस तरह से हमारा देश महान है।

मैं : चुप।

पापा : हम भारतवासी सभी एक है।

मैं : अब मैं घर जाऊं?

पापा : हां जाओ

और मैं घर आ गई।

- कुमारी शकुंतला मुंडा

इतिहास, विभाग।

शांत हो जाओ

लोग क्यो कहते है, शांत हो जाओ,
तुम लड़की हो, किशोरी हो,
इतना चहकना ठीक नहीं है, शांत हो जाओ।

अरे, इतना उन्माद क्यों?
इतना हँसना ठीक नहीं
उछलना-कुदना ठीक नहीं
ज्यादा बाहर जाना ठीक नहीं
किसी अनजान से बात करना ठीक नहीं
अपने हक के लिए लड़ना ठीक नहीं
तुम लड़की हो, शांत हो जाओ॥

कब हमारा समाज आजाद होगा इन दकियानुसी विचारों से,
लड़कियों को दिल खोलकर अपनाएगा
इसे तो खुश होना चाहिए कि भारतवर्ष की
नारी शक्ति भी दुश्मन की नज़रों को नीची
रखने की ताकत रखती है।

ये उन लोगों के लिए है, जो हर बार हमें दबाते हैं,
जो हमें शात होने के लिए कहते हैं,
जिस दिन हम शांत हो गए ना,
ये जो आँगन है, चहकना बंद कर देंगे
कानों में 'लाडो' की आवाज गूँजना बंद कर देंगे
भाई के साथ खट्टी-मिट्ठी तकरार और मस्ती की आवाजें
बंद हो जायेंगी।

ये सब तो बंद होंगे ही हमारे जज्बात भी हमारे दिल के कमरे में बंद हो जाएंगे
जिस दिन हम शांत हो गए न याद रखिए आपका पूरा संसार शांत हो जायेगा और एक सुप्रसिद्ध कहावत है-

'हम जिस घर, जिस आँगन में पैदा होती हैं,
कहा जाता है, बेटियाँ पराया धन है,
जिस घर में हम शादी के बाद जाते हैं,
वहाँ कहा जाता है, पराये घर से आई है।'

तो नारी शक्ति मैं इतना ही कहना चाहुँगी कि, मस्ती करो,
लड़कियों, जब अपना घर होगा,
तब झाड़ू-पोछा करेंगे।
हम रहते हैं, एक आजाद देश में, जहाँ संवैधानिक आजादी हर किसी को है,
लेकिन सामाजिक आजादी इसे आज भी कुछ खोखले रूढ़िवादी हाथों में
थमा कर रख दिया गया है।

आजादी चाहिए सामाजिक कुप्रथाओं से
आजादी चाहिए दकियानुसी विचारों से
आजादी चाहिए खुलकर बात करने की
आजादी चाहिए अपने हक के लिए लड़ने की,
हाँ, आजादी चाहिए, इन सब से चाहिए आजादी।

मेरी इच्छा है, मैं वो दिन देखूँ जब समाज,
बिटिया को अपना गुरूर बनाए,
उसे 'चाँद' नहीं 'सूरज' बनाए ताकि कोई भी
आँख उठाकर उसे देखने की कोशिश करें तो
उसकी आँखे ही जल जाए
तब मिलेगी आजादी।
वास्तविक आजादी॥

- खुशी कुमारी
बी.ए. अर्थशास्त्र (2022-26)

पापा मेरे

पापा मेरे, कभी अपने बारे में भी बताओ ना,
सुनते हो हर परेशानी मेरी।
कभी अपनी परेशानी भी बताओ ना॥

आप पापा हो या हो कोई जादूगर,
कैसे मेरे बोले बिना हर ख्वाहिश पूरी कर जाते हो।
कभी अपनी ख्वाहिशें के बारे में भी बताओ ना॥

मेरी हर जख्म की दवा हो आप,
कभी अपने जख्म भी दिखाओ ना।
पापा मेरे कभी अपने बारे में भी बताओ न॥

आपसे सीखा है मैं हर मुश्किलों से लड़ना
तो खुद के बारे में बताने से क्यों डरते हो आप।
पापा, मैं अब बड़ी हो गई हूं,
एक बार बात कर तो देखो ना।
पापा, आप मेरी परछाई हो,
मुझे भी अपनी परछाई बनाओ ना॥

पापा मेरे कभी अपने बारे में भी बताओ न॥

- **रोनिता मुखर्जी**
बी.ए. सेमेस्टर V (हिंदी ऑनर्स)

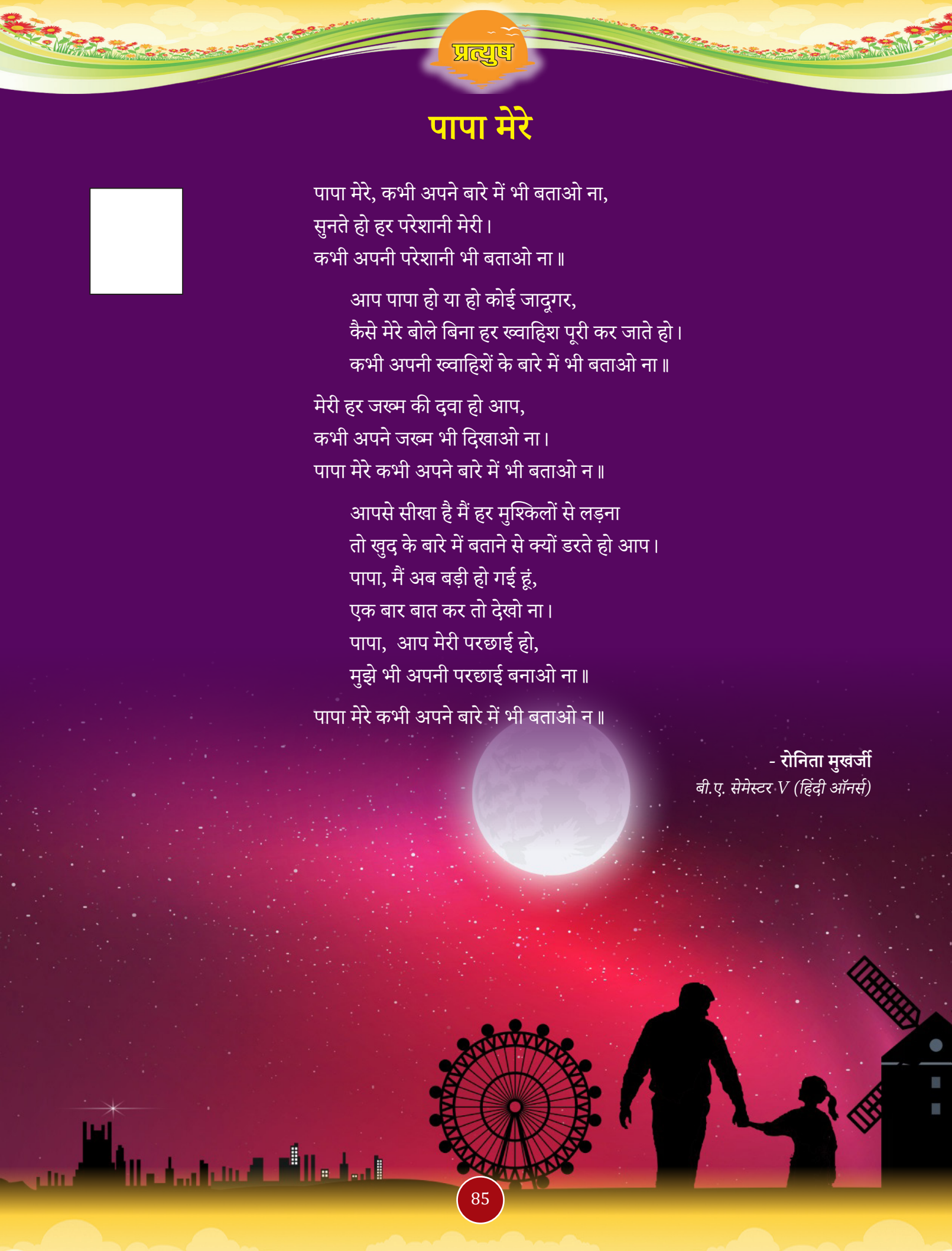

सफलतां प्रति

कष्टपूर्ण लोके आत्मानं उत्थापयतु।
सफलतां प्रति पदानि नूतनपरिचयस्य निर्माणं कुर्वन्तु॥
जगतः श्रृंखलाः भङ्ग्य मुक्तगगनं उड्डीयताम्।
कष्टपूर्ण लोके आत्मानं उत्थापयतु।

अस्मिन् सफलतामार्गे बहवः असफलताः भविष्यन्ति।
अधुना कवचं कृत्वा नुतनयात्रायाः निर्णय कुरुत॥
कष्टपूर्ण लोके आत्मानं उत्थापयतु।

न च अस्माकं पादौ श्रांताः भविष्यन्ति,
न च अस्माकं साहसस्य अभाव भविष्यन्ति।
जीवने किमपि प्राप्तुं इच्छां कृत्वा,
स्वस्य मनोबलं उच्चं स्थापयन्तु॥

- सृष्टि पाठक
छात्रा- संस्कृत विभाग

जननी जनम भूमि

जननी जन्मभूमि,
यश गावि पद चूमीं।
झूमे-झूमे करें जयकारे,
जय-जय जननी जोहारे।

खोलते पलक आंखि,
झूलते सतरंगा झॉकी।
कनक किरण पट तारे,
जय-जय जननी जोहारे।

हिम के मुकुट माथे,
नदी-नाला हार गहने।
समुद्र चरण पखारे,
जय-जय जननी जोहारे।

भांति-भांति खग, मृग,
शुक, पीठ देखें दृग।
जल, थल, नभ में विहरें,
जय-जय जननी जोहारे।

एक देह, प्राण एक,
लहू रंग लाल एक।
एक ज्योति जीवन उबारें,
जय-जय जननी जोहारे।

- सम्पत्ति कुमारी
छात्रा- संस्कृत विभाग

मेरा प्यारा महाविद्यालय

यह मेरा प्यारा महाविद्यालय,
नहीं मैं इसे भूल सकता।
माँ ने मुझे जन्म दिया,
और दिया ढेर सारा प्यार महाविद्यालय ने।

मेरा ज्ञान बढ़ाकर,
मेरा जीवन संवार।
खूब खेलो और पढ़ो तुम,
कहती हमारी अध्यापिका,
बड़े होकर प्रण तुम करना।

देश की सेवा करेंगे मिलकर,
कोई वकील, कोई देश का नेता,
कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर होगा।

भारत विश्व में बनेगा अव्वल,
जब हर कोई शिक्षित होगा।
यह मेरा प्यारा महाविद्यालय,
नहीं मैं इसे भूल सकता।

- मंजू कुमारी
छात्रा- संस्कृत विभाग

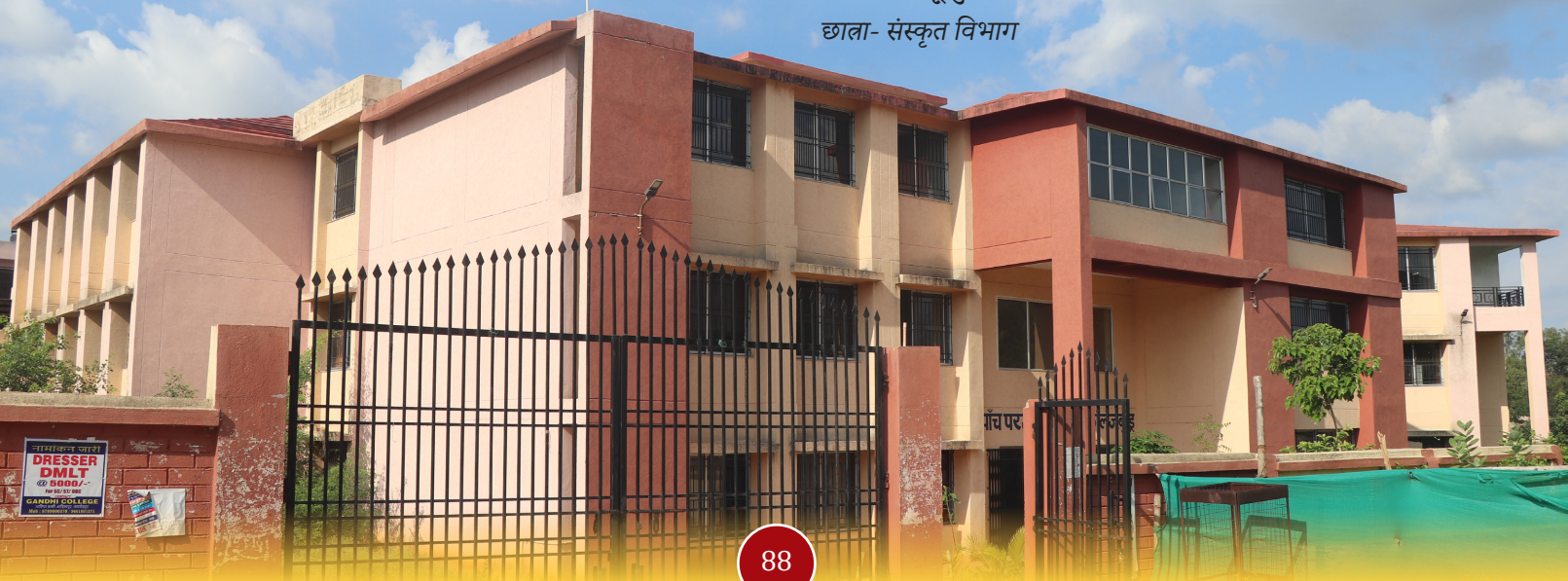

स्मरण

मैं विजय कुमार महतो, पिता यादव महतो पांच परगना किसान महाविद्यालय बुंडू रांची के संस्कृत प्रतिष्ठा का छात्र हूं। मुझे पढ़ाई के साथ साथ खेल में भी रुचि थी। हमारे महाविद्यालय में बहुत सारे खेल होते थे। मैं सभी खेलों में भाग लेता था, लेकीन मुझे अधिक रुचि फुटबॉल खेल में थी, और मैं पूरे लगन के साथ खेलता था। और मैं अपने महाविद्यालय कि तरफ से अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता एवं अन्य प्रतियोगिताओं चयनित हुआ । मैं बहुत सी जगहों पर खेलने गया। सबसे पहले मैं अपने महाविद्यालय कि तरफ से मांडर कॉलेज मांडर में खेला, यहां मेरा अच्छा प्रदर्शन रहा, जिसमे मेरा चयन रांची यूनिवर्सिटी रांची के फुटबॉल टीम में हुआ, और 15 दिन का कैम्प हुआ, विश्वविद्याल कि ओर से पहला टूर्नामेंट इस्ट जॉन इंटर यूनिवर्सिटी फुटबॉल टूर्नामेंट BIT Mesra Ranchi में खेला, और राँची विश्वविद्याल रॉची टीम लगातार 8 मैच जीत कर आने वाले इस्ट जॉन से ऑल इंडिया इंटर जोनल यूनिवर्सिटी फुटबॉल टूर्नामेंट में क्वालीफाई किया। यहां मेरा पहला अनुभव बहत अच्छा रहा, उसके बाद हमलोगो को 10 दिनों का कैंप लगाया गया, उसके बाद युनिवर्सिटी ऑफ कोटा राजस्थान में होनेवाली ऑल इंडिया इंटर जोनल फुटबॉल टूर्नामेंट खेलने के लिए गया। वहाँ पर हमलोगों का अच्छा स्वागत किया गया, वहाँ पर हमलोगों ने तीन मैच खेले। हमलोगो की टीम खेलो इंडिया में क्वालिफाई नहीं कर पाई लेकिन वहाँ पर विभिन्न राज्यों से आए हुए कोच, खिलाड़ियों से मिलकर बहुत सारी नई-नई खेल की तकनीक सीखने को मिली।

फिर उसके बाद 2023 में युनिवर्सिटी खेल गुमला में आयोजित किया गया, जिसमे पांच परगना किसान कॉलेज बुंडू रांची, की टीम ने भाग लिया। जिसमे दो खिलाड़ी (विजय कुमार महतो और उपेंद्र हजाम) का चयन रांची विश्वविद्याल कि टीम में हुआ, फिर हमलेगो को 15 दिन का कैम्प कराया गया, उसके बाद होनेवाली इस्ट जॉन यूनिवर्सिटी फुटबॉल टूर्नामेंट कोलकात्ता खेलने ले जाया गया, अब मैं बहुत जगह पर खेलने जाया करता हूं और आगे भी खेलना चाहता हूं और अपने देश, कॉलेज और अपने पिताजी का नाम रोशन करना चाहता हूं, जैसा कि आप सभी को पता है खेल के साथ साथ पढ़ाई भी बहुत ही आवश्यक है, पंरतु अपने मैच ओर पढ़ाई को एक साथ लेकर चलना थोड़ा मुश्किल था पर मुझे पांच परगना किसान कॉलेज के शिक्षको ने बहुत ज्यादा मदद की। कभी कभी मैच के कारण मेरा क्लास छूट जाता था, तो जो मेरे शिक्षक शिक्षिका थे, वो जो क्लास में हुआ था, वाह बाद में टाइम निकल कर बता देते थे, अगर हमारे शिक्षकों का प्रोत्साहन नहीं होता तो शायद ही मैं इतना सारे बड़े बड़े टूर्नामेंट खेल पाता, ओर स्नातक पूरा कर के परास्नातक डिग्री ले पाता।

मेर जीवन के इस सफर में जितने भी शिक्षकों शिक्षिकाओं ने साथ दिया और सहयोग किया उन्हें मैं दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं।

- विजय कुमार महतो

एम.ए., संस्कृत

"साहित्य समाज का दर्पण है, कैसे..?

साहित्य समाज का दर्पण है। यह हिंदी साहित्यिक परंपरा में गहराई से व्याप्त एक महत्वपूर्ण विचार है। साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं है, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है। साहित्यिक कृतियाँ समाज के संघर्षों, संवेदनाओं और परिवर्तनशीलताओं का अद्भुत चित्रण करती हैं, जिससे यह समाज का दर्पण बन जाती हैं।

साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि वह समाज के विभिन्न आयामों को उजागर करता है। साहित्यकार अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिदृश्य को अपनी कृतियों के माध्यम से व्यक्त करता है। शेक्सपियर की नाटकों से लेकर प्रेमचंद की कहानियों तक, हर साहित्यिक रचना अपने समय के समाज का एक ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण भारत की गरीबी और सामाजिक असमानता की गहरी छाप देखने को मिलती है, जबकि शेक्सपियर के नाटकों में तत्कालीन इंग्लैंड की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का बारीक विश्लेषण मिलता है।

साहित्य समाज के संघर्षों और समस्याओं को भी उजागर करता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से साम्राज्यवादी शोषण और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाई। टैगोर की कविताएं और गांधीजी के लेख समाज में सामाजिक और राजनीतिक बदलाव की दिशा में एक प्रेरणा बनीं। इस प्रकार, साहित्य सामाजिक आंदोलनों का हिस्सा बनकर उन्हें आकार देने का कार्य करता है।

साहित्य समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भी समीक्षा करता है। यह समाज की अच्छाइयों और बुराइयों की आलोचना करता है और समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। टॉलस्टॉय की "वार एंड पीस" में युद्ध की क्रूरता और उसके प्रभावों का गहराई से विश्लेषण किया गया है, जो समाज को युद्ध के विनाशकारी प्रभावों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार, उर्दू साहित्य में भी समाज की धारणाओं और आदर्शों पर विमर्श किया जाता है, जिससे समाज को अपनी गलतियों को पहचानने और सुधारने का अवसर मिलता है।साहित्य का समाज पर एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि यह सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सहायक होता है। एक राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर को साहित्य के माध्यम से संरक्षित किया जाता है।

भारतीय लोककथाएँ, मिथक, और काव्य परंपरा इस बात का उदाहरण हैं कि कैसे साहित्य समाज की सांस्कृतिक पहचान को संजोए रखता है। साहित्य केवल वर्तमान समाज को ही नहीं, बल्कि पूर्वजों की सांस्कृतिक विरासत को भी जीवित रखता है।साहित्य समाज की बदलती धारणाओं और मूल्यों को भी दर्शाता है। समय के साथ समाज में बदलाव आता है और साहित्य इन बदलावों का दस्तावेज़ बन जाता है। आधुनिक साहित्य में आज की सामाजिक चुनौतियों, जैसे डिजिटल युग, ग्लोबलाइजेशन, और सामाजिक न्याय की मांगों पर ध्यान दिया जा रहा है। यह साहित्य समाज की मौजूदा परिस्थितियों को समझने और उनका विश्लेषण करने का माध्यम बनता है।

अंततः, साहित्य समाज का दर्पण इसलिए है क्योंकि यह समाज के विविध पहलुओं को एक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। यह न केवल समाज की वास्तविकता को प्रकट करता है, बल्कि समाज की आत्म-चिंतन की प्रक्रिया को भी प्रोत्साहित करता है। साहित्य के माध्यम से हम अपने समाज की पहचान, समस्याएँ, और संभावनाओं को समझ सकते हैं, और इस प्रकार साहित्य समाज के सच का प्रतिबिंब बनता है।

- उमेश कोयरी

छात्र - स्नातकोत्तर हिंदी विभाग।

दलित विमर्श और ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन'

दलित विमर्श एक महत्वपूर्ण सामाजिक और साहित्यिक अध्ययन है, जो जाति व्यवस्था की असमानताओं और दलित समुदाय के संघर्ष को समझने की कोशिश करता है। भारतीय समाज में जाति आधारित भेदभाव और असमानता की गहरी जड़ों को उजागर करने में दलित विमर्श ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विमर्श का एक प्रमुख उदाहरण ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' है, जो दलित समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत करती है और जाति व्यवस्था के खिलाफ एक सशक्त आवाज के रूप में उभरती है।

दलित विमर्श जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ विचार और संघर्ष की एक धारा है। यह विमर्श दलित समुदाय के अनुभवों, पीड़ाओं, और उनके सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक अधिकारों पर केंद्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में जाति आधारित असमानता को समाप्त करना और दलित समुदाय को एक समान अवसर प्रदान करना है। दलित विमर्श साहित्य, सामाजिक विज्ञान, और राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और इसने समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

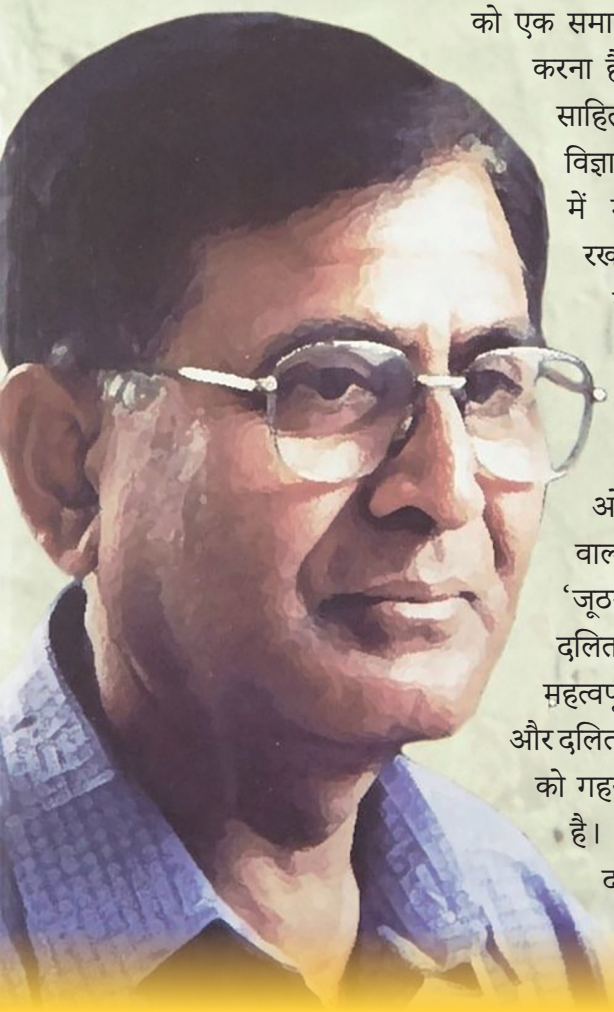

ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' (1997) दलित साहित्य का एक महत्वपूर्ण योगदान है और दलित विमर्श की समझ को गहराई प्रदान करती है। यह आत्मकथा दलित समुदाय की संघर्षमयी जिंदगी और जातिगत भेदभाव की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत करती है। 'जूठन' वाल्मीकि की व्यक्तिगत यात्रा की कहानी है, जो एक दलित समुदाय के सदस्य के रूप में उनके अनुभवों को साझा करती है।'जूठन' में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने जीवन की कष्टकारी परिस्थितियों और जातिगत भेदभाव को आत्मकथा के माध्यम से उजागर किया है। यह पुस्तक समाज में व्याप्त जातिगत असमानता, भेदभाव, और दलित समुदाय की सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करती है। वाल्मीकि ने अपनी कहानी के माध्यम से यह बताया है कि कैसे दलितों को समाज के विभिन्न पहलुओं में उपेक्षा और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

पुस्तक में वर्णित घटनाएँ जैसे जाति आधारित भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार, और अस्पृश्यता की कहानियाँ पाठकों को गहरी संवेदना और समझ प्रदान करती हैं। वाल्मीकि ने उन क्षणों को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है, जब वे जाति के आधार पर अपमानित होते हैं और समाज में उनकी स्थिति को बार-बार चुनौती दी जाती है।'जूठन' दलित विमर्श के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, जो दलित समाज की वास्तविकताओं को सामने लाता है। इस आत्मकथा ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक मजबूत आवाज बनाई है और दलित समाज के संघर्षों को व्यापक रूप से दर्शाया है। वाल्मीकि की यह रचना दलित साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी है, जो सामाजिक बदलाव की दिशा में एक प्रेरणा का कार्य करती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' दलित विमर्श का एक प्रमुख उदाहरण है, जो दलित समाज की वास्तविकताओं को स्पष्ट करती है और जाति आधारित असमानता के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाती है। इस आत्मकथा ने साहित्यिक और सामाजिक परिदृश्य में दलित मुद्दों को महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। 'जूठन' केवल एक व्यक्तिगत आत्मकथा नहीं, बल्कि समाज में जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष की एक प्रेरणादायक कहानी भी है।

- सीताराम महतो
छात्र- हिंदी विभाग।

नारी शक्ति को सम्मान

WOMEN'S CELL
महिला प्रकोष्ट
P. P. K. COLLEGE BUDNU
अंतर्राष्ट्रीय
महिला
दिवस
2023

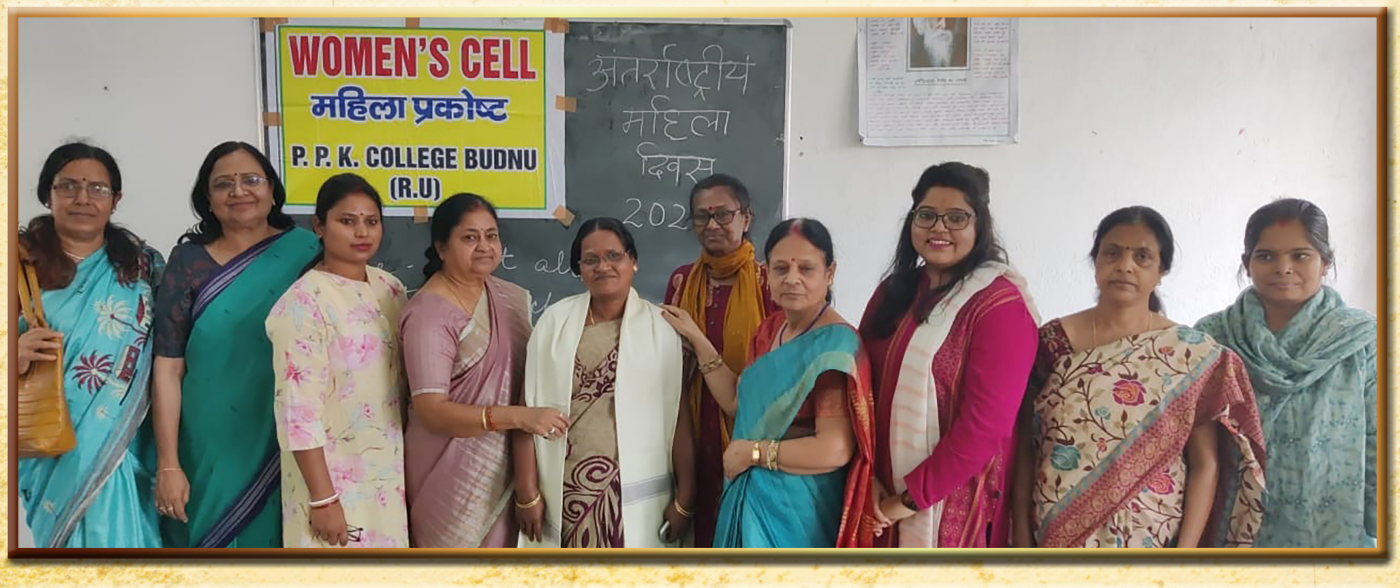
WOMEN'S CELL
महिला प्रकोष्ट
P. P. K. COLLEGE BUDNU
(R.U)
अंतर्राष्ट्रीय
महिला
दिवस

बेटी बचाओ
पढ़ाओ
International Women's Day
P. P. K. College Bundu
WOMEN'S CELL
महिला प्रकोष्ठ
GPS Map Camera

खेल जगत

जेटे सिंगि

बा चंडुः तयोम तेगे जेटे एटेगोअ। जेटे एटे:जन रे जिरुब होकाओः अ। उसगुम किचिरि ते उयुन बगेओ: अ। जेटे सिंगि तेबअः जन रे एटअः गे अटकरो : अ। सोबेन जिउ उम्बुल गेको दंड़अः। गड़ा, लोर, बांदा, पुकुरि, डाढ़ि, डोबाको रअ: दअः अंजेत एटेगोःअ लंडिया तिकिनोः लोः गे ओ अः ते हिजुः गे सनङअः। बलबल ते होड़मो लुम चबाओः अ डेबेल तेअः दअः को का नमोः अ इसु संगिन आते दअः को अगुएअ। खाने-खाने दअः गे तेतङअ। होटोः रोड़ोतन लेका अटकरो:अ। दअः तेतड. ते सोबेन जिउ अकल-बकल तन को रिकाओ: अ। दिरिको लोलो अ। होरो को लोलो अ। समा कटा सेन इसु बलया। दरु रे कुद को रेङको रअ: एअ। जुलतन सेंगल लेका गोटा लोलोःअ। पतड़ा को उरुड़ :अ। दारु रअ: बलेः सुड़ा सकम को गोसो: अ। तसद् रुड़अःको जेटे लोलो ते बोजो अ। उरिः केड़ाको अतिङएअः ककको नमेअ। चेंड़े चिपुरुब दारु जुम्बाड़ा कोरे दुब हपेअकन को तइना। ओड़ोः दिनको लेका काको चेरेबेरेया। कुला, मिंडि, तुयु, हड़ोगा जेटे तन रे काको उडुङओःअ। सेताको जेटे लोलो तेगे लेए को उडुङअअः। सकोर तनको सयदेअ।

जेटे सिंगि लोलो गेए होयोया। सड़िमा रअः केचोः को लोलोःअ। पका - ओड़अः रअः सड़िमा को लोलोःअ। ओड़अः बितर रे दुब का अङगवा। होयो सअ : कोरे को इयुरेना। निदा रचा को रेगे को गितिः। उयुना। समा होड़मो गेको गितिःअ। दुबअकन रे गमचा कोते को जिरेना, पंखा कोते को टपाना। लोलो का सातिङओः इमतङ होड़ोको निदाओ को डेबेला। शहर रेन होड़ोको दो निदा-सिंग पंखा लतर रेगे को तइना। रेयड़ होयो उडुङओः मिशिन ओड़अ: रेको चलवाकअः। बिजली सेनोः जन रेदो सोबेन नेअको समा गेअ। हतु कोरे बिजली अउरि गेको इदि ते अः एअ। एनाते पंखा रअ: होयो का नमो:अ। हतु रेदो सिंगिओ जेटेअ। निदा हुडिङओः अ। दुडुमो का असादिअ। जेटे सिंगि पुरअ: गे लंडिया टोरो:अ। सिंगि उम्बुल कोरे गितिः को: गे मोनेअ। तुतुकुन दअः कोगे नू अङगवा। बा चंडुः बा लेन दारु कोर जोओ अ। उलिको जरोम एटेगो: अ | कंटाड़ा को तेयरोःअ। लोवा, कुदा, बारु, जोजो, सोसो, तिरिल, तरोब को जरोमो:अ। कोरोंजो, सरजोम को मताओ : अ। मदुकम को उयुः एटेगोः अ। जेटे सिंगिओ तारा मारा दारुको बाओ अ। अड़ांदि बा, हुंदि बा, गोलनचि, तोवा बा, हरि बा जन बुड़जु बा जन सिरमा पुरअः गे दुडुमा। नेअ बा दो गलङ तद लेका लेलो अ तोवा बा गोटाए मरसल गिड़िअ। बाको लेल लेरे जी रड़े: गे अटकरो:अ। सरजोम दारु आते सरजोम जो को उयुगो: अ। रेंगे: रबङ होड़ोको नेअ जोमे नतिन ओड़अः तेको हलङ इदिअ। एदेल बुरम को ओटडओ: अ। कुटुंड़ि बइ मेनते को हलङ अ। गड़ा लोर दअः लोयोङको रेको टेंवाएअ। तयर, सुकु, ककरु, करला, जिंगी,जोलबाटा, जनुमबाटा (बेंगड़ा) एमन को कुआ बकिड़ि कोरे को रोआएअ। अयुब सा जनव को पटवएअ। का पटव केरे दो गोजो अ। जेटे सिंगि गे सांगा को गचिअ। मियद् खित्ते का आसुला। उतुएअः को खिति लेरे अकिरिङ केआते पयसाओ नमो: अ। कुआ बकिड़ि को जा'टाएअ। पुटुसु अंकोवरको तेको जा'टाएअ। जेटे सिंगि उरिःको अड़अ : (डिलव) कोअ। काको गुपिओ अ। जाएअः खिति जेताएअः खिति तेगे को बोलोअ। एन जेटे खिति को होरो होबाओ: अ। ने होड़मो नतिन जेटे बुगिन गेअ। जेटे लोलोत बलबल उडुङओ अ। बलबल होराते होड़मो रअः किसिम रोगो को लिंगि उडुङओः तना। जेटे ते बांदा, गड़ा, ओडो: दोरेया रअः दअः ते सुकुल (भाप) बइओः तना। ने दअः सुकुल (भाप) तेगे ला'रि तेयरोःतना। ला' रि बइको : रे एनङ दअ: ए गमाएअ। दअः काए गमाके रेदो खिति को गोजोःअ। जेटे सिंगि गे कुआ को उरेअ। कलकल जेटे तन रे उरए कुआं को रअः दअ जेता इमतङ का अंजेदो:अ को मेनेअ। गुरिः सारा को लोयोङको तेको इदिअ। पिड़ि कोरे कोदे डाइ को बइअ। जेटे सिंगि गेको हेर पुनाएअ। लोयोङकोरे को हेर जेटेअ। हेर जेटेतद् बाबा रोगो काए नमेअ। जेटे सिंगि होयो दुदुगर हिजुःअ। होरसालियद् को लेलो: अ। दअः मिसा मिसाए गमाएअ। अरिललोए अरिलएअ। दारु को होयोते होचागो: अ। अरिलते खिति को बगड़वो:अ। जेटे इमतङगे, निदा का छो कोअ। सिंगि को हका कोअ। हकन बुरु लेल तेको सेनोः अ। जेटे सिंगि ओंडोका को रअः कजि को खूब अयुमो अ। निदा नुबअः सेन होराको बोरोःअ। मिसा मिसा होनको अदो अ। ने लेकाते जेटे सिंगि रे दुकु ओड़ोः सुकु बरानअः गे मेनअः।

- बनवारी मुंडा
मुंडारी विभाग

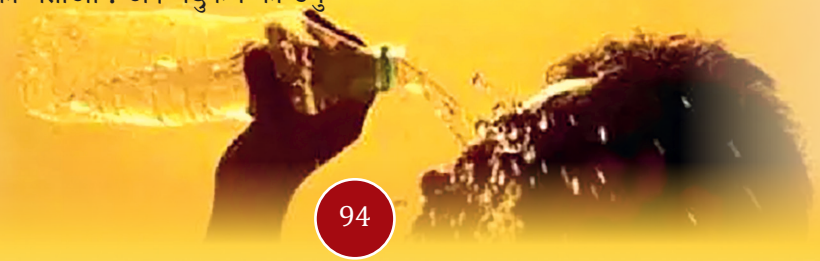

आबुआ दिसुम रे मुइः कोआ हिजुः

आबुआ दिसुम रे सिदा उतर दो आबु मुण्डा होड़ोको च आदिवासी को हिजुः लेना, एन रेओ गे आबुआ दिसुम दो सिदा दिकु को पुंडि होड़ोआ ति रे ताइ केना एन समय आबु मुण्डा को पुरअः गे डोण्डोबु ताइकेना। एन समय आबु दिकु को च राड़ि बाड़ि को पुरअः गे को होसोड़ो जाद्बु को ताइकना। एन समय कोरे आबु मुण्डा को पुरअः गे रेंगे राबाङ ते बु बलए तन बु तइकेना आद् आबु तअः रे जोमेआ मेन्ते चाउलि दालि का नामो समय रे आबु दिकुको रिंड़ि काड़ि केआते बु आसि जद् कोबु ताइकेना। एन रिंड़ि काड़ि तद चाउति दालि रिंड़ि हाल मेन्ते बु सेनोः चि आबु पुरअः गे को होसोड़ो जद् बु को ताइकेन। एन समय गेल पुइला चाउलि आउ तअः रे गेल आपि पुइला कोतअः गेल मोड़े पुइला को मेताबु तन को तइकेना। गेल मोड़े पुइला ले ओमा लेद पेआ मेने रेओ गे बुगिन काजि गे बु मेन जाद्बु ताइकेना चिआचि आबु दो हिसिब किताब दो आबुआ मा. `लोङ रे बोगोमन ओल गे काए ओल लअः। आबु दो कुरू मुटु कामि केआते जोम नु तन मनोआ को बु ताइकेना। कामि कामि ते जोम तन होड़ो कोबु ताइकेना। कामि बु नमेरेदो बु जोम जाद् बु ताइकेना कारे दो समा लाइ गेबु गिति हापेन तन बु ताइकेना। राड़ि बाड़ि होड़ो को पुरअः गे को बलय जद् बु को ताइकेना, गोटा सिंगि कुरू मुटु कामि केआते मिद् पुइला चाउलि को ओमाबु तन को ताइकेना। दिकु को ओकोआ कामि को काजि बु तन को ताइकेना एन कामि सेकेड़ा बु मोने जाद् बु ताइकेना चिआचि आबु दिकु को सिदा पुरअः गे बु बोरोआ को तन बु ताइकेना। आबु मुण्डा कोरे पेड़ेः रेआ कामि च हुड़ि का ताइकेना आबु दो च मुण्डा को कुला को बाराबरि पेड़ेः को ताइकेना चिआचि आबु मुण्डा कोरे जेता लेकान सेंड़ा को का ताइकेना आबु कुरूमुटु जाति को बु ताइकेना। बिर बुरू को दोंदो मेन लेरे एना को दोंदो लेकान मनोआ कोबु ताइकेना, एन समय रे आबु तअः रे दो जेता लेकान पुंजि गे का ताइकेना। एन समय आबु दो साउ को गे मरङ पुंजि होड़ो बु मनातिङ जद्को बु ताइकेना। आको एटअः दिसुम कोआते चाउलि, दालि, बुलङ, सुनुम, चीनी गुड़ एमन को आगु जाद् को ताइकेना एन समय रे एन गुड़ च चीनी कोरे मुइ को गुड़ च चीनी जोम मेन्ते एन गुड़ चीनी कोरे को ताइन तन को ताइकेना। एन गुड़ चीनी को लोः ते साउ को एटअः दिसुम कोआते को आगु जद् को ताइकेना। आबु दो डोंडो मुण्डा को एन साउ को एटअः दिसुम कोआते आगु तन सुनुम, बुलुङ,

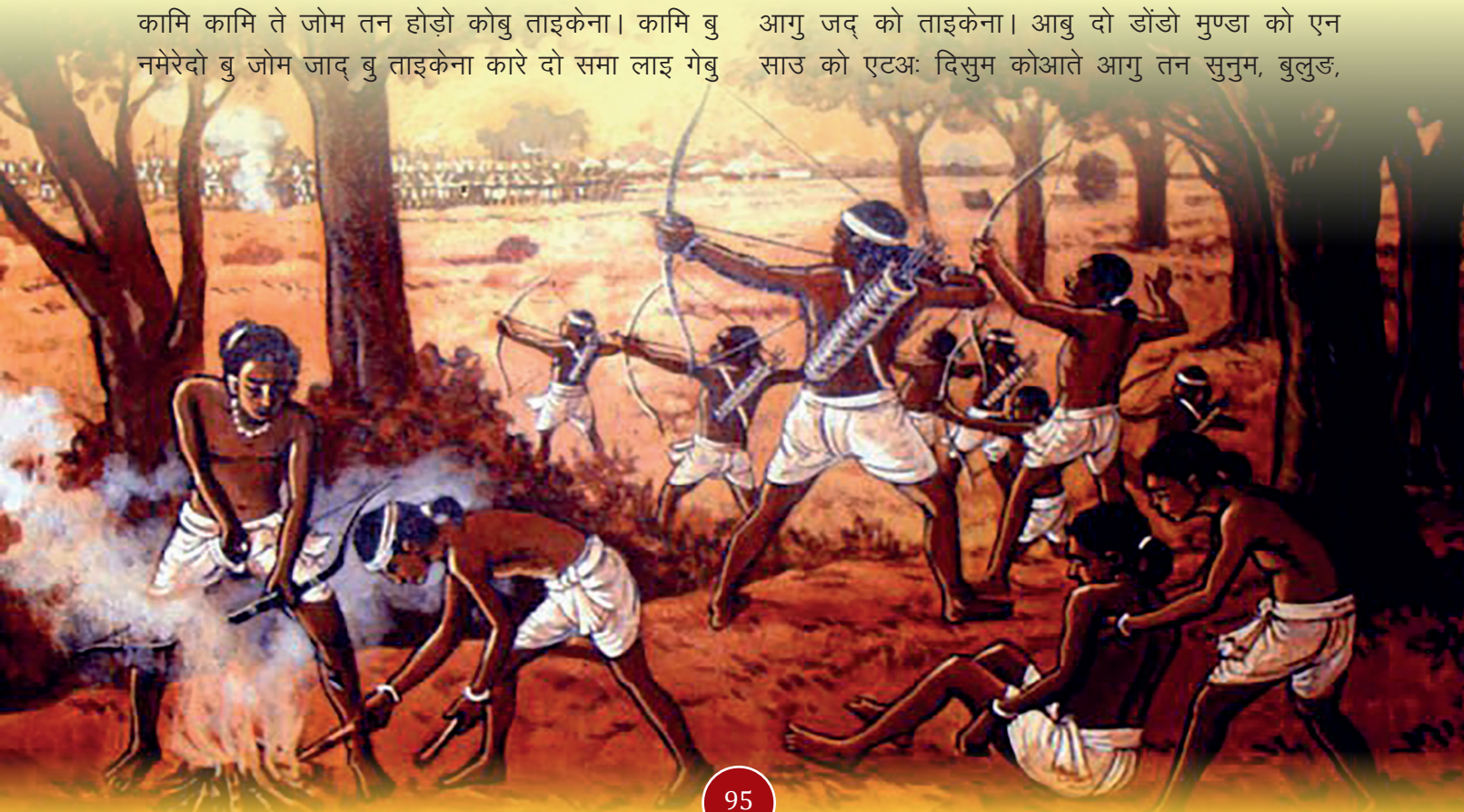

चाउलि, दालि, गुड़, गोतो, चीनी को एन साउ को तअः ते बु किरिङ जाद् बु ताइकेना। एन गुड़, गोतोम आद् चीनी को बु किरिङ जाद् बु ताइकेना मुइः को ताइना एन मुइः को गुड़ को गोतोम कोरे मुइः को ताइना एन मुइः को गुड़ चीनी आद् गोतोम को लोः ते मुइः को बु किरिङ आगु तन कोआ एना मेन्ते नअः दो हड़म होड़ो को काजिअः चि ने मुइः को दो ने दिसुम ते दो साउ को आगु तन कोआ को मेनेआ। नअः जाकेद गुड़ च चीनी रे मुइः को ताइन गेआ। मुइः को चीनी च हेड़ेम जोमेआ को जोम पुरअः गे को जोरेआ। तारा मारा होड़ो दो को मेनेआ चि काया निकुआ दो मु गे जिलिङा एना मेन्ते कोतअः रे चीनी कोतअः रे गुडु च कोतअः रे हेड़ेम जोमेआ जोगाव काना एन माजा लेका लेलेअः दो एन हेड़ेम को नअः दो को मेनेआ चि नअःदो दिसुम मुइः तेगे हाम्बल काना। चिआचि नअः दो गोटा दिसुम एन साउ को आगु तन मुइः को गोटा दिसुम किरिङ चल किरिङ ते गोटा दिसुम को पसराव जाना निकुगो मनोवा होन को लेका गोटा दिसुम बिर कोरे बेड़ा कोरे गोटा पिड़ि कुटुड़ि रे मुइ गे मुइ का पेरेः काना को। नअः दो च सिदा ते गे एन मुइः को साउ को एटअः दिसुमअः ते को आगु तान कोआ एनाते चिलका साउ को नअः जुगु रेन साउ को जेटे लोलो च राताङ जाताव काको टोर जादा आको कामि रे पुरअःगे आयार मेनअः कोआ। आको कामिअः कान को ताइना। एन लेका गे एटा दिसुम ते आगु तन मुइः को एन साउ को लेका निदा सिंगि कामिअ कान, सेना कान को ताइना। इनकु तअः रे जेता लेकान लागा को बानोआ एन मेन्ते नअः तेओ को काजिआ साउ को को च दिकु को ष्एला या नि दो मुइ को लेका कामि आचुआ काष रूडु रेआ दो लुतुम गे काए लुतुमेआ एन साउ कोआ सरप गे जाअः मुइ को टोगा काना एना मेन्ते सिंगि बुड़ा सेना कान को ताइना, नअः गे दुबा कानेम लेलिआ नाःगे गितिः तन सिंगि बुड़ा कामि तान ओको रे सेनतन गेम लेल कोआ। इनकु दो साउ को तम सकि कोआ चि सिदा जुगु रेन ओसुर कोतअः रे जेतन मुंडि गे काम नम कोआ, चिआचि सिदा रे हड़म होड़ो को काजिआ कदा चि ओसुर को ओड़ाः को बाइ रे मुसिङ मुसिङ रे ओड़ा काको पुराओ केरे एन ओड़ाः रे काको ताइन ताइकेना एन लेका गे मुइ को आको आकोआ ओड़ा बाइ रे पुरअः गे कुरू मुटु को जोरेआ आकोआ होड़ोमो आते मपारङ मपारङ हसा को हेयोल उडुएआको ओड़ा आउरि को बाइ पुराओ लेरे काको होका एनाते निकु दो साउ कोताः को सकिरे माजा चि ओसुर कोताः जेताए काको दाड़िताना। आञआ हिसाब च आञआ उडु ते दो ने मुइ को आबुआ मुण्डा दिसुम रेन आदिवासी को जमा तनको चिलका चि आबुआ दिसुम रेन आदिवासी को चिल्का गोटा दिसुम को पसराव काना एनका गे ने मुइ को गोटा दिसुम को पसरव काना। आबु आदिवासी को चिलका हाटि किसिम रे बु हटिङ काना एन लेका गे एन मुइ को पुरअः गे संगि तअः रे को हटिङ काना। आदिवासी को चिल्का मुण्डा, हो, खडिया, संताड़ा एमन रे बु हटिङ काना एन लेका गे मुइ जाति को टंटो, रूलि, लुपुः एमन जाति कोरे को हटिङ काना आद् आबु मनोआ को चिलका हेन्दे, एसेल मेनअः बुआ एन लेका गे मुइ जाति को हेन्दे एसेल मेनअः कोआ। साउ आर आबु आदिवासी कोआ जागार बिचार ओड़ोः मिसा बु रूड़ा लेआ। आबु आदिवासी को डोंडो गेबु ताइकेन रे ओको समय आबु रिंड़ि काड़ि केआते जोम तन बु ताइकेना एन समय दिकु को साउ को आबु तअः रे अकिरिंङ मेन्ते एटअः दिसुम कोआ ते बाबा को चाउलि को आगु जद् को ताइकेना आद् आबु एन दिकु दुआर च साउ दुआर सेन केआते बु किरिंङ जाद् बु ताइकेना आद् काबु किरिंङ दाड़ि होड़ो को दो एन मपराङ साउ को दिकु कोतअः रे रिंड़ि काड़ि केआते बाबा चाउलि बु आगू जाद्बु ताइकेना आर एटअः दिन कोरे एन रिंड़ि काड़ि हाल मेन्ते बु सेनोः तन ताइकेना। आञआ उडुः हिसाब ते दो नअः जाकेद् एन रिंड़ि काड़ि को हल हल ते बु इतु केदा चि नअः जाकेद आबु खेति बाति जद् बाबा को दालि को हाटि किसिम रेआ जोमे जिनिस को नअः साउ को दिकु कोता रे बु आकिरिंङ जादा आर एन दिकु को जामा हुड़ि केआते मपराङ मपराङ गड़ि कोते एटअः दिसुम कोरेन दिकु कोतअः को अकिरिंङ को इदि जादा आर एन दिकु को आको दिसुम रेन गरिब होड़ो कोतअः को अकिरिंङ जादा आर के जोम जादा एन लेका गे सिदा दो आबु एटअः दिसुम रेआ जोमेआ को, नुएआ को बु जोम नु केआते बु सेंड़, पेड़ेः जाना ना दो एटअः दिसुम रे दिकु को आबु तअः रे आसराय रे मेनअः कोआ।

— गणेश मुण्डा
मुण्डारी विभाग

जेटे सिंगि (गर्मी का मौसम)

जेटे सिंगि बेसे लोलो रेअः दिन तनअः जेटे सिंगि अप्रैल आते ऐटेगोअः अर जुलाई सनते तइना।जटे सिंगि,सिंगि सेकड़ाए तुरोअः अर सेकड़ा काए असुरोअः। एना मेनते सिंगि मरंङ ओड़ो नुबअः हुड़िङ ताईना एना मेनते होड़ोको जेटे सिंगि मरंङ सिंगि को मेताईअः। जेटे सिंगि चिलका तेबागोअः एनका गे जोरतेए जेटेअः अर सोबेन सअः ओतेको ओड़ो होयोओ लोलोगे तइना।

जेटे सिंगि जोरतेए जेटे तारे ओड़ागाते बहार उड़ुङ का मोनेया। जोर जेटेतारे होड़ोमो आते बलबल उड़ूङओ अर रबल सोनोओ को सुति किचिरि रेअः को तुसिंङ मोनेअः। ओड़ो: कोरे होड़ो को पंखा ओड़ो कुलार को चलावया जेटे दिन जोर जेटे रेअः ते छुट्टी को नमोअः। इसकुल,इतुसाई,ओड़ो गे एनकान सरकारी ओड़ो पराइभेट एमन कामि को छुट्टी गे ताइना। नेकान छुट्टी कोरे अपनअः ओड़ा रे ताइन रेअः सोमय को नमोगा।आर हातु ओड़ा: रेन होड़ो कोलो बेसे दिन कोआते का लेपेलाकान होड़ो कोलो लेल लेपेल होबाओअः। जेटे सिंगि,सिंगि हासुर जनाते होनोर बेड़ा इसु सुगड़ा अटाकरोअः जेटे सिंगि उलि ओड़ो तरबुज लेकान जो को नमोअः जेटे सिंगि तुतुकुन जिनिस को जोम मोनेअः जेटे सिंगि हातु-हातु आइसकिरिम अकरिङ होड़ोको होनोर बेड़ाः अर होन को ओड़ो मपरंङ होड़ोकोओ आइसकिरिम को जोमा।जेटे सिंगि संगि जेटे जानरे मरंङ दारु कोरा: सकम को उरुड़ुअः अर हुपड़िङ-हुपड़िङ दारु को जेटे ते गोसोअः अर तारा लेका दारु कोदो जेटे तेगे गोएउतारोअः।जेटे सिंगि दःअः जोर तेताङअः। जेटे दिन जोरेएः जेटे रेअःते गड़ा,बंदा,डोबा एमन को अंजेदोअः अर उरि मेरोङ केड़ा एमन जनवार को दःअः नु रेको सदाओअः चियाचि मिनता-मिनता गे दःअः को ताइ बेड़ाना। होड़ोको जेटे सिंगि रोजो को रेड़ाना मुसिंङ-मुसिंङ दो बरसा हबि को रेड़ाना। हातु कोरे जेटे सिंगि नेगेको ठनावएअः चिलका चि जेटे सिंगि सोबेन होड़ोको कुपोलो सेनो रेअः सोमय को नाम दड़िया। जेटे सिंगि हातु ओड़ाअः कोरे नेग कोरे सोबेन लेकान नेग को होबाओआः चिलका, अड़ंदि,तुकुईलुतुर,गोएभोज ओड़ो गे ने लेकान नेग कामि को जेटे सिंगि होबाओअः। जेटे सिंगि देहात रेन होड़ो को नवा दारू सुड़ा जुमबड़ा दारु बुटा कोरे को दुब बेड़अः मेनदो शहर रेन होड़ोको पंखा ओड़ोः कुलार कोरा होयो तेको होयो बोसाना। जेटे सिंगि मनोवा होड़ोको बेसे किसिम रेअः दुकु ओड़ो सुकु को नामेअः। जेटे सिंगि हातु कोरे छौः मेला रेअः दिन तनअः। जेटे सिगि तारा होड़ोको सुकु गेको अटाकारेया मेनदो तारा होड़ोको दुकुओः को अटाकारेया। ने लेका जेटे सिंगि ताइना।

- हरि मुण्डा
मुण्डारी विभाग

जारगि चण्डुः आद् उरिः गाइ को

जेटे कालकाल ओड़ो होड़मो रेया: बाल - बाल चबाओ लो: गे जारगी होयो दुदुकार लो हिजु ताना आर जि रे सुकू नामो रेआ: सोजोको।

ओते -हासा जेटे ते रोओड़ आकान्ते टिपा: दा: नाम जालो: गे तासाद - रूड़ा एमान को जि बिरीदो: रेआ: मोने को साब रूआड़ा जादा।रोड़ गाड़ा - नाई को मड़िते आपान होरा को बाइ एटेया।रिमिल साड़ि जाद चि सिमबोगा नागेरा साड़िकेआते हिजु: ताना लेका: आटकारो: आ। सारते गे चि दा: दो सिमबोगा बाराबारी गे । चिआ: चि दा: कारे मानोआ जिवन रेआ: उड़: का दाड़ी ओवा: । सारतेगे जारगी चाडु साल रे ओड़ो: दोबारा जोनोमेए ओमाबु ताना। जारगी कोरे खेती- बाती का आर चास का रेदो रेगे आकाल गे टोओ रताम:। जारगी चान्डु: तेबागेलो: गे चोके - सोसोराए: को दुरांग जालो: जारगी को दारोमताना मेन्दो जारगी चिमिनाम सुकुबु नाम जादा इमिनाग गे दुकुओ। ने सोमाए बु आयुम जादा चि बिहार उत्तर प्रदेश एमान राइज कोरे बाड़ी ते हातु सहर आतुओ: तना। चिमीनाम होड़ो को गोजो: ताना। नेआकोरे पुरा: तेदो आबुओ: दुसिदार मेना: बुआ। ने लेकाते जारगी चाडू आबु नागेन सुकू आउ जादा दो एटा: सा: दुकुओ। मेनदो आबु नागेन जारगी चाडु जारगी दा: रा: जारूडु मेना: गेया आर ताईनो गेया।

गाई उरी: आबु नागेन एंगा बराबरी तानको।गाई कोआ: देगातेगे तिसींग होड़ो सियु -चालु : आर आसुल - आपासुल रेआ: होयोको साब दाड़ितादा।ना: को पारि आतेगे गाई उरी: आबुलो: मेना: कोआ आर ताइन गेयाको।एना मेनतेगे आको नागेन आबु सोहराई पोरबो बु मनातिंग ताना।

हिन्दू ग्रन्थ कोरे गाई बारे रे इसु माइनसाम नुतुम आउआकाना ओड़ो : कामधेनु नुतुम तेको टोओरो: ताना। गाई तोवा होंड़ोमो रे पेड़े: आर रोग कोआते बानचाओरे इसुगे कामिरे हिजु: ताना।आकोआ: सोबेन जिनीस आबुआ: कामी रे हिजु: ताना। तोवाते गोतोम, दहीं आर आकोआ: सोबेन जिनीस आकोआ: राचा सा: को रानू आन जिनीस को गे।गुरी दो रोकोम कामी रे हिजु: ताना। सारा रे आर पुरा: तेदो ओड़ा: राचा आकोआ: गुरी तेगे सापा - सुथरा जोगाव: ताना। आकोआ: गुरी: ते मानोआ: बारीगे का बोंगा सनते को पारचिओ: ताना ओड़ो: दो गाई गोए जान तायोमते आकोआ: ऊर कामी रे हिजु: ताना। चपल,जुता,बेग,थाइला: आर आबु होड़ोहोन को नागेन डुलकी नागेरा को तेआरो: ताना।आबु एना साड़िकेआते रसिका रासबु नाम जेदा। एनामेन्ते गाई उरी: कोआ: मनारंग आबुआ: नागेन पुरा: गे मेना।आबु के आकोआ: मनारंग ओड़ो: पुरा: हाराआकाना चिआ: चि ने सोमाए लोयोग - आड़ी कोरे पुरा: ते साल्फेट सारा को दुलो: तना आर एना मेन्ते रोकोम रोगोंको आबुरे आर ओते कोरेओ पासराओ: तना। एनामेन्ते गाई उरी: को जोगाव - जोतोन दो पुरा: गे जारूडु मेना।

- गुरूदयाल मुण्डा
मुण्डारी विभाग

बा पोरबो

झारखण्ड रेन आदिवासी कोआ: मुद पोरबो रे बाओ मियाद ताना: । मुण्डा हो बिरहोड़ एमान को नेआ बा पोरबो संताड़ा को बाहा पोरबो आर उरांव को खछी को मेता:। नेआ प्रकृति पोरबो ताना: आर बोसोंतो रितु हिजु: सोमाए कोरे मानातिडो़: ताना। नेआरे सारजोम दारू रेआ बोंगा, धोरोम आर चालि लेकाते मानातिंओ: ताना झारखण्ड रे ने पोरबो फागुन पूर्णिमा आते एटे: जानाते मिद चांडु: हाबि: मानातिडो़: ताना। रांची आस - पास कोरे नेआ चइत शुल्क पक्ष रेआ: आपिमा ने मानातिडो़: ताना। बोंगा हुलाड ओड़ा: - राचा सापाओ: ताना।

बा हुलाड पांडा़ए काटाबेआ। दांगाड़ा कोलो: बाजाड़ा लो: ते सारनाते सेनो: जानाते पांड़ा एनता: रे सारजोम कोतो जोगाव केआते: बोंगाएआ। सिंदुरि टिकाओआ चाउलिजाड़ हेरोआ आर सिमको। बोंगाओ: ताना । बोंगा तायोमते पांड़ा आपिआ काड़ांसा चाटु रेआ दा: ए लेलेआ । जुदि चाटु रेआ: दा: पेरेकानगे मेना: इमताड़ नेआ मानातिड़ मेना: चि गामा मजागे पुराओ:आ । जुदि दा: घाटावजाना दो दा: गामा कोमोआ को मेनेआ । बोंगा तायोमते सिम आर चाउलि को लेटेएआ । नेआगे परसादी ताना: । हातु रेआ: सोबेन ओड़ा: रे बेगार भेदभाव ते पांड़ा हातु होड़ोकोलोए: सेनोआ आर बाएं: होरसोद कोआ । माराड हातु ताइनो: रे एटा: हुलाड बा होरसोद नेग होबाओआ। बा होरसोद तायोमते पांड़ा सोवेन कोआ: सुकु- रासिका रेआए गोआरिआ। ने सोमाए समुचा दुनिया पर्यावरण सोंकोटो रे कोटोडा़काना। नेकारे दारुसिड़को रेआ: बोंगा बुरु हाड़ाम होड़ो कोआ: सेंड़ागे काजिओगा। बा पोरबोए उडु रिकाजादबुआ चि दारु बु रोआएआ ओड़ो: दारुबु बानचाओएआ । नेआ रेगे आंबुआ: भालाइ मेना:।

- कार्तिक मुण्डा
मुण्डारी विभाग

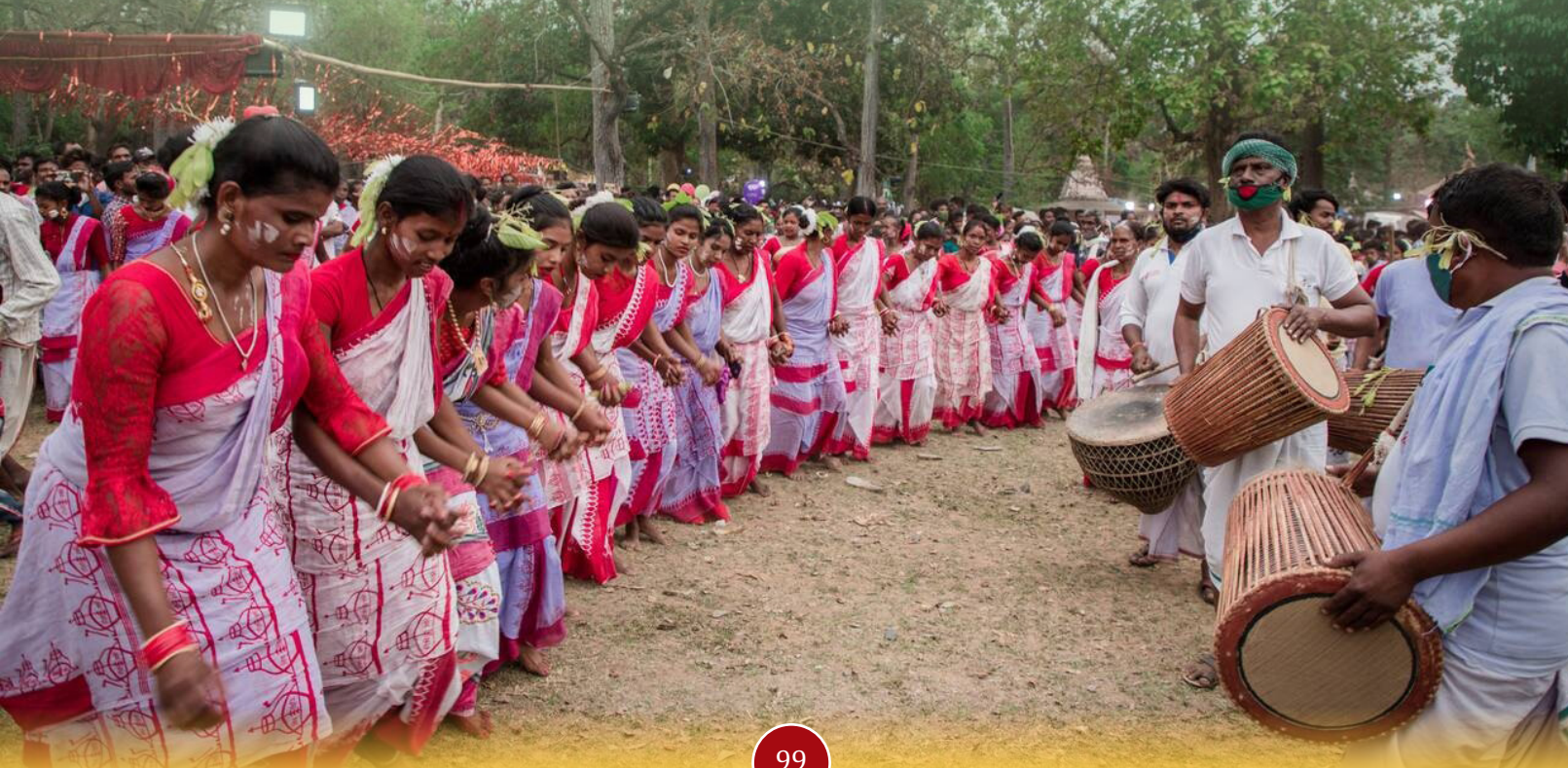

बिर अबुआ पुंजि

बिर रे जोतो लेकान दारू मेनागा। दारू तेगे बिर बइआकना, जो को जोमजद दारू को रे तिरिल, तरोब, सोसो, जोजो, सिंजू, कुदा, लोआ, अंड़ि, सरजोम ओड़ो मदुकम एमन को मेनअः। बिर अतोम नोः कोरे उलि, कंटाड़ा, डाउ ओड़ो जोजो को नमोआ। तारामारा को हुतिया तारा दो काको हुतिया। केटेः दारूते ओड़ाः बु बइतन तेआ। सरजोम, कंटाड़ा, नीम, हरि, रूता, करम, तेले, सेकरे, कसोमबरू ओड़ोः बारू दारूको रे ओकोअ ते धरना बइओ तना। ओकोअ ते बता ओकोअ ते चौकाटा ओड़ोः बता गेबु बइजदा। ने दारू को तेगे यल, एसंडि, अराँड़ा ओड़ोः गाडि, सगिड़िको बु बइजादा। दारू को हुड़िङ मराङ तइना। सोबेन दारू मिद्गे का हराओःअ। ओकोअ दो ओसर गे हराओअ ओकोअ दो मुलिगे। बड़े दारू हेसअः दारू ओड़ो बारू जुमबड़ाओअ। सरजोम, करम, एदेल ओड़ोः कसोमबार दारू मुलिते हराओआः। पुरअः का हराओ दारू को रे माटा, इचअः, तुङुसिंङ, करकटा, बिर, कुदा, सपारूम, सेरालि अड़अः, पलाटि, रेंगे बनम, बिर कद्सोम, सरम लुतुर, हुटर बा को मेनअः। बिर रे हटिकुटि नाड़ि को मेनअः, नाड़ि, बांदु नाड़ि, रूङुङ नाड़ि, नाड़ि मुरूद्, बोंगा सरजोम हुरमेड़ेद, हुंदि बा, सेयाड़ि नाड़ि, पलांडु, सेता होन को सेंगेल सिङ, इः तोरोङ, चटु लुतुर एमन ओड़ोः गे एटअः एटअः नाड़ि को मेनअः। सान आउ कुड़िको नेअको गे बयर को बइअ। नेअ कोते गे सान को तोल केआते ओड़अः तेको दुपिल आउइअ। पुटुस बर किसिम रेअः मेनअः। पुंडि पुटुस जनुमोःअ। अरअः पुटुस का जनुमोःअ। पुटुस सेकेड़ा गे हाराओःअ, नेअते सेकेड़ा गुटुःअ। दारूको दो सकम ते ओड़ोः ।ओकोअ ओकोअ दारू रअः सकम को हुपुड़िङ गे तइना। राइ सकम, डाउ सकम मपरङ गे तइना ओड़ोः नीम सकम, जोजो सकम हुपुड़िङ गे तइना। तारामारा सकम दो जुरूङु के चपुअः। मियद मियद दो हसारद् गे ताइना। अपन अपन दारू रअः बकलअः जुदा जुदागे लेलोआ। बकलअः ओकोअ दारू रअः दो मोटो गे तइना ओकोअ रअः दो एतङ गे तइना। बिर रेअ दारू को दो इसु पुरअः कमिको रे हिजुः तना। जुलजद् सान दारूः को आते गेबु नमजदा। जो, बा, अड़अः एमन को दारू तेगे बु बोसाओ तना। अबु कबु जोमजद् तेअः उरिः केड़ा, मेरोम को जोमजदा। ओड़ोः कसोमबर जो मेरोम को जोमजदा। मेरेल, रोला, लुपुङ जो कोते रनु बइओः तना। सिङ अड़अः सेरालि अड़अ, माटा अड़अः पुटकल अड़अः होड़ोको गेबु इसिन जदा। राइ बा, हुटर बा, बुङुजु बा कोबु जोम जदा। बिद रे किसिम रअः संगाको नमोःअ। हड़द बोओः, मेरोम तोवा, हसेयोर संगा को उर के आते जोमोः तना। मदुकम दो बिर दारू गे, मदुकम ते चिमिन होड़ोको असुल तना। कुंइडि सुनुम मदुकम तेगे नमो तना। नीम जङ, बारू जङ, कोरोन्जो जङते सुनुम बु लेनजदा। बकअः, बारू, मुरूद्, कुटि, रूता ओड़ोः हेसअः दारू को रे एड़ें कोबु चलजद कोअ। हतनाअः दारू कोरे लुमङ को असुलो तना। गुंगु आद् चुकुङु दो रूङुङ सकम तेको बइजदा।

बिर को बनचाओ मेन्ते नअः समए सरकार केओ जरूङु चंगा रकब लगातिंङा। वर्तमान समए रे आदिवासी वर्ग होड़ो को बिर बुरू बनचाओ मेन्तेओ आंदोलन जदा को। चिआचि आदिवासी को इतुआना बिर बुरू का ताइ जान रे जिदन हम्बलओआ। नअः समए रे हटि कुटि रोकोम ते दिसुम लोलो ताना आद् कार्बनडाइआक्साइड, कार्बनमोनो आक्साइड एमन होयो को संगि ताना। निआकोते जलवायु रेओ असर होबा ताना। ले जदा बु निमुः रे समए रे गामा जारगि का होबा ताना। चसा बासा कोउ सिदा लेका का होबा ताना। रतङ बुरू रअः रतङ कोउ नअः दो जेटे ते लिंगि ताना एनाते जालाकार रअः दअः पेरे ताना। जलवायु वैज्ञानिक होड़ो लेकाते दो जालाकार आतोम ते मेनाः सहर को, हातु को 2050 ई0 आस पास कोरे डुबाओआ को मेन जदा। एना मेन्ते आबु सोबेन होड़ो को बिर बुरू बनचाओ रअः कोसिस लागातिंङा। दारू को संगिते संगिते रोआ लगातिंङा।

- रिता कुमारी
मुण्डारी विभाग

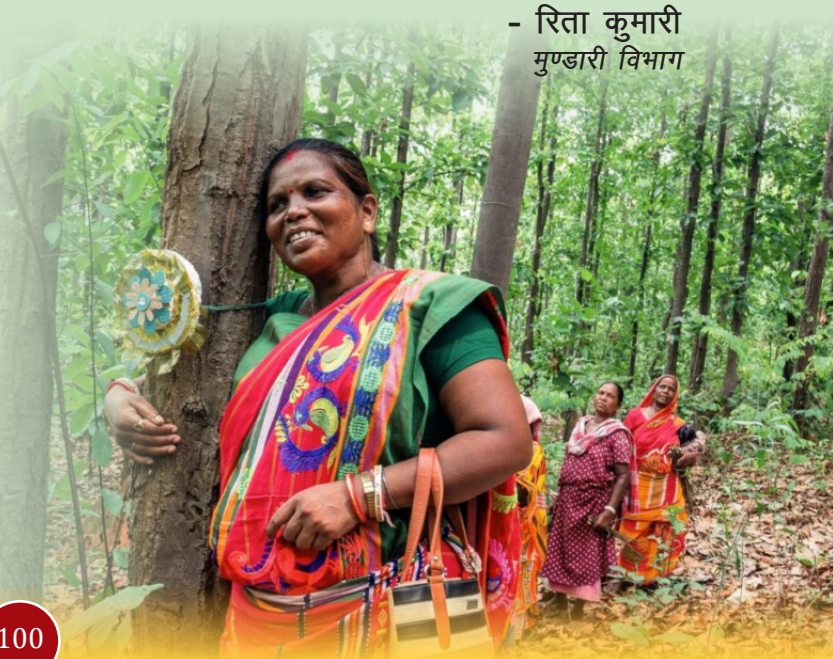

सिद्धू कान्हू

संथाल दिसुम दो बीर बुरु गाड़ा नई ते दिसुमन दिसुम तनअ: ! संथाल दिसुम दो आदिवासी को ताईनो तन दिसुम तनअ: ने संथाल हातू दिसुम दो लग- भग १७९० ई० आते १८१० ई० आते डी डूंगुरी तद हातु दिसुम तनअ: संथाल दिसुम दो दिकू को (दामिन ए कोह) को मेता तन ताई केना ! नेया नुतुम १८२४ ई० रे एटे: लेना ! ने संथाल दिसुम रेगे आदिवासी कोआ: ओड़ा रे बारिया हागेया किन जोनोम लेना ! एनकिन आबु सिद्धू - कान्हु मुर्म बु मेता किन ताना ! सिद्धू - कान्हु ताकीना सार कापी रआ: गोपोए लेल केयाते दिकु को गोली बंदूकू समते को उसर रूड़ा जद ताई केनाA उपुरुम & सिद्धू कान्हु मुर्म ताकिना: जोनोम हातु दो भोगनाडीह तनअ: इनकीन मियाद संथाल आदिवासी ओड़ा रेकिन जोनोम लेना ! नआ: जो की झारखंड राज्य साहेबगंज जिला बरहेट प्रखण्ड रे मेनागा ! सिद्धू मुर्म आ: जोनोम - ई० १८१५ रे होबा लेना आद कान्हु मर्म आ: जोनोम - ई० १८२० रे होबा लेना ! संथाल दिसुम रे होबा लेन गोपोए रे ओड़ो बारिया हागेया किन देंगा किन ओम लआ: इनकिना नुतुम दो चांद मुर्म आद भैरव मुर्म ताई केना ! चांद मुर्म आ: जोनोम दो - १८२५ ई० आद भैरव मुर्म आ: जोनोम दो १८३५ ई० रे होबा लेना ! ओड़ो: इनकिना अलावे रे बारिया मिसिया किन ताई केना ! फूलो आद झानो मुर्म ! ने ६ हागेया मिसीया कोआ: अपुतेया नुतुम दो - चुन्नी माझी ताई केना ! जोनोम टयद। ने ६ हागेया मिसीया ताकोआ: जोनोम हातु दो भोगनाडीह झारखंड राज्य साहेबगंज जिला बरहेट प्रखण्ड रे होबा लेना ! गोपोए। सिद्धू - कान्हु ताकीना १८५५-५६ रे ब्रिटिश सत्ता साहू को बेपारी को जमीनदार कोआ: सादाओ दासा को लेल केयाते मियाद गोपोए किन एटे: केदा किन ! एन गोपोए रआ: नुतुम दो संथाल बिध्रो कारे हुल आन्दोलन रआ: नुतुम ते साकी जाना ! संथाल बिध्रो रआ: ककला दो ने लेक ताई केना - रिकायेमे कारे गोजोमे दिकू को अलेया ओते हासा बागे तापे ! सिद्धू सोबेन माझी हागा मिसी को सरजोम दाड़ा कुल केयाते संथाल गोपोए रे जमान मेनते: काजी कुल केदा ३० जून १८५५ ई० रे भोगनाडीह रे संथाल आदिवासी कोआ मियाद दुनूब होबा जाना एन दुनुब रे ४०० हातू रेन होड़ो को लग- भग ५०००० होड़ो को सोतोओ संगोमेन जाना ! एन दुनुब रे राजा सिद्धू , मंत्री कान्हु आद चांद, सेनापति भैरव साला जाना ! संथाल गोपोए भोगनाडीह आते एटे: जाना आद सार कापी तेको एटे: केदा! गोनोए: :- ने गोपोए रे सिद्धू - कान्हु ताको काको धाड़ी जाना चिलका ते ची सिद्धू - कान्हु ताको कापी सार तेको गोपोए तन ताई केना ! सिद्धू को सब किया आद पंचखटिया जगह ता: रआ: बाड़े दारु रे १८५५ ई० रेको हाका गोए: किया ! एना दारु नआ: जकेद पंचखटिया तआ: रे जीदा कान गेया ! आद कान्हु दो भोगनाडीही रेगे को हाका गोए किया नआ: जकेद सिद्धू - कान्हु ताकीना कामी को संथाल आदिवासी कोआ: जी रे जोगावा कन गेया !

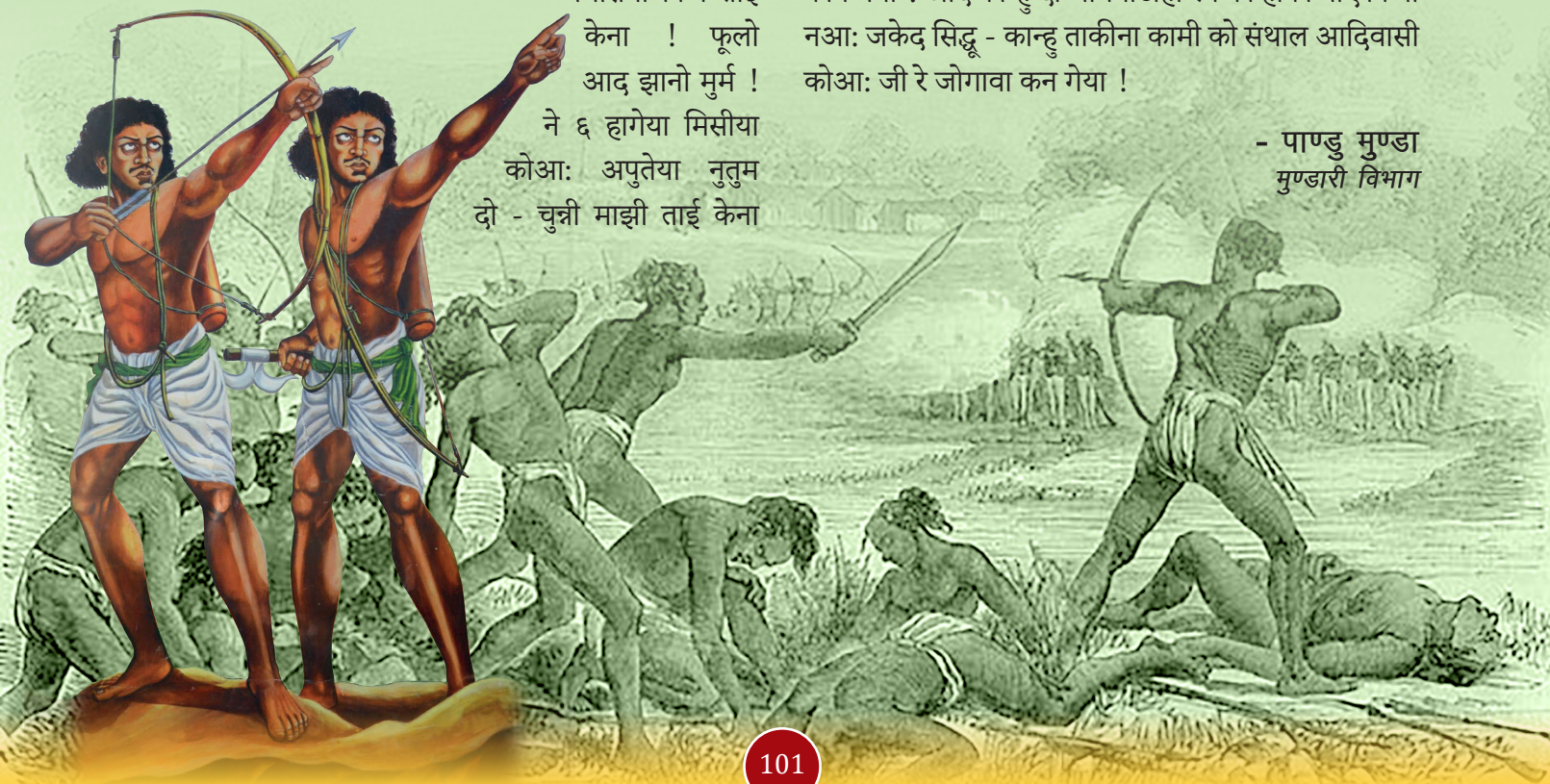

- पाण्डु मुण्डा
मुण्डारी विभाग

झारखण्ड रे इनितु रेआ: मनारां[3]

आबुआ: झारखंड राइज खान_ खदान बिर बुरू, खाजनाते पेरे: आका ना! नेआ दसुम रेआ: किसांड़ा राइज ताना:। मेनदो सोबेनाते तायोम रे मेना: । नेआ रआ: सोबेन को आते मराड. का रानइनितु रेआ: घाटि ताना:। एनामेनते तिसिड. एओनेन रेआ: जारूरत मे ना:। आपना उनुरुम बाइ रेआ: जारूड़ु मे ना:। आपान उनुरूम बाइ रेआ: जारूड़ु मे ना:। इनितु रेआ: घाटि रआ:ते होडो़को रोगाओ: ताना। आको जान ता रेआ: गे दा: को नू जादा। मांडि- उतु सापा काको जोगाव जादा। होड़ोमो मजा काको जोगाव जादा। ए नाते बालाए रेको टोगो: ताना। रोओगो जान रे हातु रेन सोका-देंवड़ा कोआ: पांसे रेको टोगो: ताना आर जी को आद जदा।

झारखंड रआ मूल आपासुलो: तेआ: दो खिति गे ताना:। मेनदो इनितु का रेआ: ते पुरना लेकातेगे को चास आउ ताना ए नाते खिति मजा का होबाओ:ताना। जुदि होडो़को इनितु आकान को ताइना दो हासा रे सोना को नाम दड़िआ:। आ बआ: राइज रे इसु पुरा: उरि :-केड़ा को मे ना: कोआ मेनदो रोओगो ते इनकु:को चाबाओ: ताना। बचा नचाओ काको दाड़िओ: ताना। नजरे इसु पुरा गोनोड.न रेद रानु को मेना: , एना का उरुमाकान रआ: ते फायदा का नामो ताना। रेद रानु को मेना:, एना का उरुमाकान रआ: ते फायदा का नामो ताना। नेरे एंड़े को पुरा: को आसुल दाड़िओगा मेनदो एनरेओ फायदा का नाम दाड़िओ: ताना। इनितु रेआ: माना राड. ओड़ो: गे हाराओ:आ चिमताड़ चि आबु आपान हक रेआ: बारे रेबु जागा रेआ। नावा बाइ आकान झारखंड राइज रे उनुबार रेआ: होरा लेल नामो: ताना। सरकार सागाते इसु रोकोम जोतना को सेसेन ताना मेनदो आम जनता हाबि: का सेटेरो: ताना। एनामेनते हातु होड़ो को उनुबार रेआ: होरा रे इमताड. को सेन दाड़िआ: चिमताड़ हाबि: आको काको ओल पढ़ाओ। इतुसाइ इसकुल (विद्यालय) इतुसाइ, इनितु रेआ: टायाद ताना:। एनता: रे पड़ावतान ओड़ो: पड़ावतान को सेंड़ा को हाटिड. जोम ताना। मिआद होन, ना: दो नुनु बागेकेलो: गे सेंड़ाए जारूड़ुओ: ताना। एंगा: कोरोड. रे इनि: जागार, सेन ओडो़ होड़ोए चिना जातकों। एनामेनते को मेनेआ चि ओड़ा : गे होन कोआ: सिदाउतार इतुसाइ ताना: ।

हुड़िड. हाराओ: तान उपुन मोड़े सिरमा लेका होबाओ: तान चि होन बानि इतु नंगेन इसकुल को कुलोआ: । बानि लो: टुड. आर तायोमते जागार को इतु जादा। इतुसाइ: रे पड़ावतान को, मिद, बार, आपि उपुन ओड़ो: आएआर सा: रेआ: इनुसाइ को पुथि लेकातेओको ओमजाद कोआ।सातेते होन कोआ: होड़मो माजाताइनो:का मेनते इनुड. कोरेओको जामा जादकोआ। इतुसाइ रेआ: तेनेबा: गे ताना: चि होनको आपान ओड़ा:, समाज ओड़ो: दिसुम रेआ: बारे रेको इतुइका। लेका-लेनेका मेनते गणित को इतुओ: ताना। दिसुम रेआ: इतिहास, भूगोल ओड़ो: विज्ञान बारे रे इतु केआते सेंड़ा को हारा का मेनो: ताना। एनकागे ने सामाए दो तकनीकी सेड़ाओ: होन सामाए रेगेको नामेका मेनते कमपयूटर, ओड़ो: एटा: तकनीकी सेंड़ा को ओमो:ताना। होनको हाराजानाते मिआद माजा होडो़ए बाइ दाड़िओ: का आर समाज, दिसुम बारे रे उड़ु दाड़िका मेनओ इनितु जारुड़ु मेना:। ने सामाए बु लेलेजाद गेआ हातु हातु, टोला-टोला इसकुल खोलावाकाना। सरकारा:उड़ु मेना चि गोटा राइज, दिसुम रेन सोबेन होडो़को सेंड़ा ओ:का। एना मेनते इतुसाइ रआ:जारूड़ सोबेन को नांगेन जारूड़ु गेआ।

- बेरोनिका चुटिया पुर्ती
मुण्डारी विभाग

दारू रोआ

दारू रोआ रे होड़ो जाति कोआ पुराः गे संगि लाभ मेनअः। दारू को रोआ लेरे आबुआ प्रकृति रअः संतुलन बइया कन गे तइना। दारू रोआ आबुआ जीदन रे सुकु को आगुएआ। भारत देष रे बारि दो का गे ओड़ोः पुराः दिसुम रे दारू को रेया विसेस टायद मेना। नेया लेलो तन प्रकृति दो दारू कोते गे सोभा कना। नेया लेलोः तन दारू कोते गे आबुआ सुकु ओड़ोः मानव होड़ोमो को बुगिन लेका तइनो तना। दारू रे तेगे ऑक्सीजन होयो बाइओ तना, आद् ने होयो आबु सायद रे बु आगु जदा। दिसुम रे नअः समय कार्बन डाइऑक्साइड हटि कुटि ते अड़ागो तना। गड़ि ते, कारखाना ते, जुलाः ते, अपिर काल ते, बस, टरक, टेम्पु, रेल एमन ते कार्बन डाइऑक्साइड बइ तना। एन कॉर्बन डाइऑक्साइड होयो होड़ो च जीव जन्तु कोआ मेन्ते हानिकारका तना, एन कॉर्बन डाइऑक्साइड होयो दारू तेगे ऑक्सीजन होयो रे बदलि रूड़ा तना। अगर दारू को गे का तइन जन रेदो आबु मानव को ओड़ोः एटा जीव जन्तु को जेताएओ काबु ताइन दाड़िया। एना मेन्ते सोबेन कोआ मेन्ते दारू रअः लाभ मेनअः।

दारू रोआ दो आबु बर किसिम लेकाते बु रोआ जदा बु। मोद किसिम लेकाते दो– गमला च पलास्टिक रे हासा ओड़ोः सरा को मिलाव केयाते एना रे दारू रअः जङ ओमोन रिकाओ तना। एन तयोम ते दारू ओमोन जनचि एना दारू एटा मराङ टायद रेबु रोआ जदा। ओड़ोः एटाः किसिम दारू रोआ रे दो, ओकोन टायद रे दारू रोआओ तना एन टायद रेगे मिसा रेगे गड़ा केयाते एना रे दारू जन चि बु रोआ जदा। दारू रोआ केयाते एना दारू आउरि मरङ सनते होरो जंगि लागातिङा। जन दारू आउरि मरंगओ सनते एना दारू रोआ सफल का काजिओआ। दारू ते नमोः तना देंगा को – दारू होड़ो को ओड़ोः एटाः जीव जन्तु को नगेन पुराः गे जरूडु तनअः। दारू को सोबेन जीव जन्तु बुगिन होयो ऑक्सीजन ओमा जद् बुआ को ओड़ोःइ कॉर्बनडाइआक्साइड दारू को आगु जदा। दारू कोते आबु जो, बा, जड़ि बुटि को ओड़ोः एटाः जीव जन्तु को तइन तेया टायद एमन को ओमा जद बुआ को। नेया दारू कोते गे जरगि जदाए ओड़ोः जन बाढ़ एमन सोमए कोरेओ दारू को आबु को बनचाव जद् बुआ को ओड़ोः जेटे जरगि रेओ नेया दारू आबु जीव जन्तु को बनचाव जद् बुआ को। एना मेन्ते होड़ो च मानव को

दारू रोआ पुराः गे जरूडु गेआ।

आबुआ भारत देष रे हर सिरमा दारू रअः जरूडु को बु टोर नमेका मेन्ते नमेका मेन्ते 1 जुलाई आते 7 जुलाई एमन सोमए रे दारू को रोआ रअः दिन बु नेडा कदाबु। नेया गे वृक्षारोपण कजिओ तना। नेया लेका गे दारू को रअः जरूडु टोर नमेका मेन्ते हर सिरमा पुराः विष्व रे 21 मार्च हुलङ विष्व वानिकी दिवस मनातिङ जदाबु। आबु दारू को रोआ केयाते मरङ जनते नेया दारू कोते ओड़ाः बइ तेआ दारू को नमोआ ओड़ोः जो बा को बु जोमेया नतेन बु नम दड़िया ओड़ोः नेया दारू को रअः रोड़ को मंडि उतु तेया सन को बइओआ। दारू रअः हुड़िङ कोतो को करकद एमन को बइओअ। तरा मरा दो जीव जन्तु कोअः चराओ बइओ तना। आबु पड़ाव तन पुथि को रअः कागज को दारू तेगे बइयो तना। दारू कोते आबु ओड़ाः रअः खिड़की दुवार को बु बइ जदाबु ओड़ोः स्कूल को रअः पड़ाव सोमए होन को दुब तेया बेंच को ओड़ोः कुरसी एमन का दारू तेगे बइओ तना। दारू का तइन जनरे हानि – निमुः समय रे च नअः जुग रे आबु मानव च होड़ो को आबुआ सुकु नतेन पुराः गे संगि दारू को बु मअः जदा। दारू को मअः जदा बु एना मेन्ते बाढ़ ओड़ोः अकाल सुखा लेकान दुकु को बु नम जदा। दारू को मअः जदा बु एना मेन्ते ने सोमए दो आबुआ ओते हसा का बगड़व चबा जदाबु। नअः दो सिदा लेका जनअः जिनिस को रोआ ले रे सिदा लेका दो बिना रासायनिक सरा को का लगाव ले रे का होबाओअः। ने सोमए दो होड़ो को बु संगि इदिओ तना एना मेन्ते दारू को मअः जदा बु। नेया लेका गे दारू को मअः रे दो मुसिङ दिन जीव जन्तु ओड़ोः आबु सोबेन बु चबाओआ।

दारू रोआ आबुआ दिसुम नगेन पुरअः गे जरूडु गेआ। आबुआ देस आयरते बड़ाओ को मेन्तेओ नेया दारू को पुराः गे देंगा को ओम जदाको। नेया दिसुम मेन्ते सोबेन होड़ो को दारू रोआ पुरअः गे जरूडु गेआ। सोबेन को मियद मियद जनाओ सिरमा दारू रोआ लेरेओ आबु दिसुम बनचओ दाड़िओआ ओड़ोः ने लोःते गे दारू मअः कोम लगातिङा साथ रे नअः आबुआ सरकार द्वारा बिर बुरू बनचाओ रअः योजना को टाइट केयाते लागु लगातिङा।

- रविन्द्र मुण्डा
मुण्डारी विभाग

पीपीके कॉलेज में नशा मुक्ति कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नवीन मेल संवाददता। रांची

राष्ट्रीय सेवा योजना ... ने पंच परगना ...

अपनी पूरी ऊर्जा के साथ अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। समाज को नशा मुक्त करने के ...

कॉलेज में पक्षियों को दाना व पानी देने को लेकर किया गया जागरूक

...क्रम उपस्थित शिक्षक एवं छात्र।

भास्कर न्यूज़ | बुंडू

...रगना किसान कॉलेज बुंडू में ... सेवा योजना के ... कक्ष का ...

जयसवाल, डॉ. बिनीता ... डॉ. रविकांत मेहता, डॉ. सुरेश ... एवं डॉ. सुरेंद्र राम ने अपने ... और पानी देकर ...

कॉलेज में पौधरोपण

बुंडू | किसान कॉलेज में वन महोत्सव के अंतिम दिन वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि बुण्डू फारेस्ट रेंजर प्रभारी सुरेंद्र कुमार के आगमन से छात्र छात्राओं में भारी उत्साह था। इस अवसर पर प्रथम एवं द्वितीय दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया।

बुंडू : पीपीके कॉलेज में योग दिवस मनाया गया

बुंडू | पांच परगना किसान कालेज बुंडू में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सामूहिक योगाभ्यास किया। इस अवसर पर योग प्रशिक्षक सुश्री मधु प्रधान ने सभी को विभिन्न आसनों के साथ प्राणायाम का भी अभ्यास कराया। इस अवसर पर प्राचार्य मुकुल कुमार ने सभी छात्रों के साथ योगाभ्यास कर सभी छात्रों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर डॉ. विजयलक्ष्मी, डॉ. रविकांत ...

घड़ों में स्वच्छ जल रखने का कार्यक्रम

बुंडू (आजाद सिपाही)। पांच परगना किसान कॉलेज बुंडू में राष्ट्रीय सेवा योजना के नये कक्ष का प्राचार्य प्रो मुकुल कुमार के कर कमलों से बुधवार को ...भारंभ हुआ। उसके पश्चात राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में इस भीषण ...र्मी में पक्षियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से महाविद्यालय की छत पर चावल ...ने और घड़ों में स्वच्छ जल रखने का कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में ... ने भाग लिया। प्राचार्य ने छात्रों को पक्षियों के लिए दाने देकर कार्यक्रम का ... किया। डॉ विजयलक्ष्मी, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ दीप नारायण जयसवाल, ...ता कुमारी, डॉ रविकांत मेहता, डॉ सुरेश गुप्ता और डॉ सुरेंदर राम ने ...थों से छात्रों को दाने और पानी देकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इस ... डॉ सबरन सिंह मुण्डा, संगीता कुमारी, राजेंद्र महतो, सुबोध शुक्ल, ..., डॉ जीनिया नंदी, डॉ जुगनू प्रसाद, डॉ. तरित सांगा आदि विद्वानों ...स्थिति से छात्रों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संचालन ...योजना पदाधिकारी डॉ आराधना और डॉ तारकेश्वर ने किया ...

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया

बुंडू। पीपीके कॉलेज बुंडू में राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से बुधवार को सड़क सुरक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में जन जागरण यात्रा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों व शिक्षकों ने भाग लिया। छात्रों ने यातायात सुरक्षा से संबंधित नारों की तख्तियां बनाकर राष्ट्रीय सेवा योजना के बैनर तले एक जनजागरण यात्रा निकाली, सुरक्षा विषय महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान दिया गया। मौके पर प्राचार्य डॉ. मुकुल कुमार कॉलेज के शिक्षक डॉ. भूतनाथ, डॉ. छोटूराम, कार्यक्रम प्रभारी, डॉ. ... दीपनारायण, डॉ. रविकांत मेहता, ... उपस्थित थे।

पर्यावरण के लिए • पौधा लगाओ-जीवन बचाओ अभियान के तहत बिरसानगर धमधमियां पौधे बांटे

खलारी में 150 आम के पौधे का निःशुल्क वितरण किया गया

भास्कर न्यूज़ | खलारी

बाबू देवेन्द्र सिंह सेवा संस्थान व डॉ. अम्बेडकर विचार मंच द्वारा चलाए जा रहे पौधा लगाओ-जीवन बचाओ अभियान के तहत सोमवार को बिरसानगर धमधमियां में 150 आम के पौधे का निःशुल्क वितरण किया।

पौधा वितरण कार्यक्रम की राजकिशोर सिंह के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर सेवा संस्थान के राजन सिंह राजा ने कहा कि पौधा लगाओ-जीवन बचाव कोयलांचल के पर्यावरण व आम लोगों के लिए बड़ा शुभ कार्य है। पर्यावरण संतुलन को लेकर यह पुण्य व रचनात्मक कार्य है। इस अभियान में मुख्य रूप से अजय कुमार सिंह, रवीन्द्रनाथ चौधरी, विजय सिंह, इंदिरा देवी तुरी, अमृत साहू, पंसस सहदेव महली, उपमुखिया कोलेश्वर मुण्डा, गोपाल सिंह, शंकर सिंह, श्यामजी महतो, सुमन देवी, गिरिजा विश्वकर्मा, सुरेश साव, शंभूनाथ गंझु, सुधीर उरांव, दिगंबर साव, रामस्वरूप राम, आशीष यादव, रौशन लाल, अरूण राम, खेमलाल तुरी, क्यूम अंसारी, इम्तियाज अंसारी, कृष्णा राम, भुनेश्वर मिस्त्री, रमेश गंझु, संजय राम, विनोद उरांव, राजेश कुमार, शमीम अंसारी, रवि गांगुली सहित अन्य लोग शामिल थे।

धमधमियां में आम के पौधे का निःशुल्क वितरण करते संस्था के लोग।

बुंडू : कॉलेज परिसर में किया गया पौधरोपण

बुंडू | पीपीके कॉलेज बुंडू में ग्रीष्मावकाश के उपरांत राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. मुकुल कुमार ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व और पौधरोपण की आवश्यकता के विषय में जागरूक किया। इस अवसर पर कार्यक्रम प्रभारी डॉ. आराधना तिवारी, डॉ. तारकेश्वर कुमार, संगीता जयसवाल मौजूद थे।

annapurnaprinters.mpc@gmail.com • 98657 78101